जय द्वारकाधीश

KAALSHARPYOG SHANTI

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

नवीन संस्करण

1. पुस्तक परिचय
2. क्यों विरोध करते हैं ज्योतिषी कालसर्प योग का?
3. कालसर्प योग केवल पितृदोष ही नहीं
4. क्या नासिक व अन्य तीर्थ-स्थलों पर कराया गया कालसर्प सही नहीं होता
5. कालसर्प योग काम नहीं कर रहा है?
6. कालसर्प विधि कराने से लाभ
7. विधवापन को हटाने वाला घट-विवाह
8. वैधव्ययोग
9. केमद्रुम शान्ति प्रयोंग
10. कालसर्प योग किसे कहते हैं?
11. कालसर्प योग के बारे में भ्रान्तियाँ
12. कालसर्प योग के विविध प्रकार
13. कालसर्प योग निवृत्ति के उपाय
14. कालसर्प योग की सामग्री
15. कालसर्प योग की निवृत्ति हेतु मुहूर्त विचार
16. कालसर्प शान्ति
17. गंगापूजन
18. अथ गणेशगुर्वादीन्नमस्काराः
19. गणपति स्मरण
20. अथ मातृकास्थापनं पूजनम्
21. अथ सप्तघृतमातृका पूजनम्
22. नान्दी श्राद्ध
23. अथ नान्दीश्राद्ध प्रयोग
24. षोडशोपचार गणपति पूजनम्

Scanned with CamScanner

25.	अथ गणपत्यथर्वशीर्षम्	117
26.	विशेष ज्ञातव्य	128
27.	अथ नवग्रह-स्थापनम् (ग्रह-मण्डल)	133
28.	अथ अग्न्युत्तारण प्राण-प्रतिष्ठा	140
29.	।। अथ प्राण प्रतिष्ठा प्रयोगः ।।	141
30.	प्रधान पीठ	143
31.	नागपंचमी व्रत से सन्तान प्राप्ति	150
32.	सर्व नागादि विष निर्मलीकरण महामन्त्राः	151
33.	सर्पवध-प्रायश्चित्त-कर्म	153
34.	अथ कुशकंडिका	156
35.	सर्पसूक्त	167
36.	अथ प्रधान होम द्रव्याणि	168
37.	होमान्ते उत्तरपूजनम्	173
38.	अथाभिषेक मन्त्राः	177
39.	जल में सर्प छोड़ने का मन्त्र	178
40.	कालसर्प योग शान्तिः प्रार्थना	179
41.	।। नागसहस्रनामावलिः ।।	180
42.	कालसर्प योग जननशांतिप्रयोगः	186
43.	"अथ नागनीराजनम्"	190

Scanned with CamScanner

पुस्तक परिचय

कालसर्प योग पर हमारी पहली पुस्तक सन् 1993 में प्रकाशित हुई। पुस्तक छपते ही ज्योतिष जगत, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य की दुनिया में हंगामा मच गया। इस पुस्तक के अनेक संस्करण धड़ल्ले से बिके। साथ ही भारतवर्ष में जगह-जगह कालसर्प योग शान्ति के सामूहिक शिविर और पूजन की विशिष्ट परम्परा का श्रीगणेश हुआ। लोग चमत्कृत रूप से प्रभावित होने लगे। पुस्तक के अनेक संस्करण छपे लाखों जनमानस ने इसका लाभ उठाया।

इसी बीच हिन्दी, गुजराती, मराठी व अंग्रेजी भाषा में कई छद्म लेखकों ने इस पुस्तक की हूबहू नकल, थोड़ा बहुत उलट-पलट करके प्रकाशित कर दी। नकली नोट की भांति इस पुस्तक की नकली प्रतियां भी बाजार में विक्रीत होने लगीं। नकली लेखकों के कारण लोगों में कालसर्प योग के प्रति भ्रान्तियां बढ़ने लगी। इसी बीच कर्मकाण्ड विरोधी एवं ब्राह्मण विरोधी कुछ नास्तिक ताकतें भी उठ खड़ी हुईं। उन्होंने 'कालसर्प योग होता ही नहीं!' इस विषय पर भी पुस्तकें लिखनी शुरु कीं, सस्ती लोकप्रियता के लालच में ये लेखक भी पिट गए। कालसर्प योग का प्रचार व प्रसार द्रुतगति से बढ़ा। जिज्ञासु सज्जनों को सही विषय वस्तु की जानकारी अनुभव के आधार पर खरी होती दिखाई दी। कालसर्प योग इस सहस्राब्दी में ज्योतिष जगत का सबसे चर्चित विषय बन गया।

प्रबुद्ध पाठकों के अनेक रोचक-पत्र, कुछ समस्याएं एवं कुछ शंकाएं हमारे पास आई हैं। जिसका समयोचित समाधान अपेक्षित हैं। क्यों विरोध करते हैं ज्योतिषी कालसर्प योग का? इस विषय को लेकर कई प्रस्तावना इस नवीन संस्करण में दी गई हैं। इसके साथ कालसर्प योग में जन्मे प्रसिद्ध लोगों की कुण्डलियों का विश्लेषण भी प्रबुद्ध पाठकों हेतु इस पुस्तक में प्रकाशित कर रहे हैं। कुछ आवश्यक संस्कृत श्लोकों का हिन्दी अनुवाद, अनेक शून्य महत्त्वपूर्ण शंकाओं का समाधान इस पुस्तक में नई प्राणशक्ति संचारित कर रहा है। जिसमें पं. रमेश द्विवेदी ने पूर्ण सहयोग दिया है।

सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि फलित ज्योतिष में कालसर्प योग के विस्तृत अनुसंधान को देखते हुए 'कालसर्प योग भाग द्वितीय' अलग से प्रकाशित किया जा रहा है। ये दोनों पुस्तकें रेमेडियल ऐस्ट्रोलोजी में मील का पत्थर साबित

Scanned with CamScanner

हो रही हैं। इसलिए अत्यन्त अनमोल हैं। इन दोनों पुस्तकों के हिन्दी व अंग्रेजी संस्करण के प्रकाशन का अधिकार डायमण्ड पॉकेट बुक्स के निर्देशक व स्वामी श्री नरेन्द्र जी वर्मा को सौंप रहा हूँ। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मेरा चित्र, इस नवीन संस्करण में नामावली एवं डायमण्ड पॉकेट बुक्स का मार्का ही इस पुस्तक के असली होने की प्रत्याभूति है।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

4.9.2006

Scanned with CamScanner

क्यों विरोध करते हैं ज्योतिषी कालसर्प योग का?

कालसर्प योग ज्योतिष जगत का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, रोचक, चर्चित एवं विवादास्पद योग बन चुका है। राजस्थान पत्रिका ने देश के शीर्षस्थ 12 विद्वानों के द्वारा साक्षात्कार लेकर इस योग पर सामइक टिप्पणियां प्रकाशित की, जिस पर 6 विद्वानों ने सकारात्मक तथा 6 विद्वानों ने नकारात्मक टिप्पणियां की। निष्कर्षतः कुछ भी निर्णय न निकलने के कारण लोग यथावत भ्रमित रहे। उस संस्थान द्वारा संचालित निःशुल्क ज्योतिष प्रशिक्षण शिविर में भी लगभग 400 जिज्ञासुओं ने इस बिषय पर सांगोपांग चिन्तन पर शास्त्रीयचर्चा तीन घंटे तक की। एक विशेष कालसर्प योग के खिलाफ क्यों है? कई विद्वानों के कालसर्प योग के समर्थन में बड़े-बड़े लेख लिखे हैं तथा इस योग की शान्ति हेतु कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। तो कई विद्वानों ने कालसर्प योग नहीं होता है? इस विषय पर भी पुस्तकें प्रकाशित कीं। कालसर्प योग नहीं होता है? इस विषय को सिद्ध करने के लिए नकारात्मक सोच वाले विद्वानों के सारगर्भित तर्क इस प्रकार हैं:-

1. प्राचीन किसी ग्रंथ में कालसर्प योग का उल्लेख नहीं मिलता?
2. यह ब्राह्मणों की कमाई का साधन है?
3. कालसर्प योग अशुभ नहीं होता क्योंकि यह योग बड़े-बड़े लोगों की कुण्डली में पाया जाता है? इसलिए यह योग शुभ है।
4. ऐसे भयानक नाम वाले योग की कल्पना ऋषि लोग कर ही नहीं सकते? यह बाद में फैलाया जाने वाला भ्रमजाल है।
5. राहु-केतु नामक कोई ग्रह आकाश में नहीं है। विदेशी लोग भी राहु-केतु को ग्रह नहीं मानते।
6. यह योग राहु-केतु की अंशात्मक दूरी से टूट जाता है।
7. कालसर्प योग को ज्यादा मानेंगे तो हर दस में नौ कुण्डलियां कालसर्प योग की मिल जाएंगी।

आइए इन सभी तर्कों का हम शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक विवेचन करें।

Scanned with CamScanner

समाधान

होराशास्त्र अ.36 महर्षि बादरायण, महर्षि गर्ग, मणित्थ, बृहत्जातक अ. 12/पृ. 148, सारावली अ. 11/पृ. 154, जातकतत्त्वम्, ज्योतिषरत्नाकर, जैन ज्योतिष नामक पाश्चात्य ग्रंथ में भी कालसर्प योग का स्पष्ट वर्णन मिलता है। भृगु ऋषि से प्राचीन कोई नहीं-भृगुसूत्र अ. 8/श्लोक 11-12 इस प्रकार है-

पुत्राभावः सर्पशापात् सुतक्षय॥1॥

नागप्रतिष्ठया पुत्र प्राप्ति॥2॥

इससे अधिक और कितने प्रमाण चाहिए? पर प्राचीन ग्रंथ पढ़े कौन?

मैं अभी ताजी घटना कालसर्प योग के बारे में प्रबुद्ध पाठकों को बतलाना चाहूँगा। बद्रीनाथ धाम में एक विशाल ज्योतिष सम्मेलन में कुछ इसी प्रकार की चर्चा कालसर्प योग को लेकर चली।

एक ज्योतिषी ने कालसर्प योग के बारे में कहा कि प्राचीन किसी ग्रन्थ में कालसर्प योग का उल्लेख नहीं मिलता। इस पर मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि प्राचीन ग्रन्थों में तो कारयोग, मर्सडिज, स्कॉरपियो अवश्य मिलता है। जिसे हमने आधुनिक परिपेक्ष्य में मर्सडिज, स्कॉरपियो, मारुति आदि में परिभाषित कर दिया है, तो क्या ज्योतिष में शोध की कोई गुंजाइश नहीं है। ज्योतिष में नए शोध को क्या हमेशा के लिए ताला लग गया है। नहीं ज्योतिष विज्ञान इतना संकुचित या संकीर्ण नहीं हो सकता कि उसमें शोध/अनुसंधान को कोई मार्ग ही न रहे।

जब पूर्ण सक्षम विज्ञान में आज नए-नए शोध हो रहे हैं, नई-नई मशीनें, यंत्र आ रहे हैं, तो ज्योतिष में नए शोध को कैसे नकारा जा सकता है, यह मेरी समझ से परे है।

प्राचीन भारतीय ऋषियों ने हजारों, लाखों वर्ष पूर्व ज्योतिष के सिद्धांतों की रचना अपने सतत अनुभव, तपस्या व साधना से की, तो हजारों वर्ष पूर्व रचित सिद्धांतों में और आज की परिस्थितियों में कोई अंतर नहीं हैं।

प्राचीन भारतीय ऋषियों ने आई.ए.एस. मंत्री, आई.पी.एस. योग, आई.आर. एस. के आदि उच्च प्रशासनिक योगों के बारे में अलग से किसी सिद्धांत की रचना नहीं की। इसका मतलब यह नहीं कि ऐसा कोई योग जातक की कुण्डली में नहीं होता।

समाधान 2

जो लोग कर्मकाण्ड व पौरोहित्य को नहीं जानते और नहीं मानते? वे

Scanned with CamScanner

ब्राह्मणेत्तर लोग ही कालसर्प योग का विरोध करते हैं? गणेश पूजा, दुर्गा पूजा, श्राद्ध, यज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठज्ञन करना, धर्म व आस्था का विषय है। मूर्तिपूजा के विरोधी व नास्तिक लोग ऐसे कृत्यों का घोर विरोध अनादि काल से करते चले आ रहे हैं पर मन्दिरों में, पूजा स्थलों में, कुम्भ मेलों में फिर भी भीड़ कम नहीं हुई है। मंत्र शक्ति एवं प्रार्थनाओं की शक्ति को सभी धर्म व जातियों ने एक मत से स्वीकार किया है। इसमें विवाद व्यर्थ है। कालसर्प शान्ति करने से लोगों को आशातीत लाभ हुआ। इसका लिखित दस्तावेज हमारे पास है। दृष्टान्त कुण्डलियों का भण्डार है। पीड़ित लोगों के व्यक्तिगत अनुभवों पर एक पुस्तक अलग से लिखी जा रही है।

ब्राह्मण क्यों विरोध करते हैं?

इन दिनों यह भी देखने में आया है कि ब्राह्मण वर्ग के कुछ लोग कालसर्प योग का विरोध कर रहे हैं। ब्राह्मणेत्तर लोगों का विरोध तो समझ में आता है? पर ब्राह्मण वर्ग ही ब्राह्मण के क्यों खिलाफ हैं, यह समझ के बाहर है? विरोध के लिए कोई भी विरोध कर सकता है। विरोधी की कोई जाति नहीं होती। जहां तक विरोध करने वाले ब्राह्मण की बात है तो स्पष्ट है ये लोग जन्म से ब्राह्मण हैं, कर्म से नहीं। अर्थात् ये लोग कर्मकाण्ड-पूजापाठ एवं पौरोहित्य कर्म के ज्ञाता नहीं होते। इन्हें वैदिक संस्कृति व संस्कृत का ज्ञान नहीं होता। ये लोग अधिकतर सरकारी नौकरी में लगे हुए, आचरण भ्रष्ट होते हैं। कम्प्यूटर इंजीनियर, सिविल इंजीनियर या ब्यूरोक्रेट होते हैं। शौकिया तौर पर ज्योतिष सीख लेते हैं। असली धंधा कुछ और होता है। ऐसे ही सज्जन पारम्परिक ज्ञान के अभाव में, अल्पज्ञता के चलते अपनी व ज्योतिष शास्त्र दोनों की कब्र खोदते हैं। ब्राह्मण कमाते हैं तो कुछ लोगों के पेट में दर्द होता है। पाश्चात्य संस्कृति के पिछलग्गू इन तथाकथित ज्योतिषियों को संस्कृति के विद्वानों से कर्मकाण्डी पण्डितों से, ज्योतिष शास्त्र के वास्तविक उपासकों व कीर्तिवन्त विद्वानों से घोर एलर्जी होती है। इनसे दूरी बनाए रखने में ही बुद्धिमानी है।

समाधान 3

कालसर्प योग की लगभग पांच लाख कुण्डलियों का संग्रह हमारे पास है। ये योग 3456 प्रकार के होते हैं। सभी के फल अलग-अलग हैं। यह योग उन्नति में बाधक है या बड़े लोगों की कुण्डली में नहीं होता ऐसा कहीं नहीं लिखा गया है। जो सज्जन नूतन अनुसंधान योग के महत्त्व को फलित ज्योतिष में अस्वीकार

Scanned with CamScanner

करते हैं। वो कैसे ज्योतिषी हैं? ऐसे में उनकी खुद की योग्यता पर प्रश्नवाचक चिह्न लग जाता है।

समाधान 4

प्राचीन ज्योतिष ग्रंथों में बालरिष्टयोग, वैधव्ययोग, मारक, मारकेश शस्त्रहन्तायोग, अचानक मृत्युयोग, अपघात, आत्महत्या आदि पर बहुत विचार किया गया है अत: ऋषियों के बारे में अनर्गल प्रलाप मिथ्या है।

समाधान 5

एक ज्योतिषी महोदय ने मुझसे कहा कि राहु-केतु का फिजीकल अपीयरेन्स (भौतिक अस्तित्व) नहीं है, अत: इससे किसी प्रकार का कोई योग नहीं बनता।

मुझे ज्योतिषी महोदय की बात सुनकर हंसी आई कि राहु केतु का यदि भौतिक अस्तित्व (फिजीकल अपीयरेन्स) नहीं है तो फिर सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण कैसे बनते हैं। सूर्य ग्रहण के समय राहु तथा चन्द्र ग्रहण के समय केतु स्पष्ट रूप से आकाश में नंगी आँखों से देखे जा सकते हैं और पूरा विश्व उन्हें देखता है।

राहु-केतु वस्तुत: छाया ग्रह हैं, छाया के रूप में ये हमें सूर्य-चंद्र ग्रहण के दिन आकाश में दिखाई पड़ते हैं।

अब रही बात राहु-केतु से कोई योग नहीं बनने की तो फिर ग्रहणयोग चाण्डाल योग, अंगारक योग का भी कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि यह दोनों योग भी राहु से ही बनते हैं।

ग्रहणयोग, चाण्डालयोग का ही विस्तृत रूप है, कालसर्प योग। ग्रहण योग में चन्द्रमा राहु से पीड़ित होता है। चाण्डाल योग में गुरु राहु से प्रताड़ित होता है जबकि राहु-केतु के मध्य सारे ग्रह आ जाने से सारे ग्रह राहु-केतु से प्रताड़ित होते हैं, यही कालसर्प योग है। इस पर विशेष जानकारी के लिए भोजसंहिता 'राहु खण्ड' एवं 'केतु खण्ड' को देखना चाहिए।

ग्रहों के बारे में खगोलशास्त्री अभी भी दिग्भ्रमित

(चेक गणराज्य), 16 अगस्त (एजेन्सियां)। अगर अन्तर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ (आईएयू) की महासभा ने गुरुवार को सौरमण्डल के नए प्रस्तावित स्वरूप को अपनी मंजूरी दे दी, तो ग्रहों की संख्या नौ से बढ़कर 12 हो जाएगी। तब एनसाइक्लोपीडिया और पाठ्य पुस्तकों में भी बदलाव करना पड़ेगा।

Scanned with CamScanner

संघ की ग्रह परिभाषा समिति ने यह प्रस्ताव तैयार किया है, जिस पर गुरुवार को दुनियां भर के ढाई हजार से ज्यादा खगोलीयविदों ने मतदान किया। नौ ग्रहों में से एक प्लूटो का दर्जा घटाते हुए इन 12 ग्रहों को तीन वर्गों में बांटा गया है। खगोलविदों की 'वाचलिस्ट' में इस समय तकरीबन एक दर्जन और पिण्ड हैं, जिनकी कक्षा व द्रव्यमान के बारे में जानकारी मिलने के बाद उनमें से भी कुछ इन वर्गों में शामिल हो सकते हैं।

वैज्ञानिकों की नई परिभाषा - ग्रह वह होगा, जो किसी तारे की परिक्रमा करता हो, पर खुद कोई तारा न हो। उसका द्रव्यमान इतना अवश्य हो कि वह अपने गुरुत्व के सहारे गोलाकार रूप में मौजूद रह सके।

1. पहला क्लासिकल वर्ग - बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति। शनि, यूरेनस (वरुण) और नेपच्यून (कुबेर)।
2. दूसरा प्लूटोन वर्ग - प्लूटो, शेरन और 2003 यूवी 313
3. तीसरा वर्ग - अकेला सीरेज, सीरेज प्लूटों का उपग्रह है।
4. अब इन पर नजर-सेडना, ओरकस, क्वाओर तथा 2003 ईएल 61 और क्षुद्र ग्रह-वेस्टा, पलास व हाइजिया।

खगोल वैज्ञानिक हमेशा गलत ही साबित रहे

खगोल वैज्ञानिकों ने सौरमण्डल में एक ग्रह प्लूटो (यम) को भले ही कम कर दिया हो तथा अन्य चार ग्रह भले ही बढ़ा दिए हों पर भारतीय गणनाओं और फलादेश पद्धति पर इसका रत्ती भर भी असर नहीं पड़ेगा। अन्तर्राष्ट्रीय वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष व चार सौ ज्योतिषशास्त्र की पुस्तकों के यशस्वी लेखक डॉ. भोजराज द्विवेदी ने बताया कि भारतीय ज्योतिषशास्त्र में पृथ्वी को लग्न के रूप में मानकर सूर्य, चन्द्र, राहु, केतु सहित नवग्रहों को मान्यता प्रदान की तथा मानव जीवन पर पड़ने वाले उनकी ग्रह-राशियों के प्रभाव को सूक्ष्मता से अध्ययन-अनुसंधान एवं व्यवहारिक परीक्षणों के धरातल पर परिमार्जित किया। जिसका ज्ञान पाश्चात्य ज्योतिष एवं खगोल वैज्ञानिकों को अंश मात्र भी नहीं है। यही कारण है कि भारत से जब कोई विद्वान ज्योतिषचार्य विदेश में पहुँचता है तो बड़े से बड़े पाश्चात्य ज्योतिषी लाईन लगाकर उनसे मिलने के लिए बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं।

गत सौ वर्षों से खगोल विज्ञानी ग्रहों के नाम पर लोगों को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। पहले वे किसी पिण्ड को ग्रह का दर्जा दे देते हैं, फिर यह दर्जा छीन

भी लेते हैं। प्रकृति के साथ उनकी यह बचकाना हरकत वस्तुतः उनकी कम अक्ली का प्रमाण नहीं तो और क्या है? जिन्होंने ग्रहों के परिभ्रमण जैसे गम्भीर विषय को हल्के-फुल्के मजाकिया अंदाज में पेश किया है।

एक और तथ्य उल्लेखनीय है कि भारतीय ज्योतिष के गणित एवं फलादेश सिद्धांतों में ग्रह-नक्षत्र, नक्षत्र-चरण ज्योतिष में वर्णित नौ ग्रह जब सौरमण्डल में भिन्न-भिन्न नक्षत्रों एवं, नक्षत्र चरणों में होते है। तो उनमें विशेष रश्मि-समूह का स्पन्दन होता है, उनके विशेष प्रभाव, विशेष ढंग से परिलक्षित होते देखे गए हैं। इनका अनुसंधान हजारों-हजारों वर्षों पूर्व दिव्य द्रष्टा ऋषियों ने किया। जिस पर अत्याधुनिक परिमार्जन व अनुशीलन आज तक निर्बाध गति से होता चला आ रहा है। अतः इस परम्परा में सैकड़ों-हजारों की संख्या में फलादेश सिद्धांत पर हमारे ऋषियों के ग्रन्थ उपलब्ध हैं, परन्तु इन आधुनिक खगोलशास्त्रियों के ग्रह सौरमण्डल के नक्षत्र-वलय व रश्मि-पिण्डों को प्रभावित नहीं करते, न ही इस विषय में उनका कोई साहित्य ग्रन्थ संकलन, अनुभव प्रकाशित है। तिथि गणना एवं पंचांग गणित में आज भी भारत का नाम समग्र विश्व में सबसे अग्रगण्य है, अपितु सच्चाई यह है कि खगोलशास्त्रियों का आज दिन तक का इतिहास बताता है कि इन्होंने केवल मानव सभ्यता को अनर्गल प्रलाप के द्वारा डराया है, धमकाया है, लोगों को भयग्रस्त किया है तथा इनकी सारी की सारी भविष्यवाणियां गलत ही साबित हुई हैं। जिनका पूरा रिकॉर्ड डायमण्ड राशि भविष्य 2000 में दिल्ली से प्रकाशित है।

समाधान 6

अंशात्मक युति से यह योग टूटता है, ऐसा उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में नहीं है। फिर भी ज्योतिष शास्त्र में नए अनुसंधान करने के लिए मार्ग अवरुद्ध नहीं है। नए अनुसंधान में अंशात्मक युति तो दूर कोई एक ग्रह भी इनकी पकड़ से दूर निकल जाए तो आंशिक कालसर्प योग बनता है और उसका भी दुष्प्रभाव जातक के जीवन में पड़ता है। जिसका प्रभाव खुद जातकों ने स्वीकार किया है पर यह प्रभाव पूर्ण कालसर्प योग में आधा ही अनिष्ठ कारक होता है।

समाधान 7

यह आरोप भी व्यर्थ है। यह बात सही है कि ज्यादा दुःखी, नींद न आने वाले, सन्तप्त, प्रतिपल अशुभ की आशंका से ग्रसित व दुःस्वप्न से पीड़ित,

Scanned with CamScanner

नकारात्मक सोच एवं मानसिक चिन्ता से ग्रसित लोगों की जन्म कुण्डली में कालसर्प योग बहुतायत में पाया जाता है। मैं चादनारायण पारीख, डॉ. एम. कुरसीजा, पं. रघुनन्दन प्रसाद गौड, पं. घनश्यामलाल स्वर्णकार, पं. श्रीकृष्ण शर्मा एवं अन्य सभी विद्वानों का आभारी हूँ जिन्होंने इस योग के बारे में सकारात्मक रुख अपनाया है।

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग केवल पितृदोष ही नहीं

जातक के जीवन की अन्य महत्त्वपूर्ण घटनाओं को भी बताता है

कालसर्प योग एक ऐसा योग है, जिसके कारण फलित ज्योतिष की सत्यता अकाट्य रूप में प्रमाणित हुई है। यह योग जातक के जीवन के अन्य महत्त्वपूर्ण एवं गोपनीय रहस्यों को भी उद्‌घाटित करता है। हमारे नवीन शोध व अनुसंधान से निम्न तथ्य उद्‌घटित होकर सामने आए हैं।

पितृदोष वाली कुण्डली

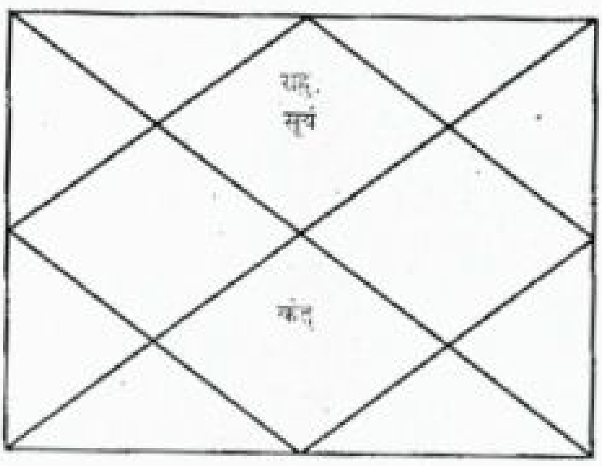

1. राहु+सूर्य - कुण्डली में कालसर्प योग है परंतु राहु या केतु के साथ यदि सूर्य हो तो जातक पितृदोष से ग्रसित होगा। उसके पूर्वज किसी न किसी कारण से जातक से नाराज या असंतुष्ट अवश्य ही रहेंगे। जातक ने कोई वचन भंग किया होगा, किसी के साथ विश्वासघात किया होगा, जाने-अनजाने में मान्यताएं अधूरी या अपूर्ण रही होंगी। ऐसे में अन्य विधियों व शांति उपायों के साथ जातक पिता की पूर्ण सेवा करे। पिता न हो तो पिता तुल्य वृद्ध रिश्तेदार की सेवा-सुश्रुषा करे। पूर्वजों का श्राद्ध-तर्पण विधि-विधान से करे।

मातृदोष वाली कुण्डली

2. राहु+चंद्र - जन्मकुण्डली में कालसर्प योग हो परन्तु राहु या केतु के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक मातृदोष से ग्रसित होगा उसने

Scanned with CamScanner

अपनी माता का दिल कहीं न कहीं से दुखाया होगा माता से बेवफाई, पत्नी द्वारा माता की उपेक्षा भी सम्भव है। देवीं की मान्यताएं या किसी महिला के साथ विश्वासघात भी सम्भव है। ऐसे में अन्य विधियों के साथ जातक को अपनी माता की पूर्ण सेवा-सुश्रुषा करनी चाहिए। माता न हो तो माता तुल्य वृद्ध महिला सासु, बुआ, मासी, बड़ी बहिन की सेवा करके आशीर्वाद ले। माता का साम्वत्सरिक श्राद्ध-तर्पण पूर्व विधि विधान से करे।

भातृदोष वाली कुंडली

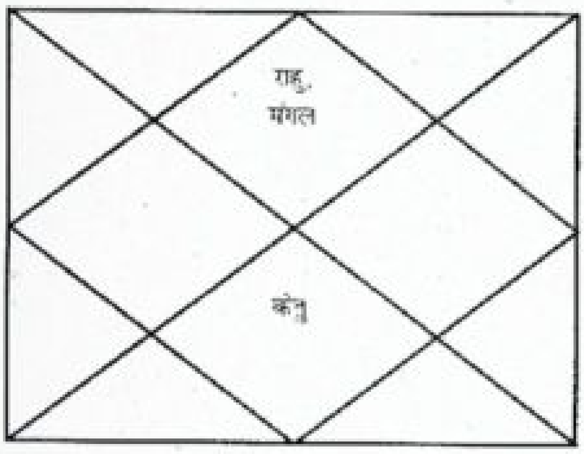

3. राहु+मंगल - जन्मकुण्डली में कालसर्प योग हो परन्तु राहु या केतु के साथ यदि मंगल हो तो जातक भातृदोष से ग्रसित होगा। उसने अपने भाई के साथ धन का हरण किया होगा, भाई के साथ बेवफाई, रूखा व्यवहार या भाई के प्रेम व त्याग की उपेक्षा की होगी। ऐसे में भाई की सेवा-सुश्रूषा करके, उसका आशीर्वाद लें। भाई न हो तो भाई के समान ही कुटुम्बीजनों का आशीर्वाद लें। भाई का साम्वत्सरिक श्राद्ध-तर्पण पूर्ण विधि-विधान से करें।

ननिहाल दोष वाली कुंडली

4. राहु+बुध - जन्मकुण्डली में कालसर्प योग हो परन्तु राहु या केतु के साथ यदि बुध हो तो जातक मामा, नाना या ननिहाल के दोष से ग्रसित होगा। छोटी बड़ी बहिन या बुआ का दिल जरूर दुखाया होगा। ऐसे में कालसर्प योग की शांति के साथ-साथ नाना-व मामा की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें। यदि नाना न हो तो उसका साम्वत्सरिक श्राद्ध व तर्पण पूर्ण विधि-विधान व श्रद्धा पूर्वक करें।

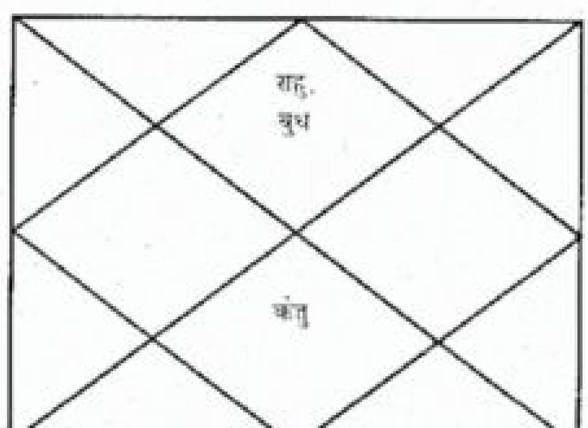

Scanned with CamScanner

गुरु दोष वाली कुंडली

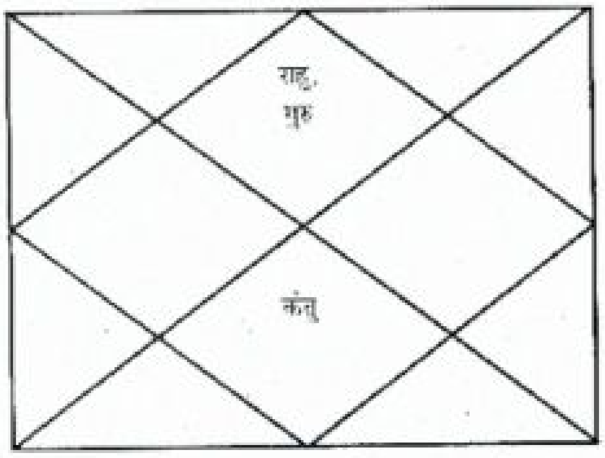

5. राहु+बृहस्पति - जन्म कुण्डली में यदि कालसर्प योग हो तो जातक गुरुदोष से ग्रसित होगा जातक ने अपने गुरु दीक्षा गुरु शिक्षा गुरु, व्यवसाय गुरु, संस्कार गुरु या पूज्य ब्राह्मण का कहीं न कहीं अपमान उपेक्षा का प्रदर्शन जरूर किया होगा। ऐसे में कालसर्प योग की शांति के अलावा गुरुपूर्णिमा पर, शिक्षक दिवस आदि दिवस पर अपने गुरुजनों का सम्मान करें, उन्हें भोजन वस्त्र दक्षिणा व विविध उपहारों से संतुष्ट कर, उनका आशीर्वाद प्राप्त करें तो निश्चित रूप से जातक की उन्नति व विकास का काम द्रुतगति से होगा।

पत्नी दोष वाली कुंडली

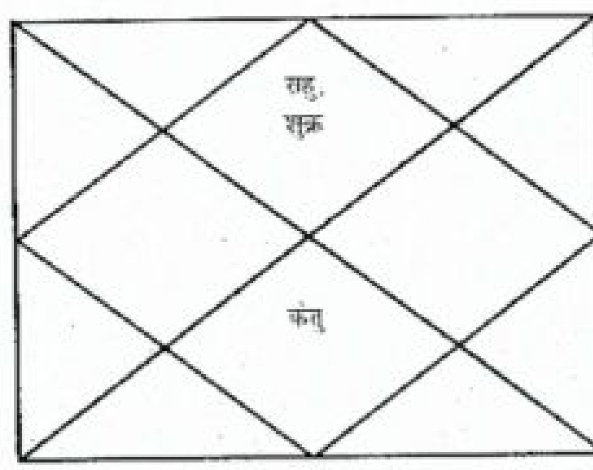

6. राहु+शुक्र - जन्म कुण्डली में यदि कालसर्प योग हो तथा राहु या केतु के साथ यदि शुक्र हो तो जातक पत्नी दोष से ग्रसित होता है जातक ने अपनी पत्नी के साथ विश्वासघात किया होगा, उसका कहीं दिल दुखाया होगा-ऐसे में कालसर्प योग शांति के साथ-साथ पत्नी के साथ सद्व्यवहार करें। पत्नी न हो तो उसका साम्वत्सरिक श्राद्ध-तर्पण पूर्ण विधि-विधान व श्रद्धा के साथ करें।

प्रेत दोष वाली कुंडली

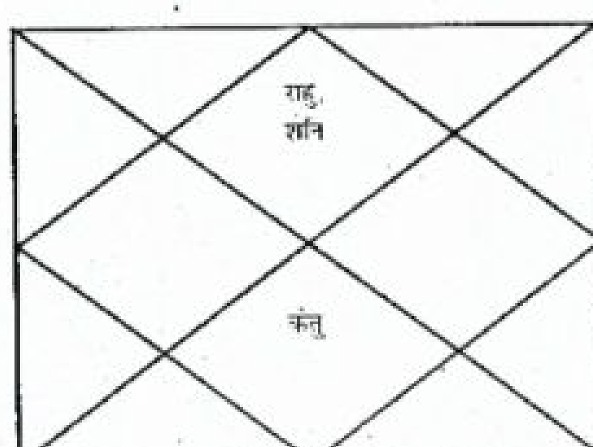

7. राहु+शनि - जन्मकुण्डली में यदि कालसर्प योग हो तथा राहु या केतु के साथ यदि शनि हो तो जातक ने अपने नीचे तबके के किसी व्यक्ति के साथ, नौकर या

Scanned with CamScanner

शूद्र वर्ग के साथ दुर्व्यवहार करने से दुराशीष का शिकार होगा। ऐसे में अन्य विधियों व उपायों साथ-साथ गरीबों को, कोढ़ी व अपंग व्यक्तियों को भोजन खिलाकर आशीर्वाद लें। अनाथालय एवं वृद्धाश्रम में अन्न-धन-वस्त्र इत्यादि का दान करें। अतः कालसर्प योग की विधि कराते समय इन सभी बातों पर गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए।

Scanned with CamScanner

क्या नासिक व अन्य तीर्थ-स्थलों पर कराया गया कालसर्प सही नहीं होता

इस वर्ष 2006 जोधपुर श्रावण मास में अद्‌भुत घटना घटित हुई। 108 रुद्रपाठी विद्वान् जोधपुर में बाहर से बुलाए गए। एक महीने तक (पूरे श्रावण मास) अनवरत रुद्रीपाठ चलता रहा। श्रावण के चारों सोमवार को सहस्रघट अभिषेक किया गया। आशुतोष भगवान शिव को प्रसन्न करने हेतु उच्चघोष में हर-हर महादेव के स्वर में, घनघोर मन्त्रोच्चार में जोधपुर के वायुमण्डल को कम्पायमान कर दिया। पर यह पहला अवसर था, श्रावण के इन चारों सोमवार को जोधपुर में एक बूँद वर्षा नहीं आई। जोधपुर के आसपास 35 किलोमीटर के रेडियेटर में पाली, रौहठ, जालोर, नागौर वर्षा में तरबदर थे, पर जोधपुर में सूखा पड़ा था। आम व खास लोगों में इस कड़ीपाठ की चर्चा थी। मेरे पास भी श्रद्धालु लोग आए कि जोधपुर में इतने तीव्र अनुष्ठान के बाद वर्षा क्यों नहीं? वर्षा कब होगी? जोधपुर के आस-पास हो रही है, जोधपुर में क्यों नहीं? मैं भी मौके पर अनुष्ठान स्थल पर गया। देखा सभी लोगों का उच्चारण अशुद्ध था। वर्षा किस मन्त्र से होती है, इसका किसी को ज्ञान नहीं।

मैंने एक वृद्ध रुद्रीपाठी से पूछा भाईसाहब यह जो मन्त्र जिस स्वर से आप उच्चारित कर रहे हैं, गलत है। इससे इसका अर्थ बदल जाता है। वे सज्जन मुझ पर कुछ क्रोधित हुए बोले-अर्थ कुछ भी हो? हम लोग बड़ी श्रद्धा व आस्था से पाठ कर रहे हैं। भगवान तो भाव के भूखे होते हैं।

मैंने कहा - तब तो आप मन्त्र की जगह भाव विभोर होकर भगवान को गालियां देने में भी समर्थ हैं। अशुद्ध मन्त्रोच्चार, विधि की अल्पज्ञता में इतने वृहद् स्तर पर किए गए रूद्रीपाठ का फल नहीं मिला। साथ में आए मेरे मित्रों ने पूछा आखिर वर्षा कब होगी? मैंने कहा जब यह अनुष्ठान खत्म हो जाएंगे। ये लोग जोधपुर से चले जाएंगे तब।

महान आश्चर्य! अनुष्ठान का एक माह समाप्त हुआ। रूद्रपाठ लोग गए एवं रक्षाबन्धन श्रावणी पूर्णिमा को जोधपुर में जमकर बारिश हुई, घटाएं उमड़-घुमड़ कर बरसीं। 5 इंच बरसात रिकॉर्ड की गई। बांधों में पानी आ गया। जोधपुर में तब मानसून की शुरुआत नित्य प्रति कुछ न कुछ अंशों में होती रही।

Scanned with CamScanner

इस दृष्टान्त से तात्पर्य यह है कि कहीं मन्त्रोच्चार के अभाव में केवल श्रद्धा व आस्था से कालसर्प विधि का फल नहीं मिलता। कालसर्प शान्ति विधि का सांगोपांग ज्ञान अच्छे-अच्छे विद्वानों को नहीं है। कई विद्वानों को इस विधि का ज्ञान भी है पर उनके पास समय का अभाव रहता है।

नासिक इत्यादि बड़े तीर्थ-स्थलों पर स्थान की महिमा तीर्थ की महिमा तो है पर पढ़ने की विधि का ज्ञान नहीं। फिर वे लोग दस-पन्द्रह मिनट में सारी विधि करा देते हैं क्योंकि उनके पास समय का अभाव सदैव बना रहता है। यजमानों की लाईन लगी रहती है।

फिर यह भी बात है उनके पास व्यवसासिक पद्धति है। नवनागों की नौ अलग-अलग धातुओं में सर्पों की मूर्तियां बनी होती हैं। जिसे वे यजमान को देते हैं। उनके चार्ज लेते हैं। उन मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा कराते हैं तथा जलकुण्ड में विसर्जित कराते हैं। उन मूर्तियों को जलकुण्ड से हाथोंहाथ वापस निकाल लेते हैं। आधा घंटे बाद दूसरा यजमान थामेगा। यही मूर्तियां पुन: काम में ली जाएंगी। वो ही नारियल, वही यज्ञोपवीत, वही सुपारी वही पूजा की सामग्री। दिन भर यही क्रम प्रत्येक यजमान के साथ दोहराया जाएगा। एक ही नारियल पर अनेक यजमानों का संकल्प कैसे काम करेगा। क्यों कर करेगा, समझ के बाहर है। उच्छिष्ट सामग्री कैसे फलीभूत होगी? मन्त्रोच्चार एवं सांगोपांग विधि-विधान तथा ग्रहमुख हवन प्रक्रिया के अभाव में पूजा कैसे सफल होगी?

बड़े तीर्थों में रहने वाले व्यावसायिक पण्डे आम व्यक्तियों से ज्यादा नास्तिक होते हैं। ईश्वर से नहीं डरते। यहां तक पूरा संकल्प तक नहीं बोल सकते? जिस गंगाजल को हम परम पवित्र मान कर आचमनी लेते हैं। उसी में गुदा-प्रक्षालन करते हैं। गन्दे कपड़े धोते हैं। गटर की गन्दगी छोड़ते हैं। अधजली लाशें फेंकते हैं। सभी कर्म आँखों से देखते हैं, तो घृणा हो जाती है। बड़े तीर्थों की महिमा ही हमें वहां तक खींच ले जाती है। वहां रहने वाले पण्डों-पुजारियों की आकर्षक वेश-भूषा हमें सम्मोहित करती है। पर यह जरूरी नहीं कि उनके द्वारा कराया गया पूजन सही हो। दिन को बहुत बड़े भक्त, सिद्ध, साधु व सज्जन दिखाई देने वाले पण्डे-पुजारी, रात को बीड़ी-सिगरेट, शराब पीते हुए, व्यभिचार करते हुए दिखाई देते हैं। जिनका आचरण शुद्ध नहीं। जो स्वयं इष्टबली नहीं। जिन्हें संस्कृत का ज्ञान नहीं। जो पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड में निष्णात नहीं। उनके द्वारा की गई पूजा-अनुष्ठान कैसे सफल हो सकते हैं? केवल स्थान विशेष की महिमा अनुष्ठान को सफल नहीं करती।

Scanned with CamScanner

हमारे पास अनेक जिज्ञासु सामूहिक शिविरों में आते हैं। शिकायत करते हैं हमने नासिक में तीन बार विधि कराई, हमने महाकाल, उज्जैन में विधि कराई, पर कुछ भी फायदा नहीं हुआ। अब क्या करें? इलाज किसी नासिक वाले डॉक्टर से कराओ तथा उसकी शिकायत जोधपुर में स्थित अन्य डॉक्टर को करेंगे तो जवाब यही मिलेगा जिससे इलाज कराया, ऑपरेशन कराया, जहां आपने खर्चा किया, उसी से जाकर शिकायत करो कि हमें लाभ क्यों नहीं हुआ? हाँ! जोधपुर में यदि विधि तीन बार की गई तो कितना प्रतिशत लाभ हुआ या नहीं हुआ? उसका आंकलन करना हमारा नैतिक दायित्व है। ध्यान रहे एक वर्ष में तीन बार निरन्तर पूजा करने पर ही लाभ की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। इसमें अधिक अन्तराल होने पर पूजा निष्फल चली जाती है। वापस शून्य (जीरो) से गिनती करनी पड़ती है।

ईश्वर किसी विशेष स्थान में छिपा हुआ नहीं है। ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है, व्यापक व विभु है। मन्त्रों के उच्चारण एवं मन्त्र प्रयोग की अनुष्ठान विधि के रहस्य को जानने वाले विद्वान् ईश्वरीय अनुकम्पा व दैविक शक्ति को कहीं भी प्रकट करने की सामर्थ्य रखते हैं। इसके लिए विधि प्रधान है। नासिक, महाकाल आदि स्थान विशेष गौण है। स्थान की पवित्रता, पर्यावरण की शुद्धता एवं एकान्त प्रियता इस विधि की सफलता की सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग काम नहीं कर रहा है?

एक दो बार बड़ा विचित्र अनुभव देखने में आया कि एक सज्जन की कुण्डली में पूर्ण कालसर्प योग था परन्तु कालसर्पजनित दोष का नितान्त अभाव उसके जीवन में था। सज्जन की उम्र लगभग 38 वर्ष की थी। वे सज्जन अपने प्रगति की शेखी बगार रहे थे। कालसर्प की हंसी उड़ा रहे थे, जबकि उनके दुर्दिनों की शुरुआत मात्र चार महीने बाद होने वाली थी। उस सज्जन का 'मकरलग्न' था। लग्न में मंगल उच्च का, स्वगृही शनि के साथ था। मंगल की दशा समाप्त होने में 4 माह बाकी थे, राहु की महादशा लगने वाली थी। लगते ही आकाश के बादशाह जमीन पर आ गए। शेयर बाजार में चार करोड़ का झटका लगा। लम्बे-चौड़े कृषि फार्म पर भूमाफिया ने कब्जा कर लिया। मारपीट हुई अंग-भंग हुआ। शेष जीवन कोर्ट-कचहरी के चक्कर में उलझ गया।

व्यवसायिक ज्योतिषियों के पास ऐसे केस आते रहते हैं। कई बार जातक की कुण्डली में चार-चार ग्रह उच्च के स्वगृही हैं। हम योग मालव्ययोग, रुचक योग, करोड़पति योग अन्य विशिष्ट प्रकार के राजयोग मुखरित हैं पर जातक व्यवहारिक धरातल पर फकीर है। आर्थिक तंगी में जी रहा है। कहाँ गया राजयोग का प्रभाव?

Scanned with CamScanner

कालसर्प विधि कराने से लाभ

1. नाग पूजा से होता है विष व्याधियों का शमन
2. ज्योतिष में पंचमी तिथि का स्वामी सर्प को ही माना गया है। विष्णुधर्मोत्तपुराण में आश्लेषा नक्षत्र का स्वामी भी सर्प को कहा गया है-आश्लेषा सर्पदैवत्या (प्रथम खण्ड 83,15)। लोक मान्यताओं के अनुसार जो भी व्यक्ति नाग पंचमी का व्रत कर नागों को दूध पिलाता है, उसे अपने जीवन में कभी सर्पदंश का भय नहीं रहता है। नागपंचमी के दिन अगर नाग की पूजा की जाए तो कालसर्प योग की पीड़ा, सर्पदंश भय से मुक्ति, सर्पश्राप से मुक्ति मिलती है।
3. नागपूजा से शिव एवं श्रीविष्णु दोनों की कृपा प्राप्त होती है।
4. डरावने सपने आने बंद हो जाते हैं।
5. हिंदू मान्यताओं के अनुसार सर्प या नाग को कभी नहीं मारना चाहिए। उनकी हमेशा पूजा करनी चाहिए। नाग पंचमी के दिन हनुमानजी की कृपा से भी सर्पश्राप (कालसर्प योग) की शांति होती है। जब भगवान राम और लक्ष्मण को मेघनाद ने नागपाश में बांध दिया था, तब शंकर के ग्यारहवें अवतार हनुमान ने ही उनको नागपाश से मुक्त करवाया था। इसलिए इस दिन हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ भी किया जाता है।
6. घर में सांप बहुत आते हों तो तुलसी का पौधा (ब्रह्मस्थान) लगावें।
7. सर्पगन्धा औषधि लगाएं। मान्यता है कि नेवला सर्प-संहार के बाद इसी औषधि का सेवन कर अपने को निर्विष करता है।
8. घर में मोरपंखों को श्रीकृष्ण की ऐसी तस्वीर के सामने रखें जिसमें भगवान मोरमुकुट धारण किए हों। इस तस्वीर के सामने 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' महामंत्र का जाप करना चाहिए।
9. कालसर्प शान्ति विधि से जन्मकुण्डली गत अनिष्ट ग्रहों की शान्ति होती है तथा प्रतिकूल ग्रह अनुकूल फल देने शुरु हो जाते हैं क्योंकि इस विधि में नवग्रहों का आह्वान, प्रतिष्ठा एवं हवन होता है।
10. कालसर्प शान्ति विधि से पितृदोष की शान्ति होती है।
11. कालसर्प शान्ति विधि में मातृ-शक्तियों का आह्वान होने से देवी शक्तियों की गुप्त ताकत आपको हर प्रकार के अनिष्ट से बचाती है।

Scanned with CamScanner

12. इस विधि में नथमों की पूजा एवं उनका हवन होने से गण्डमूल जन्म नथम दोष शान्त हो जाते हैं।

13. कालसर्पविधि शान्ति में अमावस्या जन्म दोष की भी शान्ति होती है। सूर्य व चन्द्र जब एकचित्र होते हैं तो दोनों का तेज नष्ट हो जाता है उसे ज्योतिष की भाषा में अमावस्या कहते हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार अमावस्या के दरिद्री होता है फिर वह चाहे इन्द्र ही क्यों न हो। (शक्रस्यापि श्रियं हरेत्) यदि अम में जन्म हो तो जातक के साथ-साथ पिता को भी निर्धनता आती है। अमावर पशु-पक्षी हो वह इन्द्रियों की पीड़ा से युक्त, बलरहित एवं मानसिक रूप से परेशान ऐसा प्राचीन शास्त्रों में सर्वमान्य लोकोक्ति है।

मातृपितदु:खतप्तः सूर्येन्द्वोरुदयंसंस्थ्योर्मनुजः।
मानसुतविभवहीनः परिभूतो जायते दु:खी॥ - सारावत

अर्थात् ऐसा जातक माता-पिता के दु:ख से दु:खी, पुत्र-ऐश्वर्य सम्मान से हीन, पीड़ित व दुखी है। शौनक ऋषि कहते हैं-

इत्थं संजायते यस्तु, तस्य मृत्युर्न संशयः। व्याधिपीड़ा न दारिद्रयं शोकश्चत शान्ति तेषां प्रवक्ष्यामि, नराणां हितकाम्यया। यस्मिन्ननृक्षे विशेषेण ग्रहणं।

अर्थात् ऐसे जातक के परिवार में दरिद्रता, शोक कलह, मृत्यु का भय, पीड़ा व रोग का प्रकोप * समय बड़ा कष्ट रहता है। जातक के माता-पिता चिन्तित रहते हैं।

चूंकि कालसर्प शान्ति विधि अमावस्या को ही होती है जिससे अमावस्या-जन्म दोष समाप्त हो जाते हैं।

14. कालसर्प शान्ति विधि में विशिष्ट संकल्प करने पर 'ग्रहण-जन्म' दोष भी नष्ट होते हैं। इस अवसर पर किए गए प्रायश्चित स्नान व औषधपूर्ण मन्त्र-स्नान से सभी प्रकार के ग्रह-दोष व अनिष्ट की शान्ति होती है।

15. एक वर्ष में तीन बार लगातार पूजा विधि कराने में कालसर्प जनित दोष से मुक्ति मिल जाती है। इसके चमत्कारी फल अनेक सज्जनों ने अपने जीवन में देखे हैं। नि:संतान दम्पतियों को पुत्र हुए हैं। कुंवारे लड़के-लड़कियों को योग्य वधू व वर की प्राप्ति हुई है। बेरोजगारों को अच्छी नौकरी मिली है। ऐसे सैकड़ों लिखित पत्र हमारे पास हैं, जिन्होंने निष्ठापूर्वक कालसर्प विधि कराई, सामूहिक शान्ति विधि में उत्साहपूर्वक भाग लिया और अनुकूल परिणामों की प्राप्ति हुई। प्रति अमावस्या को हमारे संस्थान द्वारा केवल

Scanned with CamScanner

लागत मूल्य में जनकल्याण व परोपकार की भावना से सामूहिक कालसर्प शान्ति के शिविर वैदिक विद्वानों के सानिध्य में लगाए जाते हैं। उन शिविरों में अनेक शिविरार्थी अपना सकारात्मक अनुभव सुनाते हैं। ऐसे-ऐसे आश्चर्य होते हैं कि लोग सुनकर, समझ कर, देखकर दंग रह जाते हैं। ईश्वरीय कृपा का कोई अन्त नहीं। यदि सभी सज्जनों की आपबीती कथा व अनुभवों की लिपिबद्ध कृतियों को प्रकाशित किया जाए तो एक वृहद् ग्रन्थ की रचना अलग से करनी होगी।

16. कालसर्प विधि की शान्ति के बाद लोगों का मानसिक तनाव कम हो जाता है।
17. कालसर्प विधि की शान्ति के बाद बीमार लोगों को रोग निवृत्ति हेतु दी गई दवाएं आश्चर्यजनक रूप से काम करने लगती हैं।
18. सबसे बड़ी राहत की बात यह है कि शिविरार्थी सज्जनों को विशिष्ट शान्ति व सन्तोष की अनुभूति होती है।

प्रार्थना में छिपी है सफलता की अनन्य शक्ति

प्रार्थना आत्मा का संगीत है। आत्मा को परमात्मा का प्रकाश देने वाली प्रार्थना है। जैसे शरीर के लिए भोजन आवश्यक है, वैसे ही प्रार्थना भी एक आध्यात्मिक भोजन है।

इतिहास में ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जब प्रार्थना के माध्यम से अकल्पनीय चमत्कार हुए।

1. द्रौपदी ने प्रार्थना की तो उनका चीर असीमित हो गया।
2. सीता ने प्रार्थना की और देखते-ही-देखते अग्नि की ज्वालाएं शीतल हो गई।
3. मीरा ने प्रार्थना की और हलाहल विष अमृत में बदल गया।
4. सुभद्रा ने प्रार्थना की और चम्पा के बन्द तार एक क्षण में खुल गए।
5. सुदर्शन ने प्रार्थना की तो मृत्युदायक शूल सिंहासन में बदल गया।
6. निरन्न ब्राह्मण की दरिद्र अवस्था को देखकर आद्य शंकराचार्य ने द्रवित होकर भगवती लक्ष्मी से प्रार्थना की और देखते-ही-देखते ब्राह्मण के घर के आंगन में सुवर्ण आंवलों की वर्षा हो गई।
7. मनुष्य तो क्या जानवर भी प्रार्थनाओं की चमत्कारी शक्ति से प्रभावित हुए 'गजेन्द्रमोक्ष' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।
8. बाबर ने मरणासन्न अपने पुत्र हुमायुँ के लिए प्रार्थना की प्रभु मेरे प्राण ले लो हुमायुँ को बचा लो। हुमायुँ तत्काल ठीक हो गया और बाबर के प्राण पखेरू उड़ गए।

Scanned with CamScanner

9. सम्राट अकबर की संतान नहीं थी। पुत्र कामना हेतु रेगिस्तान की तपती दोपहर में नंगे पांव अजमेर गए प्रार्थना की और पुत्र हुआ।

10. ऐसे ही ईसामसीह ने करुणा विगलित प्रार्थनाओं के माध्यम से अनेक असाध्य रोगियों को ठीक कर दिया।

11. प्रार्थना की फलश्रुति अनन्त है। प्रार्थना में छिपी अलौकिक शक्ति को हर धर्म, जाति व समुदाय ने स्वीकार किया है। शास्त्रों में कहा गया है कि प्रार्थना सदैव निष्काम भाव से करनी चाहिए। परोपकार के लिए, दूसरों के हित के लिए करनी चाहिए तभी सही अर्थों में प्रार्थना की सुगन्धि मिलती है।

12. यदि मनुष्य प्रार्थना का सही प्रयोग करना सीख जाए तो शीघ्र ही प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाया जा सकता है। परिस्थितियां भाग्य से मिलती हैं। अच्छी परिस्थितियां सौभाग्य का लक्षण हैं। बुरी परिस्थितियां दुर्भाग्य का लक्षण हैं। दुर्भाग्य जब जन्म लेता है तो मनुष्य को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। भाग्य आपको जो कुछ भी दे, वह महत्त्वपूर्ण तो है, लेकिन बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है। उससे भी बड़ी बात तो यह हो सकती है कि आपको भाग्य से जो मिल रहा है उसे पाने के बाद उसे चुनौती देते हुए अपने आपको ऊंचा उठाने में संलग्न होइए। हार मानकर नहीं बैठिए। अपने पुरुषार्थ में कमी नहीं आने दीजिए।

लेकिन पुरुषार्थ में बल तब आएगा, जब पुरुषार्थ के साथ प्रार्थना जुड़ेगी। आगे बढ़ने का संकल्प मन में दोहराइए, लेकिन साथ ही भगवान की प्रार्थना और साधना भी जरूर कीजिए। सुमिरन कीजिए। भगवान की कृपा हो और अंदर की संकल्प शक्ति जागी हो तो मनुष्य बड़े से बड़ा कार्य भी कर सकता है।

दुनिया के सहारे बहुत देर तक नहीं टिकते। सबसे बड़ा सहारा भगवान का है। भगवान का सहारा हम केवल अनुभव करते हैं, क्योंकि भगवान दिखाई तो देते नहीं, लेकिन अनुभव कीजिए कि जिस समय आपके अपनों ने आपका साँथ छोड़ दिया और आप अकेले खड़े रह गए तो उस समय वह कौन सी शक्ति थी, जिस शक्ति ने आपको बुझने नहीं दिया। एक बात जरूर होती है, बार-बार श्रद्धाभाव से पुकारने से, अंतःकरण को निर्मल करने से एक विशेषता जरूर आ जाती है आपका अंतःकरण निर्मल हुआ तो याद रहे कि जिस व्यक्ति की संकल्पशक्ति प्रबल होगी, वह आदमी नियम से कार्य पूरा करेगा।

Scanned with CamScanner

आपके अंदर से स्वर निकलते हैं तो वह प्रार्थना है। प्रार्थना चमत्कार करती है।

जब भी इंसान कोई डॉक्टर, वकील, इंजीनियर या शूरवीर थक जाता है तो फिर यही कहता है कि बस अब दुआ (प्रार्थना) करो। ग्रंथों में कहा गया है कि उन्नति के लिए प्रार्थना और पुरुषार्थ बहुत आवश्यक है।

बिना प्रार्थना के परिश्रम सफल नहीं होता और बिना परिश्रम के प्रार्थना पूर्ण नहीं होती। दोनों का संतुलन बहुत आवश्यक है।

13. प्रार्थना में सकारात्मक शक्ति का ऊर्जा स्रोत है, जिसमें जीवन की सार्थकता छिपी है। प्रार्थना व्यक्ति को परमात्मा के नजदीक ले जाती है। पूरा ऋग्वेद शान्तिप्रदायक प्रार्थनाओं से भरा पड़ा है। अत: कालसर्प योग के अनिष्ट नाशक हेतु किए गए शान्ति प्रयोगों की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता।

सिंह लग्न

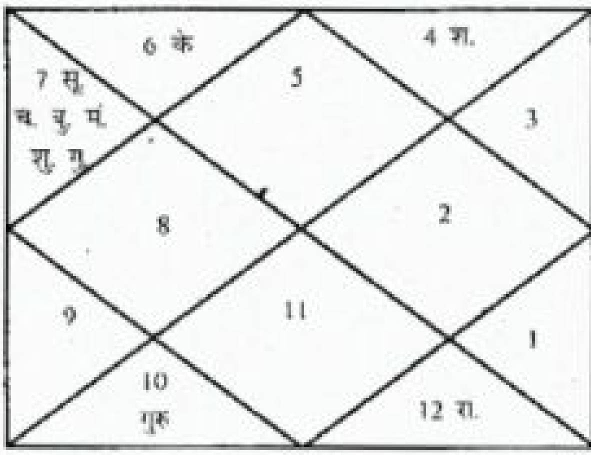

कन्या लग्न

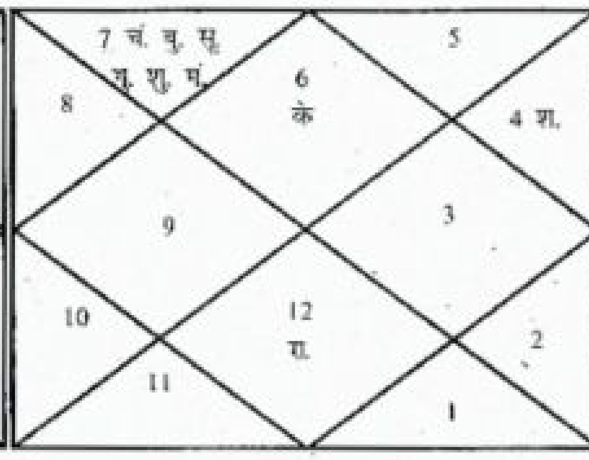

सिंह – कुटुम्ब में विवाद परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। यात्राएं व्यर्थ होंगी, बहुत होंगी।

कन्या – धन का अपव्यय बहुत होगा। नित नए धंधे, कारोबार में रुचि बढ़ेगी। स्थिरता संदिग्ध।

तुला लग्न

वृश्चिक लग्न

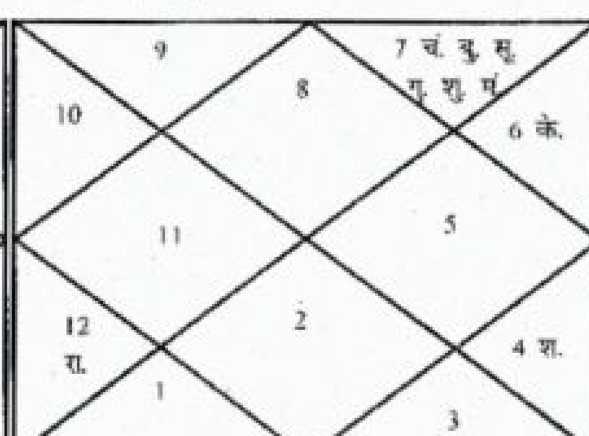

Scanned with CamScanner

तुला - व्यापार-व्यवसाय में बढ़ोत्तरी, खर्च व कर्ज बढ़ेगा। नए वाहन, नए भवन की प्राप्ति पर दुर्घटना का भय बढ़ेगा।

वृश्चिक - संतान-विद्या में बाधा, दुर्घटना का भय प्रबल।

धनु लग्न

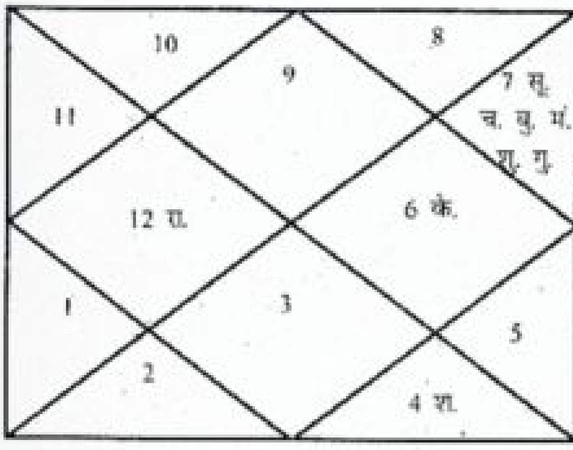

मकर लग्न

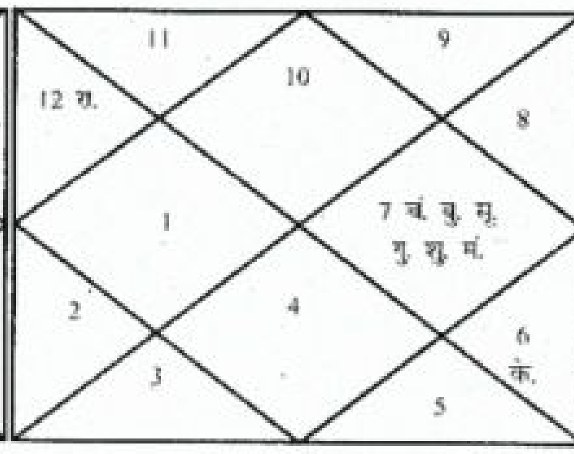

धनु - धन लाभ पर पांव में कष्ट, शारीरिक चोट पहुँचे। सुख में बाधा।

मकर - राजपथ में लाभ, कोर्ट में विजय, व्यापार-व्यवसाय में स्थाई सम्पत्ति की प्राप्ति पर भाईयों तथा पिता से विवाद बढ़े।

कुम्भ लग्न

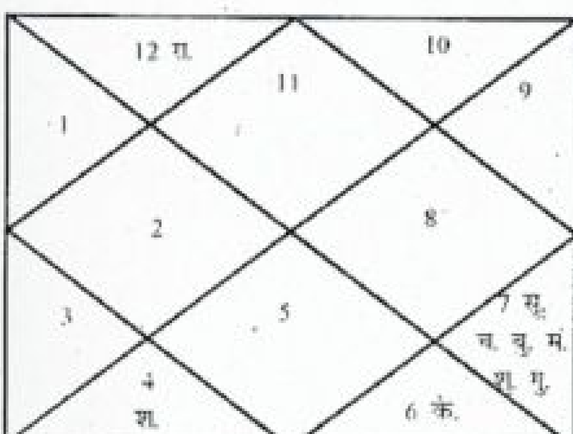

मीन लग्न

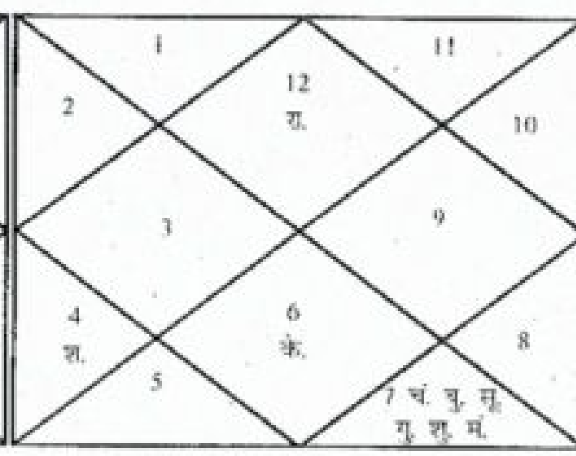

कुम्भ - भाग्योदय के नए अवसर प्राप्त होंगे। धन खर्च होगा। वाणी की असंयमता के कारण नया विवाद बनेगा।

मीन - दुर्घटना भय, चिन्ता, दु:ख, हानि-कष्ट, अव्यर्थ यात्राएं होंगी। शत्रु परास्त होंगे।

भेदनीय ज्योतिष के परिपेक्ष्य में शुक्र, शनि और मंगल में तीनों ग्रह तुला

Scanned with CamScanner

राशि पर आते हैं तो युद्ध की संभावना बढ़ती है। 1962-63 में भारत व चीन का युद्ध हुआ था। गुरु व शुक्र का एक राशिगत होना भी दुर्भिक्षकारक है। राष्ट्र में दु:ख व आतंक बढ़ता है। तुला का सूर्य व मंगल इन पदार्थों की हानि कराता है। इस प्रकार के अनेक तथ्य पंचग्रह, षट्ग्रह व सप्तग्रह युतियों पर फलादेश करते समय ध्यान में रखने चाहिए तथा जो जातक इन विशिष्ट युतियों में पैदा हुए, उनके जीवन के उतार-चढ़ाव का ग्राफ बनाना चाहिए। व्यवहारिक जीवन में सही फलादेश ही ज्योतिष की खुशबू (कीर्ति) है। ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को अपने निंजी अनुसंधान व अनुभव के आधार पर फलादेश की प्रखरता बढ़ानी चाहिए तथा अपने अनुभव ज्ञान को जनहित में, शास्त्र ज्ञान की अवरुद्ध धारा को आगे बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रकाशित करते रहना चाहिए। यही सच्चे ज्योतिषी का कर्त्तव्य है।

Scanned with CamScanner

विधवापन को हटाने वाला घट-विवाह

ज्योतिष शास्त्र में एक सर्वाधिक प्रसिद्ध श्लोक है-

"लग्ने व्यये चपाताले, जामित्रे चाष्टमे कुजे
कन्या भर्तु र्विनाशाय, भर्तु कन्या विनश्यति"

- मानसागरी अ. 4/श्लोक 4

अर्थात् जिस किसी जातक की जन्मकुण्डली के प्रथम भाव (लग्न स्थान), चतुर्थ (जामित्र) स्थान, सातवें (पाताल, आठवें एवं बारहवें व्यय स्थान) में मंगल हो तो वह कुण्डली मंगलीक कहलाती है। स्त्री जातक कुण्डली ऐसी ग्रह स्थिति के कारण "चुनरी मंगलवाली" तथा पुरुष जातक की कुण्डली "मौलिये मंगल" वाली कहलाती है। विवाह मेलापक करते समय ज्योतिष शास्त्र में मंगल का मिलान करना अति आवश्यक समझा जाता है। वरना दोनों में से एक की मृत्यु हो जाती है। कई बार ऐसा होता है कि लड़का पसन्द है, लड़की मंगलीक है, पर मंगल का मिलान नहीं हो रहा है ऐसे में शास्त्र घट विवाह जिसको कुम्भ विवाह भी कहते हैं, करने का निर्देश देता है। अत: विवाह के पूर्व कन्या का विवाह पहले विष्णुरूप घट (कुम्भ) से कराया जाता है। इससे मंगलदोष का परिहार हो जाता है।

इसके अतिरिक्त लड़की की जन्म कुण्डली में यदि "वैधव्य योग" हो या "विषयोग" हो तो उस दोष की निवृत्ति करने हेतु भी "धर्मसिन्धु" में "कुंर्भावाह" करने की व्यवस्था दी है। अत: कुल तीन कारणों की वजह से घट विवाह किया जाता है।

(1) मंगलीक कुण्डली

कन्या की जन्मकुण्डली में 1/4/7/8/12वें स्थान में मंगल हो तथा इन इन स्थानों में वर की जन्मकुण्डली में मंगल न हो तो शास्त्र कन्या के अखण्ड सौभाग्य की रक्षा हेतु घटविवाह करने की आज्ञा देते हैं। इसके पूर्व मंगलीक भंग योग हो तो वह भी देख लेने चाहिए।

Scanned with CamScanner

(2) विष कन्या योग

सूर्य भौमार्किवारेषु तिथि भद्राशताभिथम्।
आश्लेषा कृत्तिका नागे, तत्र ज्ञाता विषांगना।1॥
जर्नुलग्ने रिपुक्षेत्रे संस्थित: पापखेचर:।
द्विसाम्यअपि योगेऽस्मिनसञ्जाता विषकन्यका।।2॥
लग्ने शनिश्चरो यस्या: सूतेऽर्को नवमें कुज:।
विषाख्या सापि नौद्वाहया, त्रिविधा विषकन्यका।।3॥

रवि, मंगल, शनिवार हो, भद्रातिथि 2/7/12 हो, शतभिषा, आश्लेषा, कृत्तिका, मूल नक्षत्र हो तथा इनमें से किन्हीं तीनों का जन्म के समय पूर्ण योग हो तो उत्पन्न बालिका विष कन्या होती है।।1॥

जन्म लग्न में शत्रुक्षेत्री पापग्रह हो, तथा उपर्युक्त प्रथम श्लोकों में से कोई दो योग बनते हों तो ऐसी बालिका विष कन्या होती है।।2॥

जिस कन्या के लग्न में शनि स्थित हो, पंचम भाव में सूर्य हो, नवम भाव में मंगल हो तो वह भी विष कन्या होती है। इस तरह तीन प्रकार की विष कन्याएं कही गई हैं।।3॥

विषकन्या योग में उत्पन्न कन्यां शोक पीड़ित, परिवार को कष्ट देने वाली, पति तथा सन्तानसुख से हीन कही गई है। अत: विवाह करने से पूर्व अष्टकूट एवं मंगल मिलान के अतिरिक्त यह योग भी सूक्ष्मता से देखना चाहिए।

गुजराती व राजस्थानी में इसी आशय की एक कहावत सर्वत्र प्रचलित है-

"चौथ चतुर्थी षष्ठी जाणं, वारशनि के मंगल भाण।
ज्येष्ठा मूला श्रवण सही, आ पुत्री विषकन्या थई।
आप मरे के कुटुम्ब संहारे, नाम देवतो ब्राह्मण मारे,
इंम करतो विष कन्या मोटी थाय, चंवरी माये वरने खाय।
देव संजोगे परणी जाय, ब्रह्मा विष्णु जोवण आय।।4॥

अर्थात् 4/6/14 इन तिथियों में से किसी भी तिथि को शनि या मंगलवार हो तो उस दिन ज्येष्ठ, मूल या श्रवण में का कोई भी नक्षत्र हो तो तीनों के सम्मिश्रण काल में यदि कोई कन्या पैदा हो तो वह विषकन्या कहलाती है।

इस योग में जन्मी कन्या जीवित नहीं रहती। प्रथमत: पैदा होते ही मर जाती है या फिर कुटुम्ब को नष्ट कर देती है। नामकरण संस्कार के समय यह नाम देने वाले ब्राह्मण को मार डालती है। फिर भी बड़ी हो जाए तो विवाह के समय (फेरे देते वक्त) वर को मार डालती है। फिर भी विवाह हो जाए तो ब्रह्मा,

Scanned with CamScanner

विष्णु, महेश तीनों देवता, उसको देखने आते हैं। अर्थात् विषकन्या का विवाह कष्टकर होता है। यदि किसी कन्या की कुण्डली में इस प्रकार के योग हों तो उसका भी परिहार "घट विवाह" से होता है।

विषकन्या भंग योग

द्युनेपे वा शुभेस्ते विषाख्या न।

अर्थात् सप्तम स्थान में स्वयं सप्तमेश स्थिति हो, चाहे वह पापग्रह ही क्यों न हो अर्थात् सप्तम स्थान में स्वयं सप्तमेश हो तथा सप्तम भाव में शुभग्रह स्थिति हो तो विषकन्या योग भंग हो जाता है। सप्तम भाव में स्त्री के सौभाग्य का विचार होता है। यह बात हमें सदैव स्मरण रखनी चाहिए कि सप्तम में शुभग्रह हो, सप्तम भाव पर शुभग्रहों का प्रभाव हो तो सौभाग्य तो बढ़ेगा ही।

यदि ये दोनों योग पड़े हों तो उपर्युक्त तीन प्रकार के योग नष्ट हो जाते हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस विषय में कल्याण वर्मा ने 'सारावली' में कहा है-

वैधव्यं निधने चिन्त्यं शरीर जन्मलग्नतः।
सप्तमे पतिसौभाग्यं, पंचमे प्रसवस्था॥

- सारावली (स्त्री जातक)

अर्थात् पुरुष के अष्टम भाव से विधुरता एवं स्त्री के अष्टम भाव से वैधव्य का विचार करना चाहिए। सप्तम में दम्पति की स्थिति सम्पदा, वैभव एवं पति के सौभाग्य का पता चलता है। पंचम से प्रसव पुत्र-कन्या की स्थिति का पता लगाना चाहिए। अतः यहाँ भी पति सौभाग्य सुख हेतु स्त्री के सप्तम भाव को प्रधानता दी गई है।

Scanned with CamScanner

वैधव्ययोग

(1) जिस कन्या की कुण्डली में सप्तम भाव में मंगल पापग्रहों से युक्त हो तथा पापग्रह सप्तमभाव में स्थित मंगल को देखते हों तो ऐसी कन्या युवावस्था में पहुँचने के पूर्व बालविधवा हो जाती है।

(2) चन्द्रमा से सातवें या आठवें भाव में पापग्रह हो तो मेष या वृश्चिक राशिगत राहु और आठवे या बारहवें स्थान में हो तो ऐसी कन्या निश्चय ही विधवा होती है। यह योग, वृष, कन्या एवं धनु लग्नों में लागू होता है।

(3) मकर लग्न हो तो सप्तमभाव में कर्क राशिगत सूर्य+मंगल के साथ हो तथा चन्द्रमा पापपीड़ित हो तो यह योग बनता है। ऐसी स्त्री विवाह के सात-आठ वर्ष के भीतर विधवा हो जाती है।

(4) लग्न एवं सप्तम भाव दोनों स्थानों में पापग्रह हों तो, विवाह के सातवें वर्ष पति का देहान्त हो जाता है।

(5) सप्तम भाव में पापग्रह हो तथा चन्द्रमा छठे या सातवें स्थान पर हो तो विवाह के आठवें वर्ष स्त्री विधवा हो जाती है।

(6) यदि अष्टम स्थान स्वामी सप्तम भाव में हो, सप्तमेश को पापग्रह देखते हों, सप्तम भाव पापपीड़ित हो तो नवोढ़ा स्त्री भी शीघ्र विधवा हो जाती है।

(7) षष्ठ व अष्टम स्थान के स्वामी यदि षष्ठ या व्यय भाव में पापग्रहों के साथ हो, सप्तम भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो, सप्तम भाव पापपीड़ित हो तो नवोढ़ा स्त्री भी शीघ्र वैधव्य को प्राप्त हो जाती है।

(8) **सप्तमाधिपति षष्ठे, व्यये वा पापपीडितौ।**
तदा वैधव्यमाप्नोति, नारी नैवात्र संशयः॥
अर्थात् जन्म लग्न से सप्तम, अष्टम स्थानों के स्वामी पापपीड़ित होकर छठे या बारहवें स्थानों में चला जाए तो निःसन्देह वैधव्ययोग होता है।

(9) पापग्रह से दृष्ट पापग्रह यदि अष्टम स्थान में हो और शेष ग्रह चाहे उच्चराशि में ही क्यों न हों, ऐसी स्त्री विधवा अवश्य होती है।

इस प्रकार के वैधव्य दोष की निवृत्ति हेतु धर्मशास्त्र कहते हैं-

"सावित्र्यादिव्रतं कृत्वा, वैधव्यदिनिवृत्तये।

Scanned with CamScanner

अ श्वत्थादिभिद्वाह्या दद्यात्तां चिरजीवने॥1॥

बालवैधव्ययोग तु कुम्भदुपतिमादिभिः।

कृत्वा लग्नं ततः पश्चात् कन्योद्वाह्रोति चापरे॥2॥

अर्थात् वट् सावित्रीव्रत कथा, वटवृक्ष के साथ विवाह, वटवृक्ष की लकड़ी से बनी सुवर्णयुक्त विष्णुप्रतिमा अथवा कुम्भ (घट) के साथ पहले विवाह करके ही अन्य के साथ विवाह करने से वैधव्य दोष परिहार हो जाता है।

अथ घट-विवाह प्रयोग

कन्या का पिता सपत्नीक किसी देवालय, नदी या किसी एकान्त स्थल में जाए। शुभ आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठे, प्राणायाम एवं पवित्रीकरण करके अपनी कन्या के विष-दोष, मंगली-दोष अथवा वैधव्य-दोष के परिहार हेतु घट-विवाह का संकल्प निम्न प्रकार से करे।

संकल्प

ॐ विष्णु र्विष्णुर्विष्णुः श्रीमदभगवतो इत्यादि पठित्वा एवं गुण विशेष विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम अस्याः कन्याया नक्षत्रादि योगेन ग्रहयोगेन च विषाख्य योग जननसूचित वैधव्यारिष्ट परिहारार्थ श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ घटविवाहख्य कर्म करिष्ये।

इतना कहकर संकल्पित जल भूमि पर त्याग दे एवं पुनः हाथ या आचमनी में जल ले।

तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थ गणपतिपूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृका पूजन वसोर्धारापूजन वैश्वदेव-संकल्प नान्दीश्राद्धम् आचार्यवरणञ्च करिष्ये।

तत्रादौ दिग्रक्षणं-कलशार्चञ्च करिष्ये।

इसके बाद दिग्रक्षण, कलशपूजन करें, गणपतिपूजन एवं आचार्य का वरण करें। तत्पश्चात् प्रधानपीठ पर कलश स्थापित करें एवं विष्णु की सुवर्ण प्रतिमा अथवा वट (अश्वत्थ) वृक्ष की बनी प्रतिमा का "अग्न्युत्तारण" करें। मूर्ति का घी से स्नान करावें "ॐ समुद्रास्यत्वा" पढ़कर जलधारा से स्नान करा अग्न्युत्तारण करके प्राण प्रतिष्ठा करें। मूर्ति को दक्षिण हाथ में ग्रहण करके निम्न मन्त्र पढ़ें अथवा चाहें तो घट के भीतर विष्णु की प्रतिमा रखें।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्या विष्णुमूर्तेः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं.। अस्या विष्णुमूर्तेः जीव इह स्थितः। ॐ आं.। आस्याः विष्णुमूर्तेः सर्वेन्द्रियाणि वांग्मनः चक्षुं क्षोत्रजिह्वाघ्राणपाणि पादपा

Scanned with CamScanner

यूपस्थानीहागत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। गर्भाधान-दिषोडश-संस्कारार्थ षोडश प्रणवान् जपेत।

तत्पश्चात् आवाहन इत्यादि षोडशोपचार से पूजा करें और फिर प्रार्थना करें-

"हे जलों के टिकने के स्थान कुंभ! वरुण के शरीर रूपी तुझको नमस्कार है और तुम इस कन्या के पति को चिरकाल तक स्थिर रखें और पुत्र, पौत्र आदि के सुख से सुखी करो। हे विष्णो! हे देव! इस कन्या के दु:ख को आप दूर करो, तत्पश्चात् विष्णुरूपी कुंभ (घट) को कन्या अर्पित करे।

"वरुणांगस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय:।
पतिं जीवय कन्यायाश्चिचरं पुत्रसुखं कुरु॥
देहि विष्णो वरं देहि कन्यां पालय दु:खत:॥

इतना कहकर सुवर्ण युक्त विष्णु प्रतिमा को जल में छोड़ दें। कन्या एवं घट के मध्य अन्तर्पट रखें। घड़े का मुख कपड़े से वेष्ठित करें। कन्या को उसके सम्मुख पश्चिममुखी बैठाकर मंगलाष्टक पढ़ें। फिर "ॐ प्रतिष्ठा" आदि पढ़कर कुंभ (घट) पर वस्त्र, उपवस्त्र रखें। मधुपर्क, अलंकार दे। मंगल तन्तु बांधे। मंगल मन्त्रों "परित्वा." को पढ़ते हुए कुम्भरूप विष्णु को कन्या दान करें। कन्या दान का संकल्प इस प्रकार करें।

कन्यादान संकल्प

"ॐ विष्णुविष्णु र्विष्णु: श्रीमद्भग्वतो महापुरुषस्य विष्णो. इत्यादि पठित्वा। एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ अस्या: कन्याया विषाख्ययोग जनन वैद्यव्यदोषाय नुत्तयें श्री विष्णु स्वरूपिणे अ श्वत्थ कुम्भाय श्री रूपिणीमिमां कन्या तुभ्यमहं सम्प्रददे।"

इतना कहकर कन्या के दक्षिण हाथ में जल देकर विष्णु स्वरूप घट को समर्पित कर दें और मन्त्र पढ़ें।

"गौरी कन्यामिमां श्लक्ष्णां यथाशक्ति विभूषिताम्।
ददामि विष्णवे तुभ्यं सौभाग्यं देहि सर्वदा॥
विष्णुं रूपिणे कुम्भायेड़ मां कन्यां सम्प्रददे॥"

इसके बाद वस्त्र ग्रन्थि खोलकर घड़े को जल में छोड़ दें। कन्या चूड़ियां छोड़ दे। बिन्दी मिटा दे। रंगीन वस्त्र-आभूषण त्यागकर आचार्य को सौंप दे। आचार्य "ऐन्द्रवारूपणपावनीय" मन्त्रों से त्याग पंचमल्लवों से युक्त कलश के पवित्र जल से कन्या को अभिषेक दे। कन्या स्नान करके दूसरे शुद्ध वस्त्र पहने। कन्या आचार्य को दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे और कहे-"**भो ब्राह्मणा: अहम्**

Scanned with CamScanner

अनेन कुम्भविवाहकर्मणा अनघाऽस्मि?" ऐसे तीन बार कहे। **"त्वमनधाऽसि एवमस्तु"**। ऐसे वाक्य आचार्य तीन बार प्रवचन में कहे। उसके बाद कर्म प्रधान देवता एवं गणपति का विसर्जन करे। ब्राह्मण भोजन-दान के बाद आचार्य अखण्ड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दे।

पुरुषों के लिए अर्क विवाह

जिस प्रकार विषकन्या योग स्त्री को होता है उसी प्रकार पुरुष के भी कुण्डली में मृतपत्नी योग विधुरयोग या विषयोग होता है। सप्तम भाव दूषित होने पर या जिस पुरुष की स्त्री जीवित नहीं रहती जिसके दो-तीन विवाह होने पर भी स्त्री का सुख नहीं रहता, ऐसे पुरुष को अर्क के साथ विवाह कर, उसके बाद अन्य कन्या से विवाह कराया जाता है। घट विवाह की भाँति अर्क विवाह भी शास्त्रसम्मत सप्तमभाव जन्यदोष व अनिष्ट निवारण का उत्तमोत्तम परिहार है।

Scanned with CamScanner

केमद्रुम शान्ति प्रयोग

भारत भर से हजारों पत्र आते हैं कि जन्मपत्रिका में केमद्रुम योग पड़ा है। इसकी शान्ति का कोई उपाय बताएं। प्रबुद्ध पाठक सबसे पहले यह समझें कि केमद्रुम योग वास्तव में होता क्या है।

केमद्रुम योग की निष्पत्ति

केमद्रुम भवति पुत्र कलत्रहीनो,
देशान्तरे वज्रति दुखसभाभितप्तः।
ज्ञातिप्रमोदनिरता मुखरः कुचैलो,
नीचः सदाभवति भीतियुतिश्चरायुः॥

-मानसागरी 4/1

जब चन्द्रमा किसी ग्रह से युत न हो, चंद्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में जब कोई ग्रह न हो तथा शुभ ग्रह चंद्रमा को न देखते हों तो "केमद्रुम योग" बनता है।

परिणाम

यह दरिद्रतादायक योग है। शास्त्रकारों ने कहा है-"द्रव्यदाते तु चन्द्रमाः।" अर्थात् धन को देने में चंद्रमा का मुख्य हाथ है। केमद्रुम योग के परिणाम अमंगलकारी होते हैं। इसलिए "जातक पारिजात" कहता है-

योग केमद्रुमे प्राप्ते यस्मिन् कस्मिश्च जातके।
राजयोगा विनश्यन्ति, हरि दृष्टवां यथा द्विपाः॥

विशेष-अर्थात् दूसरे राजयोग व मंगलकारी योग कुंडली में चाहे जितने बनते हों परन्तु यदि एक केमद्रुम योग बनता है तो सारे राजयोग उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जिस प्रकार से एक सिंह सारे हाथियों के समूह को भगा देता है। यह योग दुःख का मूल है। जातक को पुत्र व पत्नी संबंध पीड़ा देता है। जातक को निरर्थक देशाटन कराता है। साथ ही जातक द्वारा एकत्रित धन का नाश करता है। रुपयों की प्राप्ति हेतु जातक को दर-दर भटकाता है। रुपए एकत्रित नहीं होने देता।

केमद्रुम शान्ति के उपाय

1. चन्द्रमा को मजबूत करने के लिए मोती युक्त चन्द्रमा "चन्द्र यंत्र" साथ धारण करें।

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग किसे कहते हैं?

सामान्यत: जन्मकुण्डली के सारे ग्रह जब राहु और केतु के बीच में कैद हो जाते हैं, तो उस ग्रह स्थिति को 'कालसर्प योग' कहते हैं। राहु सर्प का मुख माना गया है और केतु इस सर्प की पूंछ। काल का अर्थ 'मृत्यु' है। यदि अन्य ग्रहयोग बलवान न हों तो कालसर्प योग में जन्मे जातक की मृत्यु शीघ्र हो जाती है। यदि जीवित रहता है तो मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगता है। ज्योतिष शास्त्र में इस योग के प्रति मान्यता प्राय: अशुभ फलसूचक ही है।

सर्प का इस योग से सम्बन्ध

सर्प का भारतीय संस्कृति से अनन्य सम्बन्ध है। एक बार महर्षि सुश्रुत ने भगवान धनवन्तरि से पूछा-'हे भगवान्! सर्पों की संख्या और इसके भेद बतावें?

सुश्रुत के इन वचनों को सुनकर वैद्यों में श्रेष्ठ धनवन्तरि ने कहा, "वासुकि जिनमें श्रेष्ठ है, ऐसे तक्षकादि सांप असंख्य हैं। ये सर्प अन्तरिक्ष एवं पाताल लोक के वासी हैं पर पृथ्वी पर पाए जाने वाले नामधारी सर्पों के भेद अस्सी प्रकार के हैं।"

भारतीय वाङ्मय में विषधर सर्पों की पूजा होती है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार सर्प को मारना उचित नहीं समझा जाता तथा यत्र-तत्र उनके मन्दिर बनाए जाते हैं। ज्योतिषशास्त्रानुसार नागपंचमी, भाद्रकृष्ण अष्टमी तथा भाद्रशुक्ल नवमी को सर्पों की विशेष पूजा का प्रावधान है। पुराणों में शेषनाग का वर्णन है जिस पर विष्णु भगवान शयन करते हैं। वह भी एक सर्प है। सर्पों को देव योनि का प्राणी माना जाता है। नए भवन के निर्माण के समय नींव में सर्प की पूजा कर चांदी का सर्प छोड़ा जाता है। वेद के अनेक मन्त्र सर्प से सम्बन्धित हैं। आज भी सर्प सम्प्रदाय के जन पाए जाते हैं। जिनको 'सपेरा' कहते हैं। नाग जाति व सम्प्रदाय के लोग भी मिलते हैं। शौनक ऋषि के अनुसार जब मनुष्य की धन पर अत्यधिक आसक्ति हो जाती है तो मृत हो जाने पर वह नाग बनकर उस धन पर जा बैठता है। सर्प कुल के 'नाग' श्रेष्ठ होते हैं। नाग की हत्या इस जन्म में जन्मान्तर तक पीछा नहीं छोड़ती। नाग-वध का शाप पुत्र-सन्तति में बाधक होता है। कई प्रदेशों में नाग-वध शाप को दूर करने के लिए पिष्टमय नाग का विधिवत् पूजन करके उसे दहन किया जाता है तथा भस्मी के तुल्य सुवर्ण धातु दान में दिया जाता है।

Scanned with CamScanner

शास्त्रों में सर्प को काल का पर्याय भी कहा है। 'काल' स्वयं उत्पन्न हुआ है, किसी ने इसको उत्पन्न नहीं किया। काल आदि, मध्य, अन्त एवं विनाश से रहित है। मनुष्यों का जीवन और मरण काल के आधीन है। काल सर्वथा गतिशील है। यह कभी किसी के लिए रुकता नहीं, यह सर्वदा गतिशील है। काल प्राणियों को मृत्यु के पास ले जाता है और सर्प भी। कालसर्प योग सम्भवतः समय की गति से जुड़ा हुआ ऐसा ही योग है जो मनुष्य को परेशान करता है। उसके जीवन को भारी संघर्ष से जोड़ता है।

बहुचर्चित कालसर्प योग मूलतः कहाँ से आया? फलित ज्योतिष में इसकी शुरुआत कहां से हुई? इसके प्रवर्तक, प्राचार्य कौन थे? कालसर्प योग का प्रभाव होता भी है या नहीं? जातक की कुण्डली देखते समय हमें इस योग पर विचार करना चाहिए या नहीं? ये सभी प्रश्न एक ज्योतिष प्रेमी जिज्ञासु के सामने उपस्थित होते हैं जिसका समाधान आज के वैज्ञानिक युग में नितान्त अनिवार्य है। आइए, हम सब लोग मिलकर इस पर विचार करें।

राहु-केतु का सर्पयोग से सम्बन्ध

पौराणिक मत के अनुसार 'राहु' नामक राक्षस का मस्तक कट कर गिर जाने पर भी वह जीवित है एवं केतु उसी राक्षस का धड़ है। राहु और केतु एक ही शरीर के दो अंग हैं। चुगली खाने के कारण सूर्य-चन्द्र को ग्रहण कर ग्रसित कर, सृष्टि में भय फैलाते हैं। ज्योतिष में राहु को 'सर्प' कहा गया है और केतु उसी सर्प की पूंछ है। बृहत्संहिता के राहु-चाराध्याय, अध्याय 3, श्लोक 3 में लिखा है कि-

"मुखं पुच्छ विभक्ताङ्गं भुजङ्गमाकारमुपदिशन्त्यन्ये"

"मुख और पुच्छ से विभक्त है अंग जिसका ऐसा जो सर्प का आकार है, वही राहु का आकार है।"

'कामरत्न', अध्याय 14, श्लोक 47 में सर्प को ही 'काल' कहा है।

न पश्येद्वीक्ष्यमाणेऽपि काल दृष्टो न संशयः।।47।।

सर्पदंशोविषंनास्ति कालदृष्टो न संशयः।।50।।

तथा यह काल ही 'मृत्यु' है।

विक्रम की 16वीं शताब्दी में मानसागर नामक एक विद्वान हुए जिन्होंने फलित ज्योतिष के पूर्वाचार्यों के श्लोकों को संकलित कर 'मानसागरी' नामक सुन्दर ग्रन्थ की रचना की। उन्होंने अरिष्टयोगों पर चर्चा करते हुए अध्याय 4, श्लोक 10 में लिखा-

Scanned with CamScanner

लग्नाच्च सप्तमस्थाने शनि-राहु संयुतौ

सर्पेण बाधा तस्योक्ता शय्यायां स्वपितोपि च॥

अर्थात् सातवें स्थान में यदि शनि-सूर्य व राहु की युति होती है तो पलंग (शय्या) पर सोते हुए व्यक्ति को भी सांप काट जाता है। फलित ज्योतिष पर निरन्तर अध्ययन-अनुसंधान करने वाले आचार्यों ने जब देखा कि सर्प के मुख-पुच्छ अर्थात् राहु-केतु के मध्य सारे ग्रह अवस्थित हों तो जातक का जीवन ज्यादा कष्टमय रहता है, तो इसे 'कालसर्प योग' की संज्ञा दे दी होगी। वस्तुतः कालसर्प योग 'सर्पयोग' का ही परिष्कृत स्वरूप है।

कालसर्प योग की प्राचीनता

महर्षि पराशर ने फलित ज्योतिष में 'सर्पयोग' की चर्चा करते हुए कहा कि सूर्य, शनि व मंगल-ये तीनों पापग्रह यदि तीन केन्द्र स्थानों में 1/4/7/10 में हों और शुभग्रह केन्द्र से भिन्न स्थानों में हो तो 'सर्पयोग' की सृष्टि होती है।

केन्द्रत्रयगतैः सौम्ये पापैर्वा दलसंज्ञकौ।

क्रमान्याभुजंगाख्यौ शुभाशुभफलप्रदौ॥ - अ. 36/पृ. 197

बृहत्पाराशर के अनुसार 'सर्पयोग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति कुटिल, क्रूर, निर्धन, दुःखी, दीन एवं पराए अन्न पर निर्भर रहने वाला जातक होता है। यथा-

विषयाः क्रूरा निःस्वानित्यं दुखार्दिता सुदीनाश्च।

परभक्षपाननिरताः सर्वप्रभवा भवन्ति नराः॥ - अ. 36/पृ. 200

महर्षि बदरायण, भगवान गर्ग, मणित्थ ने भी जलयोग के अन्तर्गत 'सर्पयोग' को पुष्ट किया है।

केन्द्रत्रयगतैः पापै सौम्यैर्वा दलसंज्ञितौ।

द्वौयोगो सर्पमालाख्यौ विनष्टेष्टफलप्रदौ॥ - बृहत्पाराशर अ.36/पृ. 371

बृहत्जातक 'नाभसयोग' अध्याय 12, पृष्ठ 148 पर इस योग को वराहमिहिर द्वारा भी अपने ग्रन्थों को उद्धृत किया गया। काल ने करवट ली। ईसा की आठवीं शताब्दी में स्वनामधन्य आचार्य कल्याणवर्मा ने सर्पयोग की परिभाषा में संशोधन किया। उन्होंने अपने दिव्यग्रंथ 'सारावली' में स्पष्ट किया (अध्याय 11, पृष्ठ 154) कि प्रायः सर्प की स्थिति पूर्ण वृत न होकर वक्र की रहती है। अतः तीन केन्द्रों तक में ही सीमित सर्पयोग की व्याख्या उचित प्रतीत नहीं होती। उनका मानना था कि चारों केन्द्र, किंवा केन्द्र व त्रिकोणों से वेष्ठित पापग्रह की उपस्थिति भी 'सर्पयोग' की सृष्टि करती है।

Scanned with CamScanner

जांतकतत्त्वम्, जातकदीपक, ज्योतिष रत्नाकर, जैन ज्योतिष के अनेक प्राचीन-ग्रंथों में कालसर्प योग के दृष्टान्त मिलते हैं। एक पाश्चात्य विद्वान ने "Rahu & Ketu" नामक आंग्लग्रन्थ के अध्याय 13, पृष्ठ 114 पर कालसर्प योग की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की है। मेरे द्वारा सम्पादित 'अज्ञातदर्शन' अंक 7/1 जनवरी, 84 में एवं 'श्रीमालीअभ्युदय' में भी कई बार कालसर्प योग पर शोध-कार्य प्रकाशित हुए हैं।

शापित जन्मकुण्डलियाँ

फलित क्षेत्र में काम करने वाले ज्योतिषियों के पास कई बार ऐसी जन्मकुण्डलियां आती हैं जिनकी ग्रह-स्थिति तो बहुत ही उत्तम है। योगायोग भी श्रेष्ठ हैं पर उसके अनुपात में जातक की उन्नति कुछ भी नहीं। आप ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे ये कुण्डलियां प्रायः शापित होती हैं। बृहत्पाराशर में 14 प्रकार के शाप बताए हैं। उनमें से पितृशाप, प्रेमशाप, ब्राह्मणशाप, मातुलशाप, पत्नीशाप, सहोदरशाप, सर्वशाप प्रमुख हैं। इन शापों के कारण व्यक्ति की उन्नति नहीं होती, उसे पुरुषार्थ का फल नहीं मिलता। उसकी सन्तान जीवित नहीं रहती। महर्षि भृगु 'भृगुसूत्र' के आठवें अध्याय, श्लोक 1-12 में लिखते हैं कि यदि लग्न से पंचम भाव में राहु हो तो व्यक्ति को सर्प के शाप से पुत्र का अभाव रहता है तथा नाग की प्रतिष्ठा करने से पुत्र की प्राप्ति होती है। यथा-

पुत्राभावः सर्पशापात् सुतक्षयः॥11॥
नाग प्रतिष्ठया पुत्रःप्राप्ति॥12॥

शापित जन्मकुण्डलियों में त्रिशूलयोग के आधार पर कालसर्प योग का प्रचलन बढ़ा क्योंकि शापित जन्मपत्रिकाएं और कालसर्प योग की जन्मपत्रिकाओं में बहुत-सा साम्य मिलता है।

पश्चिमी राजस्थान के जालौर प्रान्त से एक जैन दम्पति हमारे पास आए। विवाह के 14 वर्ष उपरान्त उनको कोई सन्तान नहीं थी। डॉक्टरी चेकअप के अनुसार पति-पत्नी दोनों में से किसी को कोई दोष नहीं था। फिर भी सन्तान नहीं थी। उनके पंचम भाव में राहु था। कालसर्पयोग जैसी कोई बात नहीं थी। वे सज्जन बाहर गांव से आए थे। उनको 'कालसर्प योग' निवृत्ति की विधि समझाकर वापस भेज दिया। उन्होंने अपने गांव में विधि करवाई, पर उससे संतुष्ट नहीं हुए। मुझे विशेष आग्रह करके अपने गांव ले गए। वहां ग्यारह ब्राह्मणों से इस पुस्तक अनुसार विधि कर हवन करवाया। ईश्वर की कृपा से उस जैन दम्पति को उसी वर्ष पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। सच्चे मन से श्रद्धापूर्वक यजन किया जाए तो दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति हो जाती है।

Scanned with CamScanner

सर्पशाप से ग्रसित कुण्डलियां

प्रसंगवश कालसर्प योग की भांति ही सर्पशाप से ग्रसित कुण्डलियों का विवेचन करना आवश्यक समझता हूँ। वैसे तो 14 प्रकार से श्रापित कुण्डलियों की शान्ति 'कालसर्प योग' विधि से हो जाती है। केवल संकल्प के समय उच्चारण में पाठान्तर होता है परन्तु सर्पशाप से ग्रसित जन्मपत्रिकाओं की निवृत्ति भी कालसर्प योग विधि से ही होती है।

योगायोग

1. **सुते राहौ भौमदृष्टे सर्पशापात् सुतक्षयः॥**
   पंचम भाव में राहु हो, मंगल उसे देखता हो।
2. **यमे सुते चन्द्र दृष्टे सुतेशे राहुयुते सर्पशापात् विपुत्रः।**
   पंचम स्थान में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तथा चन्द्रमा उसे देखता हो।
3. **सुतेशे भौमे, सुते राहौ सौम्यादृष्टे सर्पशापात् विपुत्रः।**
   पंचमेश मंगल (कर्क या धनु लग्न) हो, पंचम भाव में राहु शुभग्रहों से दृष्ट न हो।
4. **स्वांशे भौम, पुत्रेशे ज्ञे, पापयुते सर्पशापात् विपुत्रः।**
   पंचमेश मंगल (कर्क या धनु लग्न) हो, मंगल अपने ही नवमांश में हो या पंचमभाव में हो, पंचमस्थ राहु या अन्य पापग्रह हो।
5. **सुतकारकयुतौ राहुतुंगेशयुते, पुत्रेशे त्रिके, सर्पशापाद् विपुत्रः।**
   सुतकारक गुरु मंगल से युत हो, लग्नेश राहु से युत या लग्न में राहु हो, पंचमेश त्रिक्स्थानों (7, 8, 12) में हो।
6. पुत्रकारक गुरु राहु से युक्त हो, तथा पंचमभाव शनि से दृष्ट हो।
7. कर्क या धनु लग्न में पंचमस्थ राहु बुध से युत या दृष्ट हो।
8. पंचमस्थान में सूर्य, मंगल, शनि अथवा राहु हो तथा पंचमेश और लग्नेश दोनों बलहीन हों।
9. लग्नेश राहु से युत, पंचमेश मंगल से युत तथा गुरु राहु से दृष्ट हो।
10. अनुभव में ऐसा आया है कि राहु गुरु की युति जन्मपत्रिका में कहीं भी हो तो सर्प के शाप से सन्तति जीवित नहीं रहती। चन्द्रमा से राहु केतु आठवें स्थान में हो तो वह पत्रिका पूर्व जन्मकृत शाप की समझनी चाहिए। ऐसे में जातक को कालसर्प योग की शान्ति से बड़ा लाभ मिलता है।

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग की परिभाषा

सभी ग्रह यदि राहु और केतु के मध्य में आ जाएं तो 'कालसर्प योग' की सृष्टि होती है। मोटे तौर पर कालसर्प योग दो प्रकार के होते हैं। एक उदित गोलार्द्ध और दूसरा अनुदित गोलार्द्ध। उदित गोलार्द्ध को ग्रस्त योग कहते हैं तथा अनुदित को मुक्त योग कहते हैं।

लग्न में राहु तथा सप्तम में केतु हो, सारे ग्रह 7/8/9/10/11/12वें स्थानों में हों तो यह उदित कालसर्प योग कहलाता है। राहु-केतु का भ्रमण हमेशा उलटा चलता है। इस योग में सभी ग्रह क्रमशः राहु के मुख में आते चले जाएंगे।

विशेष ज्ञातव्य

1. कालसर्प योग के निर्माण में यूरेनस, नेपच्यून व प्लूटो का कोई स्थान नहीं है।
2. यदि कोई ग्रह समान राशि में बैठा हो। नक्षत्र या अंशों की गणना से राहु केतु से दूर चला जाए, ऐसी अवस्था में कालसर्प योग भंग हो जाता है, ऐसी मान्यता यहां इस योग में निरर्थक है।
3. कई बार ऐसा होता है कि राहु-केतु के मध्य सातों ग्रह न आकर एकाध ग्रह उनकी (कैद) पकड़ से बाहर निकल जाता है। ऐसे में उस कुण्डली पर कालसर्प योग की छाया बरकरार है। इसे 'आंशिक कालसर्प योग' कहते हैं। शान्ति अनिवार्य है, ऐसा समझना चाहिए।
4. राहु+मंगल, राहु+गुरु, राहु+बुध, राहु+शुक्र, राहु+शनि ये युतियां अनिष्ट फल देती हैं तथा ऐसी पत्रिकाएं शापित मानी जाती हैं।
5. चन्द्र+केतु, चन्द्र+राहु, सूर्य+केतु युतियां प्रतियुतियां कालसर्प योग की तीव्रता को पुष्ट करती हैं तथा पीड़ा उत्पन्न करती हैं।
6. ऐसा अनुभव में आया है कि वृषभ, मिथुन, कन्या और तुला इन लग्नों में पड़ा कालसर्पयोग ज्यादा पीड़ा देता है।
7. राहु से अष्टम में सूर्य पड़ा हो तो 'आंशिक कालसर्प योग' बनता है।
8. ऐसे ही चन्द्रमा से राहु+केतु आठवें हो तो 'आंशिक कालसर्प योग' बनता है।
9. जन्मपत्रिका में राहु 6-8-12 में हो तो 'आंशिक कालसर्प योग' बनता है।

Scanned with CamScanner

10. जिस पत्रिका में 'कालसर्प योग' पड़ा है तथा शुभग्रह राहु से पीड़ित हैं अथवा राहु स्वयं पापग्रहों से पीड़ित है तो ऐसे जातक को राहु की महादशा में कष्टों का सामना करना पड़ेगा।

11. राहु मिथुन एवं कन्या का हो तो अन्धा होता है। यदि कालसर्प योग मिथुन या कन्या राशि में राहु द्वारा ग्रसित हो रहा हो तो ज्यादा पीड़ादायक होता है। कालसर्प योग में जन्मे व्यक्ति को राहु या केतु की दशा, अन्तर्दशा अथवा गोचर में राहु का 6/8/12 स्थानों में भ्रमण विशेष कष्टदायक रहता है।

कालसर्प योग का प्रभाव

कालसर्प योग में जन्मे व्यक्ति को प्राय: बुरे स्वप्न आते हैं। स्वप्न में सांप दिखलाई पड़ते हैं। रात को चमकना, पानी से डरना तथा ऐसे जातक को अकाल मृत्यु का भय रहता है। नींद में चमकना, हमेशा कुछ-न-कुछ अशुभ होने की आशंका मन में रहना, नाग का दीख पड़ना, उसे मारना, उसके टुकड़े होते देखना, नदी-तालाब, कुएं व समुद्र का पानी दीखना, पानी में गिरना और बाहर आने का प्रयत्न करना, झगड़ा होते देखें और खुद झगड़े में उलझ जाएं, मकान गिरते देखना, वृक्ष से फल गिरते देखना। स्वप्न में विधवा स्त्री दीखे, चाहे वह स्वयं के परिवार की ही क्यों न हो। जिनके पुत्र जीवित नहीं रहते हैं, उन्हें स्वप्न में स्त्री की गोद में मृतबालक दिखलाई पड़ता है। नींद में सोते हुए ऐसा लगे कि शरीर पर सांप रेंग रहा हो पर जागने पर कुछ भी नहीं। छोटे बच्चे बुरे स्वप्न के कारण बिस्तर गीला कर देते हैं। ये सभी स्वप्न अशुभ हैं तथा कालसर्प योग की स्थिति को स्पष्ट करते हैं।

कालसर्प योग का प्रमुख लक्षण एवं प्रत्यक्ष प्रभाव संतान अवरोध, गृहस्थ में प्रतिफल कलह, धनप्राप्ति की बाधा एवं मानसिक अशान्ति के रूप में प्रकट होता है। उपर्युक्त सभी प्रवाह मोटे तौर पर बताए गए हैं। कालसर्प योग भी कई प्रकार के होते हैं तथा उसका सूक्ष्म प्रभाव हम आगे बतला रहे हैं।

जातक के शरीर में वात, पित्त, त्रिदोषजन्म उत्कन्ट रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। गंडमाला, कुष्ठ, कण्डू, नेत्र-कर्णशूल, मूत्रकृच्छ एवं ऐसे रोग जो नित्य पीड़ा देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों तो समझ लीजिए सर्पवध के कारण ही यह रोग उत्पन्न होते हैं। नागबली विधान के बिना इसकी शान्ति सम्भव नहीं।

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग के बारे में भ्रान्तियाँ

मेरे बम्बई प्रवास के दौरान 24-3-93, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बुधवार के एक विशिष्ट मुहूर्त में एक बड़ी लक्जरी बस, एक टैक्सी व दो कारों में बम्बई शहर के प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों वाला एक छोटा जनसमूह नासिक-त्र्यम्बकेश्वर की ओर मेरे नेतृत्व में प्रस्थान कर रहा था। इसकी सूचना 'नवभारत टाइम्स', 'बम्बई समाचार', 'जन्मभूमि', 'गुजरात समाचार' जैसे कई समाचारपत्रों में थी। एक हजार साधारण जन्मपत्रिकाओं के मध्य में हमें औसत एक कुण्डली कालसर्प योग वाली मिलती है। इतने सारे कालसर्प योग वाले व्यक्तियों को एकत्रित करके ले जाने में एक अजीब-सी बेचैनी महसूस हो रही थी। कहीं कोई अप्रिय घटित न हो जाए, इस हेतु शुभमुहूर्त में प्रस्थान करने के समय को लेकर मेरे अपने सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श चल रहा था।

इतने में टेलीफोन की घंटी घनघना उठी। बम्बई के कुछ ज्योतिषियों के फोन थे। वे कह रहे थे कि ये आप क्या करने जा रहे हैं। 'कालसर्प योग' जैसी कोई चीज होती ही नहीं? कोई अनाड़ी या ज्योतिष शास्त्र को न मानने वाला व्यक्ति ऐसी बात करता तो कोई आश्चर्य नहीं होता? पर स्वयं ज्योतिषी ऐसी बात करे तो बड़ी हैरानी होती है। कालसर्प योग के बारे में बहुत-सी भ्रान्त धारणाएँ, मैं पहले भी कई बार सुन चुका हूँ। मैंने ऐसे कुतर्की सज्जनों की मन:स्थिति एवं परिस्थिति दोनों का सूक्ष्म अध्ययन किया। प्राय: ऐसे लोगों को कर्मकाण्ड का ज्ञान नहीं होता। ऐसे अधकचरे लोग बीमारी बताना तो जानते हैं पर इसके इलाज से नितान्त अनभिज्ञ होते हैं। वस्तुत: जन्मकुण्डली पूर्वजन्म प्रदत्त पुण्य-पाप का लेखा-जोखा ही तो है। यदि पुण्य बलवान है तो केन्द्रत्रिकोण में शुभग्रह उच्च के बैठे होंगे। व्यक्ति भाग्यशाली कहलाता है। भाग्यशाली व्यक्ति की पहचान स्पष्ट है। महर्षि कल्हण कहते हैं-

अर्था भाग्योदये जन्तुं विवशन्ति शतश: स्वयम्।
दिग्भ्योऽभ्युपेत्य सर्वाभ्य: सायं तरूपि वाङ्जाम्॥

अर्थात् सन्ध्या होते ही जैसे सब पक्षी विभिन्न दिशाओं से आकर वृक्षों पर बसेरा लेने पहुँच जाते हैं, उसी प्रकार जब मनुष्य का भाग्योदय होता है तब सब दिशाओं से नाना प्रकार की सुख-सम्पत्तियां अनायास भाग्यशाली व्यक्ति के पास स्वत: ही पहुँच जाती हैं।

Scanned with CamScanner

जाने-अनजाने में किए पापकर्मों के फलस्वरूप 'दुर्भाग्य' का उदय होता है। दुर्भाग्य सन्तान अवरोध के रूप में प्रकट होता है। कुलक्षिणी व कलहप्रिय पत्नी या पति का मिलना दूसरा दुर्भाग्य है। चौथा दुर्भाग्य शारीरिक हीनता या मानसिक दौर्बल्य है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति में निराशा की भावना जागृत होती है और अपने जीवित शरीर का बोझा ढोते हुए शीघ्रातिशीघ्र मृत्यु को प्राप्त करना चाहता है। दुर्भाग्य से ये चारों लक्षण 'कालसर्प योग' वाली कुण्डली में स्पष्टः प्रतिबिम्बित होते हैं। सबसे पहले व्यक्ति दुर्भाग्य से बचने के लिए भौतिक उपायों का अवलम्ब लेता है। वह डॉक्टर, वैद्य, हकीम के पास पहुँचता है। धन प्राप्ति के अनेक उपाय सोचता है, प्लानिंग करता है। बार बार युक्तिसंगत प्रयत्न करने पर भी जब कार्य नहीं होता तब अन्तिम रूप में ज्योतिष शास्त्र की ओर ध्यान आकर्षित होता है। तब वह जन्मपत्री में दोष ढूँढता है। कौन से कुयोग हैं? पूर्वजन्म कृत सर्पशाप, पितृशाप, भ्रातृशाप, ब्राह्मण शाप की वजह से विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान, शुभकर्म की फलदाई नहीं हो रहे हैं। तब स्पष्टतः कुण्डली में दिखलाई देता है 'कालसर्प योग'।

जब व्याधि की चिकित्सा औषध व उपायों से नहीं होती तब कर्मज रोग, कर्मज व्याधि को मानना ही होता है। 'योग रत्नाकर' कहता है-

"न शमं याति या व्याधिः ज्ञेयकर्मजो बुधैः।
पुण्यश्च भेषजे शान्तस्ते ज्ञेयाः कर्म-दोषजाः॥"

कालसर्प योग होता है या नहीं, इसका पहला व प्रत्यक्ष प्रमाण है-इस योग को भुगतने वाले जातकों की जन्म कुण्डलियां एवं उसके कुफलों के बारे में भुक्तभोगी जातकों के कटु अनुभव। हमारे कार्यालय में कालसर्प योग में जन्मे एक हजार से अधिक लोगों की जन्मकुण्डलियाँ एवं व्यक्तिगत रूप से उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का विस्तृत आकलन विधिवत रिकार्डेड है। अतः योग स्वयं प्रत्यक्षः प्रमाणित है। इसे और अधिक प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं।

संसार में कुछ प्राणी ऐसे भी हैं, जिन्हें दिन में नहीं दिखाई देता। अपने इस अन्धत्व के लिए वे सूर्य को दोषी ठहराते हैं। बसन्त ऋतु में सूखे ठूंठ व कटे हुए वृक्ष में भी नवीन कोंपल, नए पत्ते उग आते हैं पर करीर (कैर) का वृक्ष बसन्त ऋतु के आगमन को नहीं पहचान पाता क्योंकि उसके तो पत्ते लगते ही नहीं? पुरातन शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों का अवलोकन छिछली व कपट बुद्धि वाला प्राणी नहीं कर पाता? अतः नास्तिक बुद्धि वाले जातक को प्रमाण समझाना अपना सिर पत्थर से फोड़ने के समान ही दुष्कर कार्य है।

Scanned with CamScanner

नास्तिक बुद्धि वाले ज्योतिषियों से एक प्रश्न है कि सूर्य के दोनों ओर की ग्रह स्थिति से वेसी, वासी एवं उभयचारी योग बनता है या नहीं? चन्द्रमा के दोनों ओर की ग्रहस्थिति से अनफा, सुनफा, दुर्धरा एवं केमद्रुम योग बनता है या नहीं? चन्द्र के साथ शनि होने पर 'विषयोग' एवं चन्द्र के साथ राहु होने पर 'ग्रहण योग' होता है या नहीं? फिर क्या कारण है कि राहु और केतु के द्वारा ग्रसित हो जाने पर आप उन्हें कुग्रह जनित कुयोग नहीं मानते?

महर्षि पाराशर एवं वराहमिहिर जैसे दिग्गज आचार्यों ने 'सर्पयोग' की चर्चा अपने ग्रंथों में की है। 'सारावली' ने सर्पयोग की और अधिक विस्तृत व्याख्या की है। 'मानसागरी', अध्याय 4, श्लोक 10 में स्पष्ट लिखता है कि सप्तमभाव में यदि शनि राहु से युक्त हो तो सर्पदंश से मृत्यु होती है। 'वृहत्संहिता' में राहु सर्प का मुख माना गया है तथा केतु इस सर्प की पूँछ कहा गया है। जैन ज्योतिष एवं दक्षिण भारत के प्राचीन एवं नवीन ग्रन्थों में भी 'कालसर्प योग' का उल्लेख प्रचुर मात्रा में मिलता है। पर पढ़े कौन? अध्ययन-अनुसंधान कौन करे? सत्य एवं सही चीजों को समझने-परखने के लिए समय किसके पास है?

> **"एक क्षण के लिए हम यह मान भी लें कि कालसर्प योग का वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में प्रचलित नहीं था, तो क्या ज्योतिषशास्त्र में नवीन अनुसंधान पर पाबन्दी है। 'कैन्सर एवं एड्स' जैसे खतरनाक रोगों के बारे में पहले किसी को ज्यादा ज्ञान नहीं था तो क्या आज इन रोगों के अस्तित्व को नकारा जा सकता है? नहीं, सत्य की खोज एवं अनवरत अनुसंधान बौद्धिक मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। न तो इसको नकारा जा सकता है, न ही इसे रोका जा सकता है। सत्य के प्रति आँखें मूंदना केवल अज्ञानता है, और कुछ भी नहीं।"**
>
> ***-डॉ. द्विवेदी***

कुछ नास्तिक ज्योतिषी लोग 'कालसर्प योग' को मानते हैं पर विधि करने पर कालसर्प योग की शान्ति हो जाती है, इसमें विश्वास नहीं रखते, लाप्सी तो खानी है पर गुड़ से परहेज है। पुष्प की प्रशंसा पर सुगन्ध से एलर्जी है। वे अग्नि को तो मानते हैं, उसकी दाहकता उसकी उष्णता के अस्तित्व से इनकार है। कालसर्प योग तो है पर उसका कुप्रभाव नहीं? उलटा यह तो उन्नतिकारक है और उदाहरणार्थ कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों की कुण्डलियों का दृष्टान्त भी देते हैं। अग्नि में शीतलता है, इसके उदाहरण में जलाशय को प्रस्तुत करते हैं। जलकणों की आद्रता के नीचे 'बड़वानल' होता है, इनका उन्हें ज्ञान नहीं? अपने ऊटपटांग उदाहरणों, दृष्टान्तों में वे स्वयं उलझ जाते हैं। अस्तु।

Scanned with CamScanner

एक बार शहर के प्रतिष्ठित प्रोफेसर हमारे पास आए। अपनी पुत्री की कुण्डली दिखाते हुए पूछा-"इसकी शादी कब होगी?" पुत्री की कुण्डली में कालसर्प योग था। लग्न से सप्तम भाव 'तक्षक' नाम वाला कालसर्प योग था। लग्न में ही चन्द्रमा राहु से ग्रसित था। मैंने सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए कहा कि आपकी बच्ची को स्वप्न में साँप दिखते हैं और डर के मारे ये कई बार बिस्तर भी गीला कर देती है। प्रोफेसर साहब अवाक् से मेरी ओर देखते रह गए। बोले, बच्ची 16 वर्ष की हो गई है तथा इस चिन्ता से मैं बहुत परेशान हूँ। कई इलाज करवाए, कुछ भी फर्क नहीं हुआ। मैंने मुहूर्त देखकर कालसर्प योग की निवृत्ति कराई। बच्ची अब पूर्णतः स्वस्थ है तथा उसे स्वप्न में सर्प दिखाई देने भी बंद हो गए।

कई ज्योतिषी 'कालसर्प योग' में राहु के जाप पर ही जोर देते हैं तथा इसकी विधि कराने की सलाह नहीं देते। यह प्रतिक्रिया भी तथाकथित ज्योतिषी की अल्पज्ञता व अज्ञानता को ही दर्शाती है। 'नास्तिक ज्योतिषी' शब्द से मेरा इशारा उन लोगों की ओर है, जो ब्राह्मणेत्तर हैं तथा ज्योतिषविद्या की विरासत जिन्हें परम्परागत रूप से प्राप्त नहीं है। संस्कार की कमी के कारण ऐसे लोग मन्त्र-तन्त्र विद्या एवं प्रार्थना की शक्ति से अनभिज्ञ होते हैं तथा अनुष्ठान, तपोबल या आशीर्वाद के द्वारा यजमान के भाग्य को पलटने, उसका कल्याण करने की क्षमता नहीं रखते। अतः सात्विक ब्राह्मण ही कर्मकाण्ड का अधिकारी है, इस बात को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। शास्त्रकार कहते हैं-

पूर्व जन्मकृतं पापं, व्याधिरूपेण बाधते।
तत् शान्तिरौषधैर्दानैः जप श्राद्धादि कर्मभिः॥

पूर्वजन्म में किए गए पाप, इस जन्म में व्याधि (बाधा) के रूप में प्रकट होते हैं। उसका परिहार जप, दान, श्राद्ध व शान्ति कर्म से ही सम्भव है।

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग के विविध प्रकार

प्राचीन विद्वानों ने 12 प्रकार के कालसर्प योग का विश्लेषण किया है तथा इन योगों को अनन्त, कुलिक, वासुकी, शंखपाल, पदम, महापदम, तक्षक, कर्कोटक, शंखचूड़, घातक, विषधर तथा शेष इन नामों से अभिहित भी किया है। ये सभी योग लग्न से सप्तम एवं द्वितीयभाव से अष्टम भाव से क्रमवार-स्थिति को लेकर बनाए गए। इनके सही फलादेश के लिए जिस भाव में राहु है, उस भावेश की स्थिति तथा अन्य योगायोगों का तुलनात्मक अध्ययन करना जरूरी है।

कालसर्प योग के 62,208 व्यावहारिक विभाजन

अब तक हमारी मान्यता थी कि कालसर्प योग मात्र 12 प्रकार के होते हैं। परन्तु व्यावहारिक परीक्षणों से पता चला कि अलग-अलग लग्नों में घटित होने वाले अलग-अलग प्रकार के अनन्तादि कालसर्प योग का असर अलग-अलग प्रकार से घटित होता है। उदाहरणार्थ-लग्न से लेकर सप्तम भाव तक राहु-केतु से ग्रसित योग को अनन्तनाग नामक कालसर्प योग कहते हैं। अब लग्न में पीड़ा मेषराशिगत राहु, वृषराशिगत राहु से भिन्न असर देगा। इसी प्रकार मिथुनलग्नगत राहु का प्रभाव सिंह लग्न से भिन्न होगा। इसी दृष्टि से मोटे तौर पर 12 × 12 = 144 प्रकार के कालसर्प योग बनते हैं।

इसमें भी 'उदित गोलार्द्ध' (आरोह) एवं 'अनुदित गोलार्द्ध' (अवरोह) के भेद से यह संख्या 144 से द्विगुणित हो जाती है। (144 × 2 = 288) इस प्रकार से कालसर्प योगों की कुल संख्या 288 प्रकार की बनती है।

उपरोक्त अवस्थाओं में यदि किसी जातक का जन्म अमावस्या के दिन या सूर्यग्रहण जैसी ग्रह स्थिति में हो तो कुण्डली में उग्र कालसर्प योग की स्थिति बनेगी। इसके विपरीत यदि पूर्णिमा का जन्म हो तो चन्द्रग्रहण संज्ञक कालसर्प योग बनेगा। फलतः 288 + 144 उग्र + 144 चन्द्रग्रहण कुल = 576 प्रकार के विभाजन वैज्ञानिक तौर पर बने।

इनमें से यदि एक ग्रह इनकी पकड़ से बाहर निकल जाए तो 'आंशिक कालसर्प योग' बनता है। कई बार चन्द्रमा बाहर निकल जाता है, कई बार मंगल तो कभी शनि अर्थात् 576 प्रकार की कुण्डलियों को नौ ग्रह एवं 12 भावों में

Scanned with CamScanner

विभाजित करने पर 576 × 9 × 12 = 62,208 प्रकार कुण्डलियों के फलादेश का सटीक अध्ययन अनुसंधान के लिए जरूरी है। केवल दो-चार जन्म कुण्डलियों के विश्लेषण से हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते। बासठ हजार दो सौ आठ प्रकार की इन सभी जन्मकुण्डलियों के फलादेश अलग-अलग प्रकार के होंगे। कालसर्प योग के फलादेश पर विस्तृत विवेचना एवं इन पर विस्तृत शोधकार्य आज के युग की प्रबल मांग है। प्रबुद्ध पाठकों की जिज्ञासा शान्त करने हेतु उदित गोलार्द्ध एवं अनुदित गोलार्द्ध का भेद निम्न दो उदाहरण कुण्डलियों के द्वारा स्पष्ट करना चाहूँगा। उदाहरण कुण्डली-

अनुदित गोलार्द्ध	उदित गोलार्द्ध
1. श्री राजकुमार सोनी	2. श्री अशोक सचदेवा
जन्म : 4-12-1959	जन्म : 28-7-1955
प्रात: 02-26 अजमेर (राज.)	प्रात: 05-00 बम्बई (महाराष्ट्र)

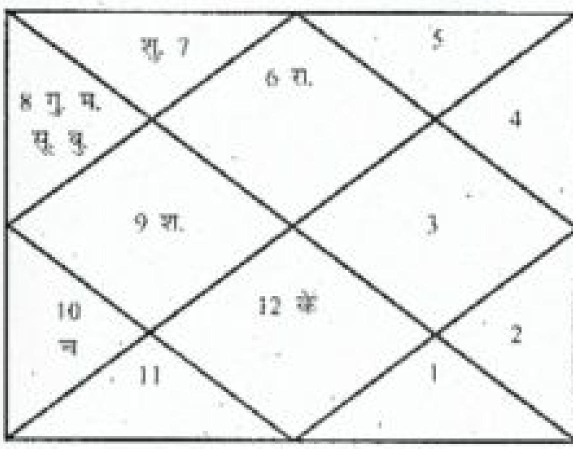

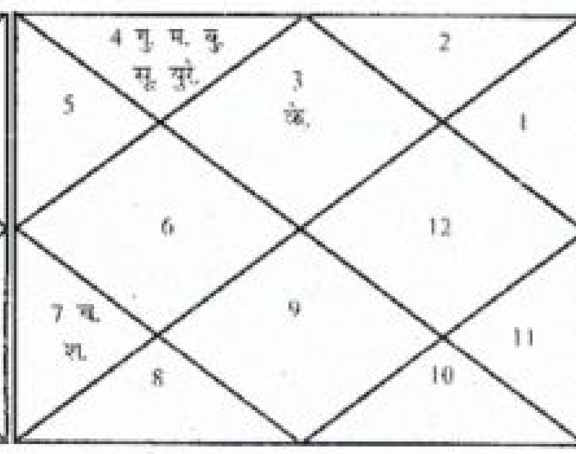

राहु-केतु हमेशा उलटे चलते हैं। श्री राजकुमार सोनी की कुण्डली में गोचर का राहु पहले सिंह राशि में जाएगा। फिर कर्क वगैरह को क्रमश: ग्रसित करेगा अर्थात् कुण्डली के खाली भाग में गतिशील होगा तो यह 'अनुदित गोलार्द्ध' वाला कालसर्प योग हुआ।

नम्बर दो वाली उदाहरण कुण्डली श्री अशोक सचदेवा की है। जिसमें अनन्त नामक कालसर्प योग ही है परन्तु जब गोचर में ग्रह चलेंगे तो राहु पहले पश्चिम राशि में जाएगा फिर क्रमश: तुला-कन्या वगैरह में जाएगा। राहु सर्प का मुख कहा गया है। फलत: राहु के मुख में ग्रसित होते चले जाएंगे अत: यह उदित गोलार्द्ध वाला कालसर्प योग हुआ। उदित गोलार्द्ध वाले को पीड़ा व कष्ट जन्म से ही शुरू हो जाते हैं तथा राहु जब इस घेरे से बाहर निकलता है, तब उसे आराम मिलता है। जबकि अनुदित गोलार्द्ध वाले को प्रारम्भ में इतना कष्ट वगैरह कुछ नहीं होता। उसको कष्ट का अनुभव तभी होगा जब राहु गोचर में आकर

Scanned with CamScanner

के ग्रहों को ग्रसित करना शुरु करेगा। यह सब प्रैक्टिकल रूप से अनुभूत बातें हैं जो पहली बार प्रकट की जा रही हैं।

जैसे उपर्युक्त दोनों कुण्डलियाँ अनन्त नामक कालसर्प योग की होती हुई भी उसके फलादेश अलग-अलग होंगे। वर्गीकरण का यह सूक्ष्म भेद पाठकों को सही ढंग से समझ लेना चाहिए।

विशेष समझ

किसी भी प्रकार का कालसर्प योग यदि राहु से प्रारम्भ हो रहा हो तो वह ज्यादा खतरनाक है। केतु से लेकर राहु पर्यन्त दिखाई देने वाला योग इतना खतरनाक नहीं होता। एक बात सदैव याद रखें-कालसर्प योग पुत्र-सन्तान के लिए विशेष रूप से तभी बाधक है जब वह पंचमस्थ राहु लग्न बनता हो। जन्मकुण्डली के जब सारे ग्रह राहु+केतु के बीच में पूर्ण रूप से कैद हो जाते हैं, तब 'पूर्ण कालसर्प योग' बनता है। ऐसी स्थिति में जिस भाव में राहु होगा, उस भाव के सुख से जातक को वंचित करेगा। राहु+केतु की कैद में से एकाध ग्रह बाहर निकल जाएं तो आंशिक कालसर्प योग बनता है। आंशिक कालसर्प योग का कुफल आधा होता है पर होता जरूर है। यह मेरे अनुभव से आया क्योंकि यह पुस्तक लिखने तक कम्प्यूटर की मदद से कुल एक लाख से अधिक विविध लग्नों के जन्म कुण्डलियों का संग्रह हमारे कार्यालय में हो चुका है।

1. अनन्त नामक कालसर्प योग

लग्न से लेकर सप्तम भाव पर्यन्त राहु-केतु के मध्य या केतु-राहु के मध्य फंसे ग्रहों के कारण 'अनन्त कालसर्प योग' बनता है। ऐसे जातक को व्यक्तित्व निर्माण के लिए, आगे बढ़ने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। इसका प्रभाव इनके गृहस्थ जीवन पर भी पड़ता है तथा इनका वैवाहिक जीवन कष्टमय होता है। ऐसा मनुष्य अपने कुटुम्बियों से नुकसान पाता है। मानसिक परेशानी पीछा नहीं छोड़ती, एक के बाद एक अनन्त मुसीबत आती ही रहती हैं। अपने व्यक्तित्व निर्माण हेतु निरन्तर संघर्ष बना रहता है। ऐसा व्यक्ति कई प्रकार के काम करके छोड़ देता है। कोई भी काम में स्थाई रुचि नहीं रहती।

Scanned with CamScanner

श्रीमती सूर्यकान्ता काम (विधायक जोधपुर)

जन्म : 22.2.1934

समय : 2.12 A.M. (रात्रि)

स्थान : जोधपुर (राज.)

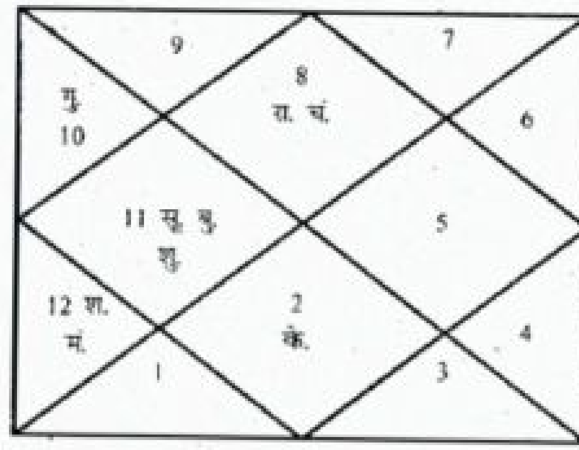

सारसंक्षेप-

जोधपुर शहर में अनेक बार विधायिका के रूप में निर्वाचित, अजेय राजनेता के रूप में प्रतिष्ठित श्रीमती सूर्यकान्ता का जन्म 'ज्येष्ठानक्षत्र' में होने से इनका जन्म नाम जेठी बाई है। जोधपुर में सभी लोग प्यार से इन्हें 'जीजी' के नाम से पुकारते हैं।

1. पंचमेश बृहस्पति नीच का होने से विद्यायोग शून्य, पंचम भाव में पापग्रह, एक पुत्र तीन पुत्रियां।
2. सप्तम भाव में केतु होने से 'वैध व्ययोग' बना। पति श्री उमाशंकर व्यास की मृत्यु 9.2006 को हुई।
3. अनन्तनामक पूर्ण कालसर्प योग आरोह अवस्था में होने से बार-बार जोधपुर शहर की प्रतिष्ठित सीट पर अच्छे मतों से विजयी होने के बावजूद, मंत्री पद या किसी महत्त्वपूर्ण राजनैतिक पद पर आरुढ़ नहीं हो पाईं।

तानाशाह हिटलर

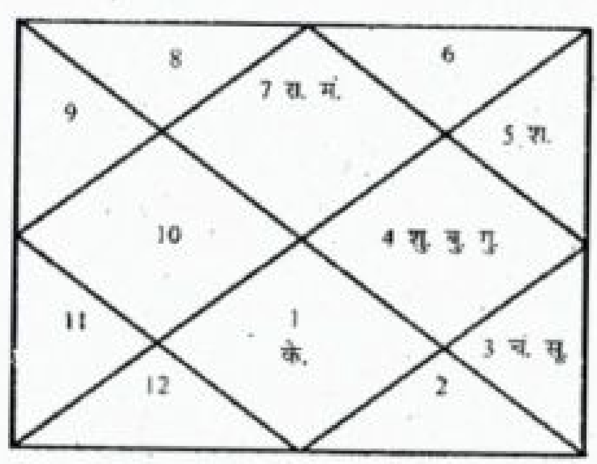

जन्म : 20.4.1889

समय : 18:30

स्थान : जर्मनी

हिटलर की मूल पराजय एवं अकाल मृत्यु का कारण भी कालसर्प योग रहा है। भयंकर संघर्ष के बाद भी अन्त तक कोई मंजिल प्राप्त नहीं हुई। मित्रों ने परिजनों ने धोखा दिया। वैवाहिक सुख, सन्तान सुख शून्य था।

2. कुलिक नामक कालसर्प योग

द्वितीय स्थान से अष्टम पर्यन्त पड़े ग्रह स्थिति के कारण 'कुलिक' नामक कालसर्प योग बनता है। इस योग के कारण धन को लेकर जातक के जीवन में संघर्ष रहता है। अपयश, परेशानियां तथा खर्च की बाहुल्यता रहती है। पैसा पास में टिकता नहीं। स्वास्थ्य में नरम-गरमी बनी रहती है। यह योग ज्यादा पीड़ादायक है। दिमाग गर्म रहता है, निरन्तर परेशानी के कारण व्यक्ति चिड़चिड़ा हो जाता है। धन-प्राप्ति हेतु किए गए प्रयासों में सफलता नहीं मिलती। व्यक्ति कुलीन होते हुए भी धन के मामले में संघर्षशील रहता है।

अभिनेत्री स्मिता पाटिल

जनम : 17.10.1955
समय : 18:45
स्थान : मुम्बई

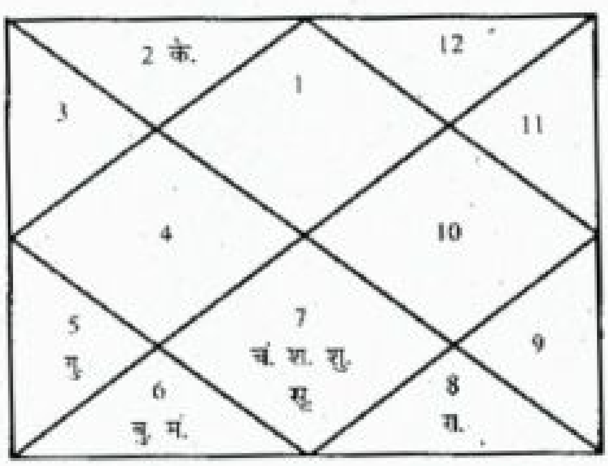

सारसंक्षेप-

सुन्दर देह दृष्टी कमनीय शरीर, उत्तम अभिनय प्रतिभा के कारण सर्वश्रेष्ठ फिल्म अभिनेत्री स्मिता पाटिल ने खूब नाम कमाया। कई फिल्म फेयर अवार्ड जीते। पर कुण्डली में सप्तम भाव बिगड़ा हुआ होने से तलाकशुदा पति से शादी की। संतान को लेकर कष्ट हुआ क्योंकि सूर्य नीच का पापपीड़ित था, राहु आठवें, मंगल छठे, शल्य चिकित्सा एवं प्रसव वेदना अल्पायु में मृत्यु का कारण बनी।

Scanned with CamScanner

हर्षद मेहता

जन्म : 24.7.1954   समय : 14:30   स्थान : अहमदाबाद

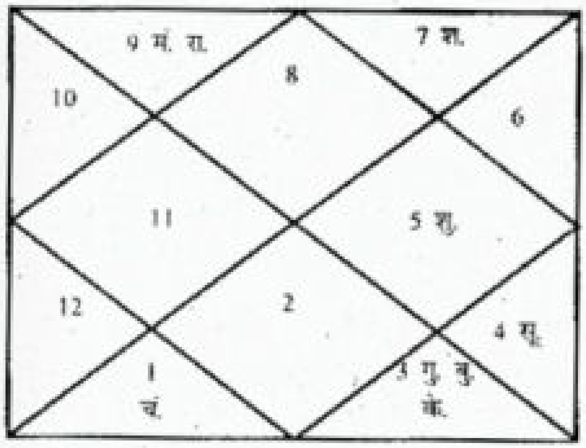

सारसंक्षेप-

सुप्रसिद्ध शेयर दलाल हर्षद मेहता की कुण्डली में शनि उच्च का, शुक्र केन्द्रवर्ती, बुध अष्टम स्थान में स्वगृही 'सरल नामक विपरीत राजयोग' बना रहा है। करोड़पति-अरबपति होते हुए भी धनाभावगत राहु ने धन के घड़े में छेद कर दिया। कुलिक नामक कालसर्प योग ने उन्हें दिवालिया घोषित कर दिया। अष्टम स्थान में बृहस्पति+बुध+केतु एवं छठे चन्द्रमा में 'बालारिष्टयोग' के कारण अकाल मृत्यु दी।

3. वासुकी नामक कालसर्प योग

तृतीय से नवम स्थान पर्यन्त वाली ग्रह-स्थिति के कारण 'वासुकी' नामक कालसर्प योग बनता है। इस योग के कारण जातक को कुटुम्ब, भाई-बहनों की ओर से परेशानी रहती है। मित्रों से धोखा मिलता है। नौकरी-धंधे में उलझनें बनी रहती हैं। भाग्य का पूर्ण सुख नहीं मिलता। धन कमाता है पर बदनामी साथ लगी रहती है। आत्मीय परिजनों के कारण कोई-न-कोई मुसीबत एवं मानसिक तनाव बना रहता है। किसी काम में यश नहीं मिलता। भागीदारी ज्यादा नहीं चल पाती। यश, पद-प्रतिष्ठा व पराक्रम के लिए संघर्ष बना रहता है।

लोकमान्य तिलक (महान् स्वतन्त्रता सेनानी)

जन्म : 23.7.1856
समय : 6:25 A.M.
स्थान : चिखली (गुजरात)

Scanned with CamScanner

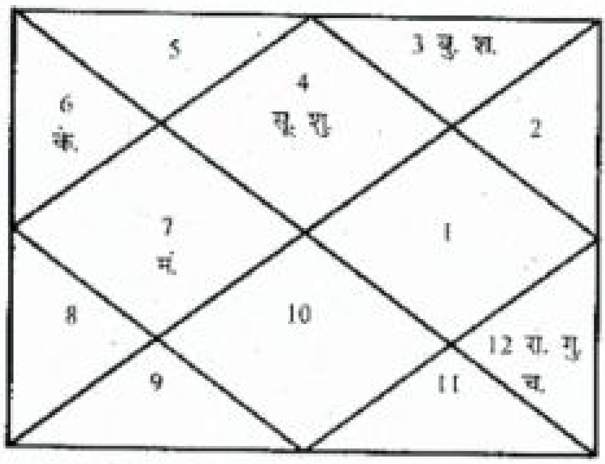

सारसंक्षेप-

विश्वप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान ज्योतिषी, तत्ववेत्ता, महान साहसी, निर्भीक वकील, लोकप्रिय कांग्रेसी नेता व स्वतन्त्रता सेनानी की कुण्डली में तृतीय भाव में कालसर्प योग होने के कारण इनका पराक्रम भंग हुआ। इन्हें जेल जाना पड़ा। इनकी पार्टी में ही इनका विरोध हुआ। जो पद व प्रतिष्ठा इनमें अपने जीवन में मिलना चाहिए था, उस ईमानदार पूर्वक किए गए परिश्रम का लाभ उन्हें नहीं मिला।

4. शंखपाल नामक कालसर्प योग

चतुर्थ से लेकर दशम स्थान पर्यन्त राहु+केतु के मध्य कैद ग्रह-स्थिति के कारण 'शंखपाल' नामक कालसर्प योग बनता है। इस योग के कारण सुख में बाधा, माता, वांहन, नौकर-चाकर को लेकर परेशानी रहेगी। पिता व पतिं की ओर से कष्ट, विद्याध्ययन में तकलीफ। व्यापार-व्यवसाय में नुकसान की सम्भावना बनी रहती है। अपने ही आदमी, जिस पर ज्यादा भरोसा है, विश्वासघात करेंगे। दिमागी परेशानी एवं तनाव की स्थिति रहेगी। कितना ही प्रयत्न कर लें पर सुख-प्राप्ति में निरन्तर बाधा व संघर्ष की स्थिति रहेगी।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

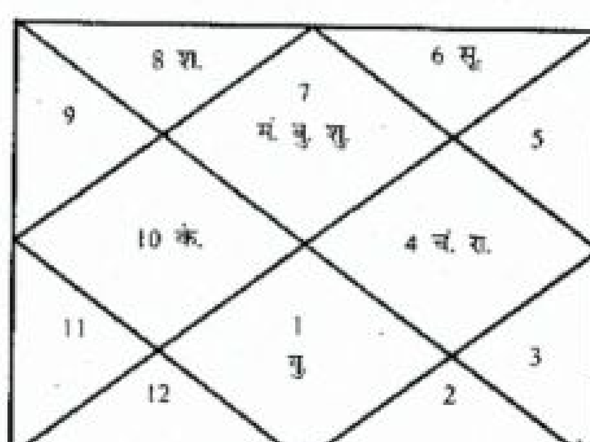

जन्म : 2.10.1869

समय : 8:25

स्थान : पोरबन्दर (गुजरात)

सारसंक्षेप-

1. आंशिक कालसर्प योग के कारण महात्मा गांधी जीवन भर तनाव में रहे। विवादास्पद रहे।

Scanned with CamScanner

2. चन्द्रमा के साथ राहु ने अकाल मृत्यु 1947 में दी।
3. लग्नेश का दूसरे, आठवें एवं बारहवें भाव में सम्बन्ध हो तो व्यक्ति जेल जरूर जाता है। वे अनेक बार जेल गए।
4. उन्हें राष्ट्रपिता की कीर्ति मृत्यु के बाद मिली। उसका कारण चारों केतु भरे हुए 'आसमुडात् योग' है।

नेपाल महाराजा श्री वीरेन्द्र विक्रम शाह

जन्म : 28.12.1945 समय : 12:00

स्थान : काठमाण्डू (नेपाल)

सारसंक्षेप-

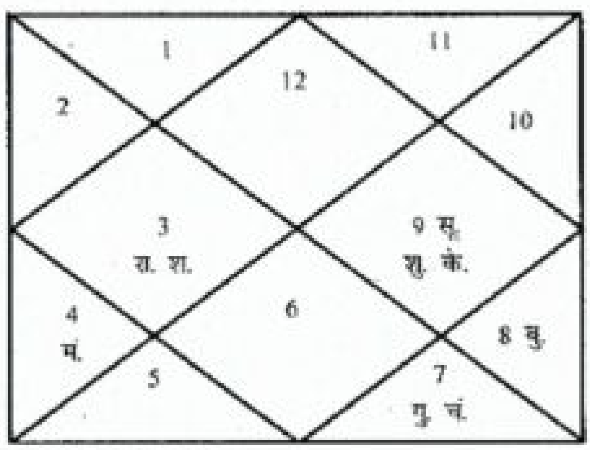

विष्णु का अवतार माने जाने वाले सूर्यवंशी महान् पराक्रमी महाराज की क्रूर हत्या उनके ही पुत्र ने गोली मारकर कर दी। पंचमेश चन्द्रमा अष्टम में होने के कारण ही पुत्र हत्या का कारण बना। 2. शंखपाल नामक पूर्ण कालसर्प योग आरोह अवस्था में होने से सारा सुख, राज-पाट लूट लिया गया।

5. पद्म नामक कालसर्प योग

पंचम स्थान से लेकर एकादश पर्यन्त ग्रह स्थिति के कारण 'पद्म' नामक कालसर्प योग बनता है। ऐसे जातक के विद्याध्ययन में रुकावट आती है। सन्तान पक्ष में रुकावट होती है। पुत्र सन्तान की चिन्ता रहती है। सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार की कुण्डली में भी यही योग है। गुप्त शत्रु बहुत रहते हैं। परिवार में अपयश, जीवनसाथी विश्वासपात्र नहीं मिलता, वंशवृद्धि की चिन्ता विशेष रहती है। लाभ प्राप्ति में रुकावट, निरन्तर चिन्ता व कष्ट के कारण जीवन संघर्षमय बना रहता है। जिस कार्य में हाथ डालो असफलता हाथ लगती है अथवा कार्य विवादास्पद हो जाता है।

Scanned with CamScanner

महान सम्राट अकबर

जन्म : 24.11.1542 समय : 12:30

स्थान : अमरकोट (पाकिस्तान)

सारसंक्षेप-

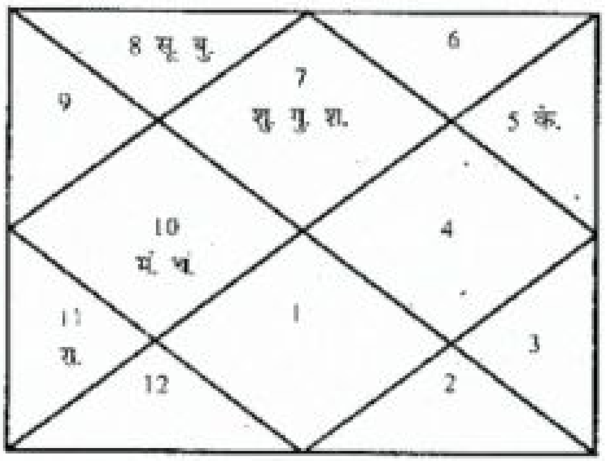

सम्राट अकबर ने अनेक विवाह किए परन्तु पंचमस्थ राहु ने सन्तान न होने दी। फलतः जातक ने अनेक धार्मिक अनुष्ठान किए। अकबर तपते रेगिस्तान में नंगे पांव दिल्ली में अजमेर गया, पुत्र के लिए दुआ मांगी। शिवलिंग की स्थापना की तब जाकर एक पुत्र हुआ-जहांगीर। जहांगीर भी कुपुत्र ही साबित हुआ।

महान अभिनेता दिलीप कुमार

जन्म : 11.12.1922

समय : 16:00

स्थान : पेशावर (पाकिस्तान).

सारसंक्षेप-

हिन्दी सिनेमा के महानायक 'ट्रेजेडी किंग' के नाम से विख्यात अभिनेता

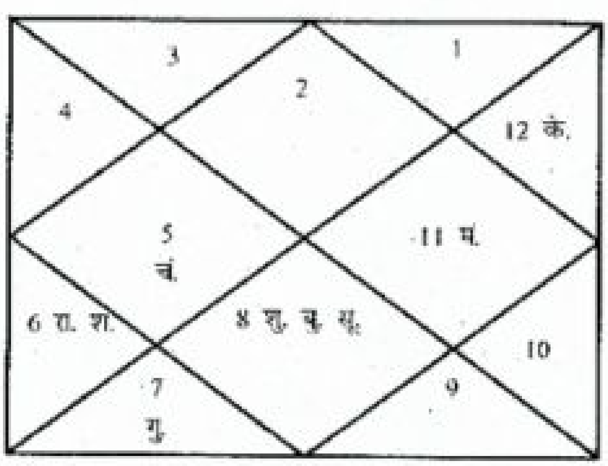

Scanned with CamScanner

दिलीप कुमार ने भी अनेक विवाह किए। परन्तु पंचमस्थ राहु ने पुत्र सन्तति नहीं होने दी। उनकी करोड़ों की सम्पत्ति का कोई वारिस नहीं है।

पं. जवाहरलाल नेहरू

जन्म : 10.11.1888 समय : 11:14 स्थान : इलाहाबाद

सारसंक्षेप-

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. जवाहरलाल नेहरू के कुण्डली में सीधा *

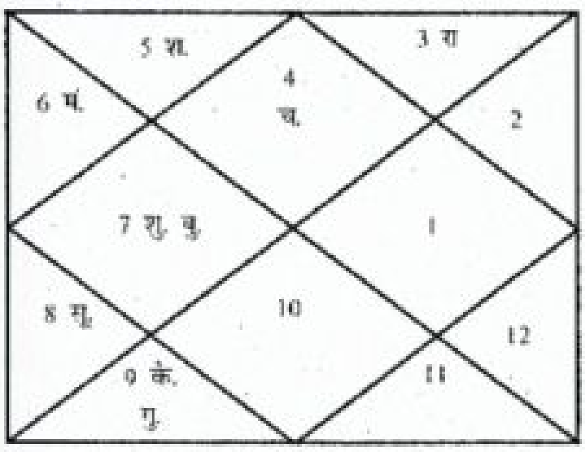

नामक कालसर्प योग नहीं है परन्तु लोग कालसर्प योग के सन्दर्भ में इनकी कुण्डली का उदाहरण देते हैं। इसलिए प्रसंगवश यहां जिक्र किया जा रहा है। यहां पंचमेश मंगल पराक्रम में होने से सन्तति पराक्रमी हुई परन्तु कालसर्प योग ने अनेक प्रयत्न के बावजूद पुत्र सन्तति न होने दी। जवाहरलाल नेहरू ने उज्जैन के महाकाल में कालसर्प शान्ति व अनेक बार रुद्राभिषेक कराया तब इन्दिरा गांधी जैसी तेजस्वी कन्या रत्न की प्राप्ति हुई।

श्री वाई.वी. चौहान (पूर्व गृहमन्त्री) भारत सरकार

कुण्डली में भी कालसर्प योग था जिससे उनको भी पुत्र संतान की प्राप्ति नहीं हुई।

इसी सन्दर्भ में अभिनेता सलमान खान एवं बंगारु लक्ष्मण की कुण्डलियां भी विशेष रूप से दृष्टव्य हैं।

Scanned with CamScanner

6. महापद्म नामक कालसर्प योग

षष्टम स्थान से व्यय स्थान तक के ग्रहों की स्थिति के कारण 'महापद्म' नामक कालसर्प योग बनता है। इस योग के कारण व्यक्ति रोगी रहता है। यात्राएं बहुत करता है पर सफलता मिलती नहीं। जातक का स्वयं का चरित्र संदेहास्पद रहता है। आत्मबल कमजोर रहता है तथा नैराश्य की भावना विशेष बनी रहती है। चाहे कितना इलाज कराए, बीमारी ठीक नहीं होती। कार्य में स्थिरता नहीं रहती। गुप्त शत्रु सदा परेशान करते रहेंगे। कार्य में बाधा एवं निरन्तर संघर्ष के कारण जीवन कष्टमय रहेगा।

विश्व कोकिला लता मंगेशकर

जन्म : 28.9.1929 समय : 23:00 स्थान मुम्बई

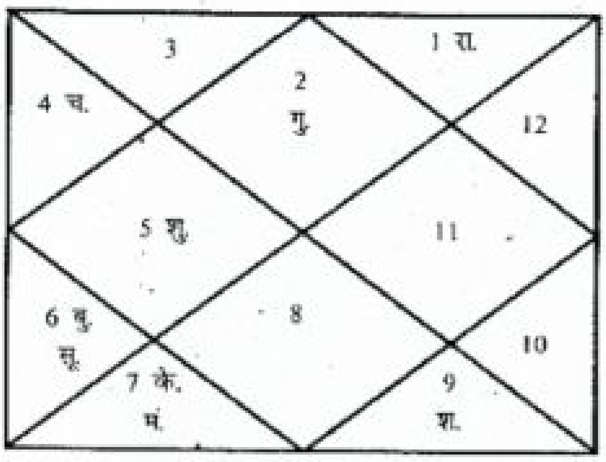

सारसंक्षेप

स्वर-साम्राज्ञी, विश्व कोकिला की कुण्डली में मंगल छठे, आठवें शनि, बारहवें राहु कुण्डली को निर्बल मांगलिक बना रहा है। यहां कालसर्प योग विवाह एवं संतान दोनों सुख में बाधक तत्त्व रहा। वही कण्ठस्थान में स्वगृही चन्द्रमा में उन्हें अमृतवाणी युक्त कण्ठ दिया।

श्री सत्य सांई बाबा

जन्म : 23.11.1926
समय : 6:00 A.M.
स्थान : पुट्टपरथी

Scanned with CamScanner

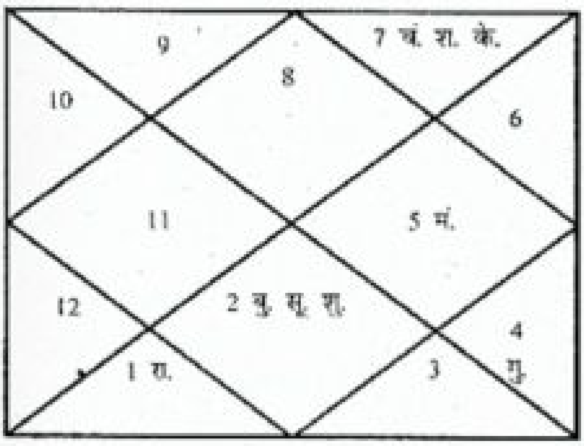

सारसंक्षेप

शिरडी साईं बाबा के पुनः अवतार के रूप में प्रसारित सत्य साईं बाबा की कुण्डली में छठे राहु, सातवें सूर्य, बारहवें शनि होने में निर्बल मांगलिक है। इनके भी विवाह व संतति बाधक कालसर्प योग ही है।

प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो

जन्म : 5.1.1928 समय : 5:30 A.M. स्थान : लरकाना (पाकिस्तान)

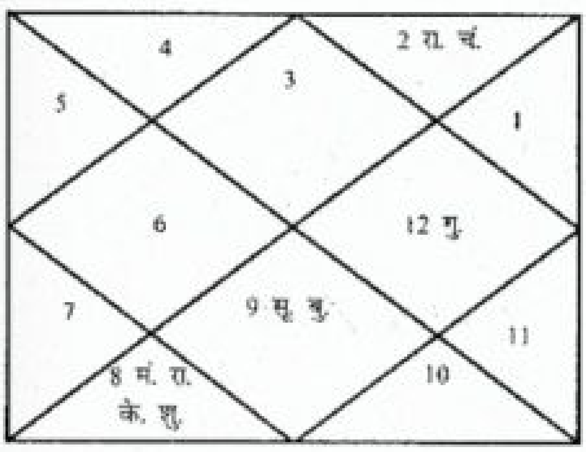

सारसंक्षेप

छठे स्थान में चतुष्ग्रह युति, बारहवें राहु+चन्द्र ने अकाल मृत्यु दी। कालसर्प योग के कारण झूठे आक्षेप में फंसे, मृत्युदण्ड मिला। जीवन भर संघर्ष, बाधा, मानसिक परेशानी रही। संतान सुख भी नगण्य रहा।

प्रधानमंत्री मुसलोनी

जन्म : 20.7.1883

समय : 15:00

स्थान : इटली

Scanned with CamScanner

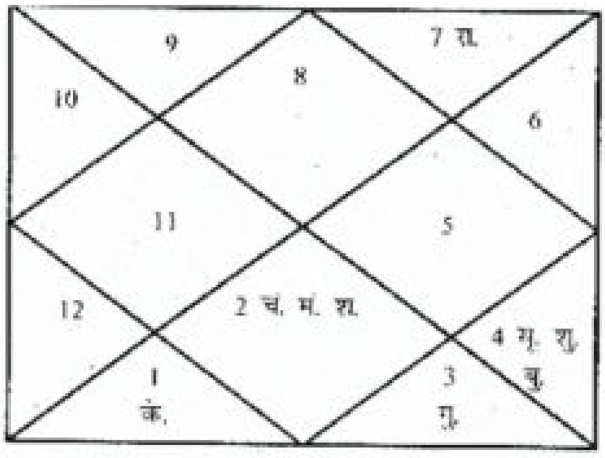

सारसंक्षेप

इटली के फासिस्ट शासक प्रबल राजनेता मुसलोनी की कुण्डली निर्बल मांगलिक है। बारहवें राहु, सातवें मंगल, शनि एवं बुध आठवें ने उन्हें अकाल मृत्यु दी। विवाह सुख, संतान सुख शून्यवत रहा।

7. तक्षक नामक कालसर्प योग

सप्तम स्थान से लग्न (प्रथम भाव) तक राहु केतु के बीच फंसे ग्रहों के कारण 'तक्षक' नामक कालसर्प योग बनता है। ऐसे व्यक्ति का वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण रहता है। जीवन साथी से बिछोह। प्रेम प्रसंग में असफलता मिलती है। बनते कार्यों से धोखा होने की संभावना अधिक रहती है। किसी-न-किसी कारण से मानसिक परेशानी व चिन्ता पीछा नहीं छोड़ती। ऐसे व्यक्ति को जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिए तभी गृहस्थ जीवन सुखी होगा।

डिम्पल कपाड़िया (फिल्म अभिनेत्री)

जन्म : 8.6.1957 समय : 2:48 स्थान : मुम्बई

Scanned with CamScanner

सारसंक्षेप

सुपर स्टार राजेश खन्ना की पूर्व पत्नी डिम्पल अपने जमाने की मशहूर फिल्म अभिनेत्री व हीरोइन रही। सप्तमस्थ राहु ने इनका गृहस्थ जीवन बिगाड़ा। अष्टमस्थ शनि ने भी मंगलवत् काम किया।

आचार्य श्रीराम शर्मा (संस्थापक गायत्री शक्ति पीठ)

जन्म : 20.9.1911 समय : 9:30 प्रात:

स्थान : आवल खेड़ा (आगरा)

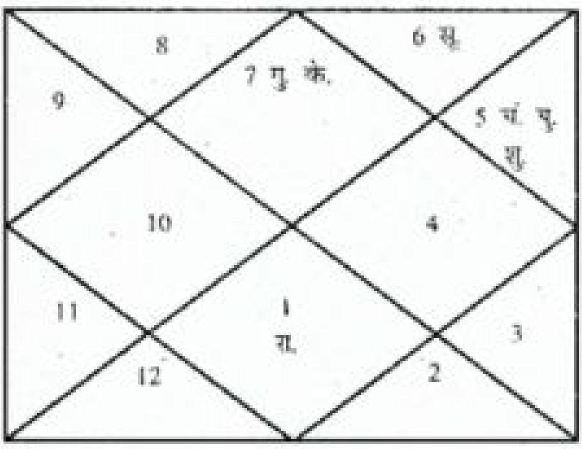

सारसंक्षेप

1. सप्तम में राहु शनि, अष्टम में मंगल निर्बल मांगलिक कुण्डली। 2. तक्षक नामक कालसर्प योग के कारण पत्नी को वैधक योग। 3. स्वयं को पुत्र संतति का अभाव रहा। 4. पुत्री ने अंतर्जातीय विवाह किया।

मार्टिन लूथर (नीग्रो राजा)

जन्म : 15.1.1929 समय : 14:30 स्थान : अमेरिका

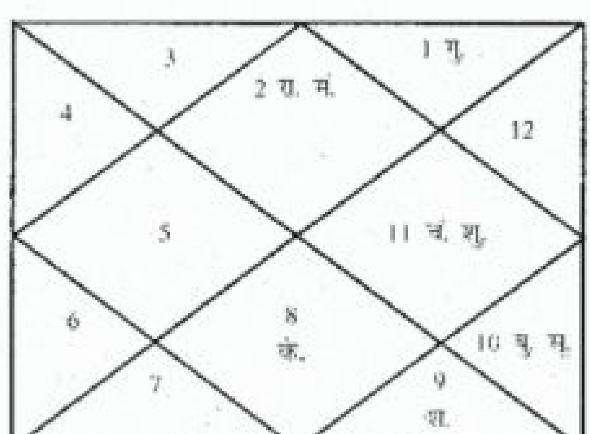

Scanned with CamScanner

सारसंक्षेप

1. लग्न में मंगल+राहु, आठवें शनि होने से निबल मांगलिक कुण्डली है। वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण रहा। कालसर्प योग के कारण 4.4.1964 को इनकी गोली मारकर हत्या कर दी गई।

खलील जिब्रान

जन्म : 6.1.1883   समय : 13:00

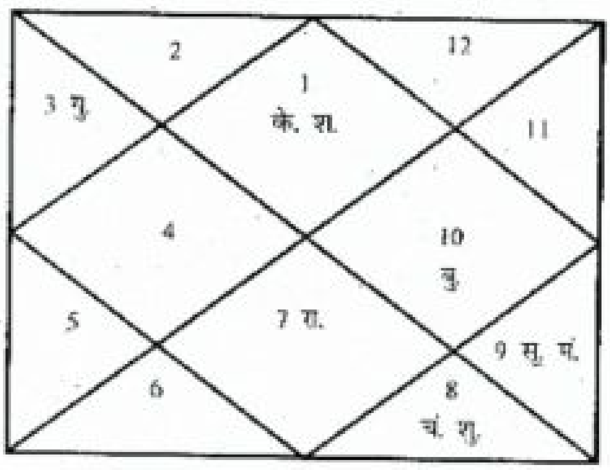

सारसंक्षेप

लेबनान के महान कवि, चित्रकार, दार्शनिक साहित्य सेवी व सिद्धहस्थ विद्वान ने खूब कीर्ति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अर्जित की, परन्तु सप्तमस्थ राहु, अष्टमेश शुक्र खड्डे में होने से जीवन भर अविवाहित रहे।

8. कर्कोटक नामक कालसर्प योग

अष्टम स्थान से लेकर धनस्थान (द्वितीय भाव) तक पड़ने वाली ग्रह-स्थिति के कारण 'कर्कोटक' नामक कालसर्प योग बनता है। इस योग के कारण जातक को अल्प आयु, दुर्घटना का भय रहता है। स्वास्थ्य की चिन्ता बनी रहती है। बात-बात पर धनहानि तथा उधार दिया हुआ पैसा डूब जाता है। शत्रु बहुत होते हैं। वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता। वाणी दूषित रहती है। परिश्रम बहुत करते हैं पर उसका फल मिलता नहीं कुटुम्ब में अपयश एवं आत्मीय परिजनों में सम्मान नहीं मिलता।

Scanned with CamScanner

भक्त शिरोमणि मीराबाई

जन्म : 12.7.1504 समय : 5:30 प्रात:

स्थान : बजोढी (मेडता) राज.

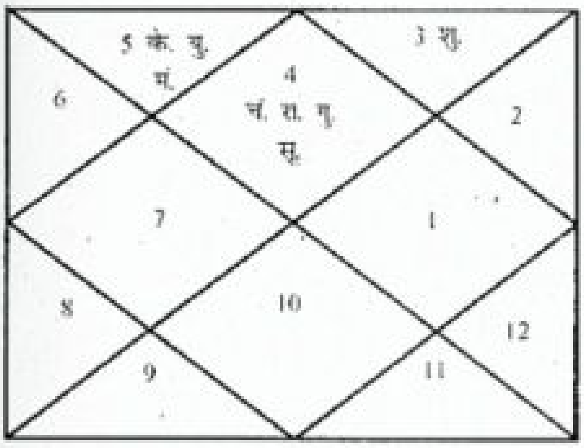

सारसंक्षेप

यह कुण्डली निर्बल मांगलिक है। फलत: पति व संतान सुख दोनों नहीं मिले। कुटुम्ब व परिजनों से यश नहीं मिला।

स्टार *

जन्म : 24.12.1959 समय : 12:00

स्थान : चैम्बर (मुम्बई)

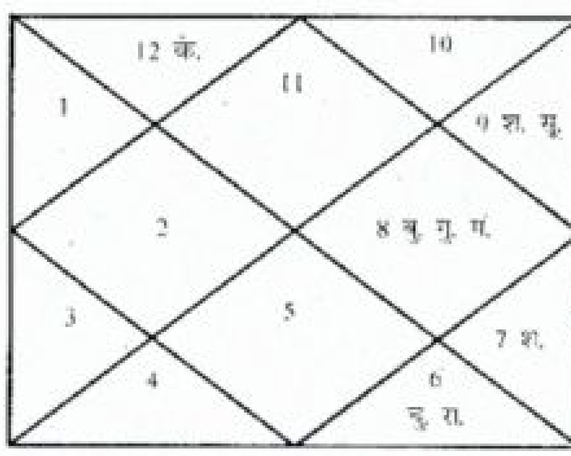

सारसंक्षेप

इनकी कुण्डली में जहां अनेक शुभयोग हैं वहीं कर्कोटक नामक कालसर्प योग, अष्टम में चन्द्र राहु, अचानक दुर्घटना व गुप्त शत्रुओं का खतरा बताता है जिसके प्रति जातक को सावधान रहना चाहिए।

Scanned with CamScanner

9. शंखचूड़ नामक कालसर्प योग

नवम स्थान से तृतीय स्थान पर्यन्त पड़ने वाली ग्रह स्थिति के कारण 'शंखचूड़' नामक कालसर्प योग बनता है। इसके कारण भाग्योदय में परेशानी, नौकरी व आगे बढ़ने में रुकावटें। मित्रों द्वारा कपट-व्यवहार, व्यापार में घाटा, राज्यच्युत, नौकरी में अवनति का भय बना रहता है। अदालत से दण्ड की स्थिति बन सकती है। बहनोई या मामा पक्ष से कपट व्यवहार होगा। कोई-न-कोई चिन्ता एवं परेशानी शरीर को लगी रहेगी। जातक कई प्रकार के धन्धे करता है पर स्थाई सफलता सदैव संदिग्ध रहती है। फूटे घड़े में जिस प्रकार से पानी नहीं रहता उसी प्रकार से भाग्योदय हेतु किए गए प्रयत्नों में सफलता नहीं मिलती।

1. नीलेश मेहता
जन्म : 18-12-1968
समय : 10:39 (बम्बई)
अनुदित कालसर्प योग

2. श्री जगदीशचंद्र D.Y.S.P.
जन्म : 17-9-1945
समय : 11:27:57 (हैदराबाद)
उदित कालसर्प योग

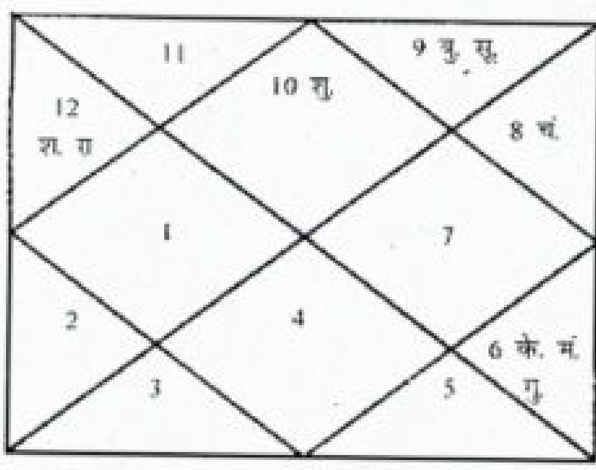

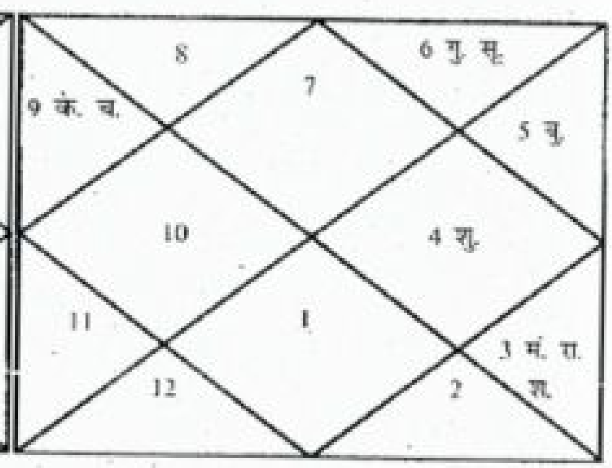

10. घातक नामक कालसर्प योग

दशम स्थान से चतुर्थ स्थान पर्यन्त ग्रसित ग्रहों के कारण 'घातक' नामक कालसर्प योग की सृष्टि होती है। इस योग के कारण व्यापार में घाटा, भागीदारी में मनमुटाव, सरकारी अधिकारियों से अनबन तथा सुख प्राप्ति के लिए भारी संघर्ष करना पड़ता है। परिवार में विग्रह रहता है। निरन्तर चिन्ता व परेशानी के कारण व्यक्ति का व्यावसायिक एवं गृहस्थ जीवन कष्टमय रहता है।

Scanned with CamScanner

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

जन्म : 25.12.1924 समय : 4:00 A.M.

स्थान : ग्वालियर

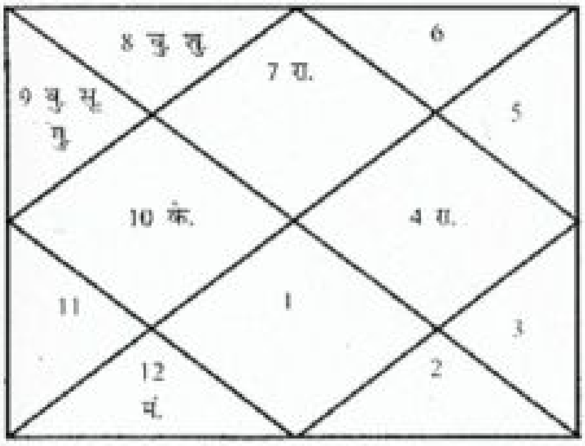

सारसंक्षेप

1. सप्तमेश मंगल छठे होने से वे जीवनभर अविवाहित रहे। शनि ने भी कुण्डली को मांगलिक बनाया। 2. घातक नामक कालसर्प योग के कारण सर्वोच्च सत्ता प्राप्त करके भी नीचे गिरते हैं।

श्री राजेन्द्र गहलोत

जन्म : 8.11.1946 समय : 3:00 A.M.

स्थान : जोधपुर (राज.)

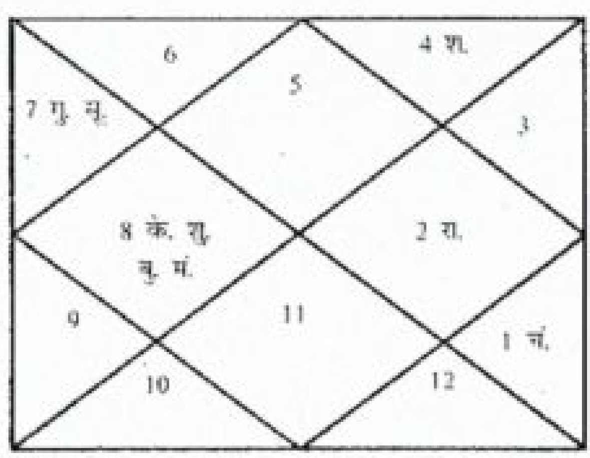

सारसंक्षेप

दो बार विधायक रहे राजेन्द्र गहलोत कालसर्प योग शान्ति कराने पर दस दिन में मंत्री बने। पुनः अब नगसुधार ग्राम के अध्यक्ष बने। उतार-चढ़ाव उनके जीवन में इस योग के कारण सदैव बना रहा।

Scanned with CamScanner

11. विषधर नामक कालसर्प योग

एकादश स्थान से पंचम स्थान पर्यन्त राहु/केतु के मध्य होने वाली ग्रहस्थिति से 'विषधर' नामक कालसर्प योग की निष्पत्ति होती है। इस योग के कारण ज्ञानार्जन में दुविधा होती है। उच्चशिक्षा में बाधा, स्मरण-शक्ति का ह्रास होता है। दादा-दादी, नाना-नानी से पूर्ण लाभ की आशा होते हुए भी हानि होती है। काका व चचेरे भाइयों से झगड़ा रहता है। सन्तान बीमार रहती है। लाभ में भयंकर बाधा रहती है। व्यक्ति चिन्तातुर रहता है तथा धन के मामले को लेकर बदनामी या संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। परिवार में विग्रह रहता है। सर्वत्र लाभ दिखलाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रुपयों की तरह हाथ नहीं लगता।

राजकुमार नीराजन (नेपाल)

जन्म : 6.11.1978   समय : 8:00 प्रात: स्थान : काठमाण्डू

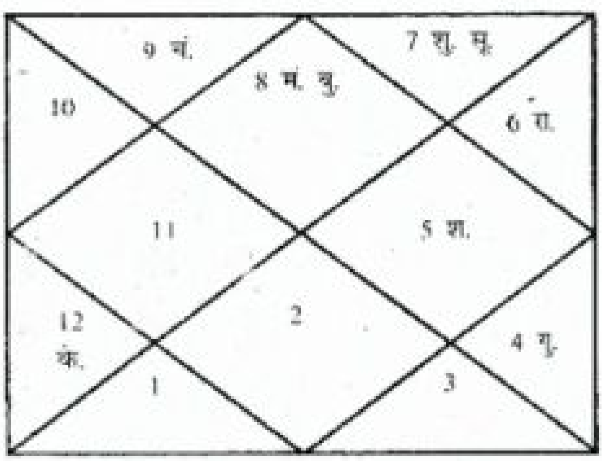

सारसंक्षेप

राजकुमार नीराजन की अकाल मृत्यु राहु की महादशा में 22 वर्ष की अवस्था में 2.6.2001 को हो गई।

12. शेषनाग नामक कालसर्प योग

द्वादश स्थान में षष्ठ स्थान पर्यन्त पड़ने वाले ग्रह योग के कारण 'शेषनाग' नामक कालसर्प योग की सृष्टि होती है। इस योग के कारण जन्म-स्थान व देश से दूरी, सदैव संघर्षशील स्थिति, नेत्रपीड़ा, निद्रा न आना तथा अन्तिम जीवन रहस्यपूर्ण बना रहता है। ऐसे जातक के गुप्त शत्रु बहुत होते हैं परन्तु ऐसे जातक को मृत्यु के उपरान्त ही ख्याति मिलती है। निराशा अधिक रहती है। मनचाहा

Scanned with CamScanner

काम पूरा नहीं होता। यदि कार्य होता है तो बहुत देरी से होता है। मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल-दिमाग परेशान रहता है। धन की भारी चिन्ता एवं कर्जा उतारने हेतु किए गए प्रयासों में सफलता नहीं मिलती है।

अमृता प्रीतम (साहित्यकार)

जन्म : 31.8.1919 समय : 1:30 A.M.

स्थान : गुजरावाला

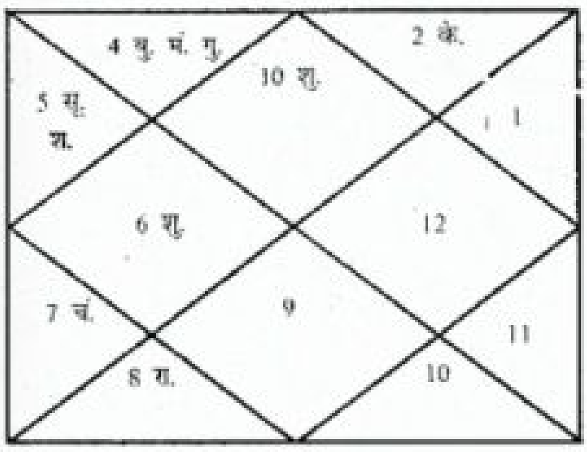

सारसंक्षेप

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता अमृता प्रीतम का गृहस्थ जीवन विवादित व कलहपूर्ण रहा। कालसर्प योग के कारण सन्तति सुख शून्य रहा है। आर्थिक विषमताएं जीवन पर्यन्त बनी रहीं।

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग निवृत्ति के उपाय

1. किसी विद्वान् वेदपाठी ब्राह्मण से इस पुस्तक में वर्णित विधि करावें। इससे अवश्य लाभ होता है तथा पूर्वजन्मकृत दोष मिट जाते हैं। यदि पूर्व जन्मकृत दोष अति उग्र हैं तो यह विधि दो-तीन बार करानी चाहिए।
2. यदि किसी स्त्री की कुण्डली इस योग से दूषित है तथा उसको सन्तति का अभाव है, विधि नहीं करा सकती हो तो किसी अश्वत्थ (वट) के वृक्ष से नित्य 108 प्रदक्षिणा (घेरे) लगानी चाहिए। तीन सौ दिन में जब 28,000 प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर, स्वत: ही सन्तति की प्राप्ति होगी।
3. शिव-उपासना एवं निरन्तर रुद्रसूक्त से अभिमन्त्रित जल से स्नान करने पर यह योग शिथिल हो जाता है। संकल्पपूर्वक लघुरुद्र करावे।
4. किसी शिवलिंग में चढ़ने योग्य तांबे का बड़ा सर्प लावें। उसे प्राण प्रतिष्ठित कर, ब्रह्ममुहूर्त में जब कोई न देखे, शिवालय पर छोड़ आवें तथा चांदी से निर्मित एक सर्प-सर्पिणी के जोड़े को बहते पानी में छोड़ दें। इससे भी कालसर्प योग की चमत्कारिक ढंग से शान्ति हो जाती है तथा जातक को लाभ होने लगता है। यह प्रयोग अनेक बार अनुभूत है।
5. पलाश के पुष्प गोमूत्र में कूट कर छांव में सुखावें। उसका चूर्ण बनाकर नित्य स्नान की बाल्टी में यह चूर्ण डाले। इस प्रकार 72 बुधवार (डेढ़ वर्ष) तक स्नान करने से कालसर्प योग नष्ट हो जाता है। कुछ विद्वानों का मत है कि यदि 72,000 राहु के जाप-ॐ रां राहवे नम: से किए जाएं तो भी कालसर्प योग शान्त हो जाता है।
6. प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र-जप कर किसी भीक्षा मांगने वाले को दे दें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार तक करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

Scanned with CamScanner

7. कालसर्प योग की विशिष्ट अंगूठी प्राण प्रतिष्ठित करके, बुधवार के दिन सूर्योदय के समय कनिष्ठिका अंगुली में धारण करनी चाहिए। जिस दिन धारण करे, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान करना चाहिए। इससे भी चमत्कारी ढंग से लाभ होता है। यह टोटका अनेक बार परीक्षित किया हुआ है।
8. नागपंगचमी का व्रत करें। नवनाग स्तोत्र का पाठ करें।
9. जातक के शत्रु अधिक हों या कार्य में निरंतर बाधा आती हो तो जिस वैदिक मन्त्र से जल में सर्प छोड़ते हैं। उसको नित्य तीन बार स्नान, पूजापाठ करने के बाद पढ़ें। भगवान शंकर की कृपा से उसके सारे शत्रु शीघ्र नष्ट हो जाएंगे। यह मन्त्र अमोघ व अनुभूत है पर इसका प्रयोग गुरु की आज्ञा लेकर ही करना चाहिए।

द्वादशलिंगतोभद्र

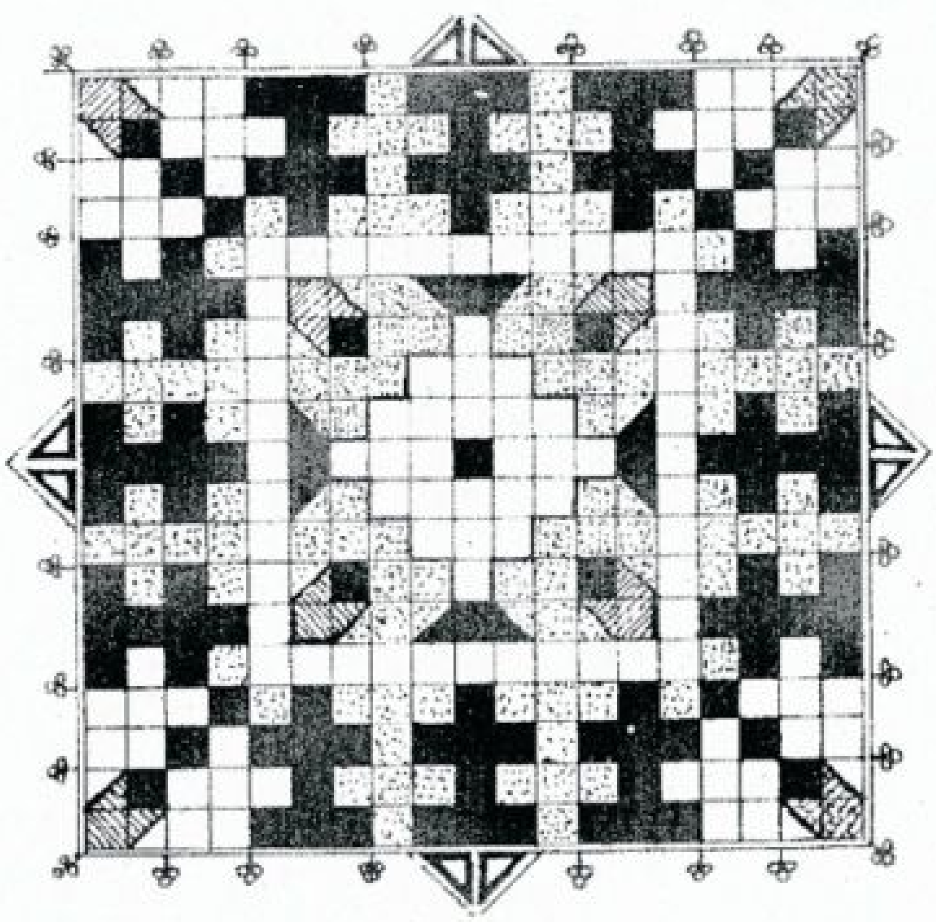

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग की सामग्री

कंकु	कलश तांबे के 5 या 7 या 11
मौली	लालवस्त्र 1 मीटर
अबीर	सफेद वस्त्र 1 मीटर
गुलाल	देह शुद्धि हेतु
केसर	अबोट (पवित्र) वस्त्रों का जोड़ा
चन्दन	जिसे पहन कर पूजा करनी है और
सिन्दूर	अभिषेक के बाद दान करना
हल्दी	कम्बल-1, धोती
कालारंग	सोने का सर्प या तार
कपूर	चांदी का सर्प या तार
नारियल	5 या 7 या 11
पान 50	कांसे का सर्प या तार
सुपारी 1 किलो	धोती 1
पंचमेवा	साबुत मूंग (1 किलो)
बादाम	ज्वार (1 किलो)
पिस्ता	अष्टगन्ध
काजू	मालिपन्ना
दाख	कोडियां-12
अखरोट	ऋतु फल (विविध प्रकार के)
मिश्री	गणपति मूर्ति
यज्ञोपवीत 11	पीताम्बर 1
इलायची	पंचगव्य
लौंग	पंचरत्न
गुड़ (1 किलो)	
पंचपल्लव	मिट्टी चारास्ता
घृत 1 किलो	गंगाजल
अंगोछा 1	रेणुका

Scanned with CamScanner

पूर्णपात्र 5	प्रसाद (मावा)
पंचपात्र सेट 1	चांदी का सर्प-सर्पिणी जोड़ा
चावल (सवा किलो)	ताम्बे का बड़ा सर्प
गेहूँ (सवा किलो)	नागपाश यन्त्र
उड़द साबुत (सवा किलो)	पुष्प (छूटे)
तिल (आधा किलो)	पुष्पहार 4
जव (पाव किलो)	दर्भ
होमपुड़ा 1	बिल्वपत्र
चन्दन चूरा	यज्ञ समिधाएं
अगर	आकड़ा, पलाश, पीपल, अशोक
तगर	अश्वत्थ, खेजड़ी, बिच्छूझाड़ा,
धूप बत्तीसा, धूप गुग्गुल	दुर्वा आरणियां छाणा
कमलगट्टा	रूई, माचिस
दूध	अगरबत्ती बन्डल
दही	राहु की मूर्ति
शहद	केतु की मूर्ति
खारक 21	लकड़ी के बाजोट 2
आसन-1	पूजन थाली 1
मिट्टी सर्प के बाँबी की	द्रव्य (छूटी रेजगारी, दक्षिणा)
मिट्टी राजद्वार की	नागपाश यन्त्र
	कालसर्प अंगूठी

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग की निवृत्ति हेतु मुहूर्त विचार

1. सात वारों में शनि, रवि, मंगल को छोड़कर सभी वार कालसर्प निवृत्ति हेतु शुभ माने गए हैं। इनमें बुधवार सबसे श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि 'राहुदोषं बुधोहन्यात्' सूत्र के अनुसार बुधवार इस कार्य हेतु उत्तम माना गया है।
2. तिथियों में पड़वा, पंचमी, सप्तमी, नवमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या इस कार्य हेतु शुभ मानी गई हैं। भद्रा, वैधृत, क्षयतिथि, वृद्धितिथि, अधिक मास, क्षयमास त्याज्य है।
3. नक्षत्रों में धनिष्ठा युक्त द्विपुष्कर योग त्याज्य है। पंचक, त्रिपाद, नक्षत्र वर्ज्य है। परन्तु 1. अश्विनी, 2. आर्द्रा, 3. स्वाति, 4. आश्लेषा, 5. पुष्य, 6. मेघा, 7. मूला, 8. ज्येष्ठा, 9. शतभिषा, 10. अश्विनी नक्षत्र विशेष रूप से ग्राह्य है।
4. सूर्य, चन्द्र-ग्रहण में इस योग की निवृत्ति होती है।
5. जिस दिन गोचर में वापस 'कालसर्प योग' बनता हो। राहु जिस नक्षत्र में हो, वह दिन श्रेष्ठ है। नवरात्रि श्रेष्ठ है। आश्लेषा युक्त नवमी सर्वश्रेष्ठ है।
6. बुधवारी अमावस्या आश्लेषा युक्त हो तो सर्वश्रेष्ठ है।
7. अमावस्या को आश्लेषा, शतभिषा आर्द्रा, स्वाति या उपर्युक्त नक्षत्र हो, तो उत्तम, नागपंचमी हो तो सर्वश्रेष्ठ।
8. शुक्लपक्ष में चन्द्रबल एवं कृष्णपक्ष में ताराबल अवश्य देखना चाहिए। यजमान के घात चन्द्रमा पर जरूर विचार करें।
9. प्रतिवर्ष कालसर्प योग के विशिष्ट मुहूर्त हमारे 'श्रीचण्डमार्तण्डपंचाग' में विशेष रूप से दिए रहते हैं उसे देखना न भूलें।

विशिष्ट निर्देश

घर में मंगल कार्य होने के बाद एक वर्ष तक नागबलि, कालसर्प योग शान्ति न करें। पत्नी गर्भवती हो तो पांच माह तक यह कार्य कर सकते हैं, उसके बाद नहीं।

Scanned with CamScanner

इसके अतिरिक्त घर में यदि बहुत सारे उपद्रव हो रहे हों, सामूहिक संकल्प हो, अचानक तीर्थप्रसंग हो, स्वास्थ्य ठीक न हो, अशुभ स्वप्न दिखा हो, मृत्यु का भय हो, अशुभ की आशंका हो तो ऐसे में मुहूर्त करने की आवश्यकता नहीं है।

Scanned with CamScanner

कालसर्प शान्ति

(1) यन्नक्षत्र गतो राहुर्ग्रसते शशि भास्करौ।
तज्जातानां भवेत् पीडा ये च स्युः शान्तिवर्जिता:।।

-पृथ्वीचन्द्रोदय, विष्णुधर्मेपि च

(2) यस्य राजस्य नक्षत्रे, स्वर्भानु रूपरज्यते।
राज्यभंग सुहृन्नाशं, मरणं चात्र निर्दिशेत्।।

-अद्भुत सागरे भार्गव:

(3) सौवर्ण कारयेन्नागं, पलेनाथ पलार्धत:।
तदर्धेन तदर्धेन फणायां, मौक्तिकं न्यसेत्।।
ताम्रपात्रे निधायाथ, धृतपूर्णे विशेषत:।
कास्ये वा कान्ति लोहे वा, न्यस्य दद्यात्संदिक्षणाम्।
चन्द्रग्रहे तु रुप्यस्य, बिम्बं दद्यात्सदक्षिणाम्।।

-दीपिकायां ज्योति: सागरे

(4) सुवर्ण निर्मितं नागं, सतिलं कांस्य भाजनम्।
सदक्षिणं सवस्त्रं च ब्राह्मणाय निवेदयेत्।
सौवर्ण रजतं वापि, बिम्बं कृत्वा स्वशक्तित:।
उपराग भवक्लेशाच्छिदे विप्राय कल्पयेत्।।

-कालविवेक

(5) प्रधान पीठ पर स्थापित कलश में क्षेपणीय सामग्री-
रोचनं पद्मकं शंखं, कुंकुमं रक्तचन्दनम्
शान्ति स्फटिक तीर्थाम्बु, सित सर्षप गुग्गुलम्।
मधूकं देवदारू च, विष्णुकान्तां शतावरीम्
रत्नां च सहदेवीं च, निशाद्वितयमेव च।
गजदन्तं कुंकुमं, च तथैवोशीर चन्दनम्।
एतत् सर्व विनिक्षिप्य, कुम्भेष्वावह्येत्सुरान्।।1।।

(6) होमद्रव्याणि (शारदा तिलोक्त)-
बिल्व पलाश खदिर परं च तिलसर्षपै:
दुग्धं दधी पुनर्दूर्वा होमे तानि विदुर्बुधा:।।2।।

Scanned with CamScanner

गंगापूजन

प्रात:काल सूर्योदय के कुछ पहले समुद्र, नदी, तालाब या कुएं के किनारे, स्नानोपरान्त पहनने योग्य पवित्र वस्त्रों को लेकर जावे। पूर्व दिशा की ओर मुंह करके सबसे पहले किनारे की भूमि को इस मन्त्र से स्पर्श करें।

अथ भूमिस्पर्श–

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

तत्पश्चात् कंकु, अक्षत, पुष्प, श्रीफल से तीर्थजल का पूजन करें। तीर्थजल को हाथ में लेकर मानसिक संकल्प करें।

त्रिविधतापदोषशमनार्थं श्रीपरमेश्वरगौरीशंकरप्रीत्यर्थम् प्रात: स्नानमहं करिष्ये।

इसके साथ ही स्नान करें। सूर्य को गायत्रीमन्त्रपूर्वक अर्घ्य दे। स्नान करते समय सभी तीर्थों का आह्वान करते हुए निम्न मन्त्रों को स्वयं पढ़े अथवा तीर्थपुरोहित पढ़े।

अथ तीर्थ प्रार्थना–

पुष्कराद्यानि तीर्थानि, गंगाद्या सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि, स्ननकाले सदा मम॥1॥

नमामि गंगे तव पादपंकजं,
सुरासुरैर्वन्दित दिव्यरूपम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यम्,
भवानुसारेण सदानराणाम्॥2॥

गंगा गंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥3॥

Scanned with CamScanner

सुरधुनि मुनिकन्ये तारये पुण्यवन्तं।
स तरति निजपुण्यैस्तत्र किं ते महत्त्वम्॥4॥

यदि च गतिविहीनं पापिनं तारये माम्।
तदपि च तव मातर्यन्महत्त्वं महत्त्वम्॥5॥

नन्दिनी नलिनी सीता, मालती च मलापहा।
विष्णुपादाब्जसम्भूता, गंगा त्रिपथगामिनी॥6॥

भागीरथी भोगवती, जाह्नवी त्रिदशेश्वरी।
द्वादशैतानि नामानि, स्नानकाले सदा स्मरेत्॥7॥

आपो नारा रति प्रोक्ताः ता एवास्यायनं पुनः।
तस्मान्नारायणं देवं, स्नानकाले स्मराम्यहम्॥8॥

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं, तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूतदया तीर्थं, सर्वत्रार्जवमेव च॥9॥

दानं तीर्थं दमस्तीर्थं, सन्तोषस्तीर्थमुच्यते।
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थं च प्रियवादिता॥10॥

ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं, पुण्यतीर्थमुदाहृतम्।
तीर्थानामपि तत्तीर्थं, विशुद्धमनसः परा॥11॥

इस मन्त्रों को पढ़ने से साधारण जल भी पवित्र तीर्थ जल में परिवर्तित होकर पुण्य फलदाई हो जाता है। गंगापूजन एवं तीर्थ स्नान के पश्चात् पवित्र (अबोट) वस्त्रों को पहनकर पूर्वाभिमुख होकर, शुद्धभूमि पर आसन लगाकर बैठे। इस मन्त्र के साथ आसन को पवित्र जल का छींटा दें।

अथ आसन शुद्धि-

ॐ पृथ्वि तवया धतालोका, देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि, पवित्रं कुरू चासनम्॥

अथ देह शुद्धि-

दाएं हाथ की अनामिका अंगुली में दर्भ से बनी पवित्र (अंगूठी) धारण करें। यदि इस अंगूली में सुवर्ण की अंगूठी है तो पवित्री की खास आवश्यकता नहीं है। बाएं कंधे पर उपवस्त्र रखे, बाएं हाथ की अंजुली में जल लेकर दाएं हाथ

Scanned with CamScanner

से शरीर पर जल छिड़कते हुए, निम्न मन्त्र को पढ़ें, इससे शरीर पवित्र हो जाता है।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचि॥

अथ भस्मधारणम्-

बाएं हाथ में पवित्र (यज्ञ) भस्म लें। भस्मी के अभाव में खाली जल लें 'जलमिति भस्म' कहते हुए, दोनों हथेलियों को आपस में रगड़ें। मन्त्रानुसार शरीर के विभिन्न अंगों पर भस्म लगाते हुए स्वयं को मन्त्रपूत करें।

ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेः-ललाटे।
कस्यपस्य त्र्यायुषम्-ग्रीवायाम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषम्-बाह्वोः।
तन्नोस्तु त्र्यायुषम्-हृदये।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥-सर्वांगे
इस मन्त्र से नाभि, जंघा, पांव सभी अंगों का स्पर्श करें।

अथ शिखाबन्धनम्-

दाएं हाथ के आचमनी में जल लेकर विनियोग करें।

-मानस्तोक इति मन्त्रस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता शिखाबन्धने विनियोगः।

ऐसा कहकर जल पृथ्वी पर छोड़ दें तथा निम्न मन्त्र से शिक्षा में ग्रंथि बांधें। शिखा न हो तो केवल शिखास्थल को स्पर्श करें। वहाँ मौली रखें।

ॐ मानस्तोके तनये मानआयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः। मानो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदामित्वा हवामहे॥

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेज समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

तत्पश्चात् कण्ठ में रुद्राक्ष माला अथवा मनोवांछित इष्ट देवता निमित्त काम्य माला धारण करें। यहां पुष्पमाला भी पहन सकते हैं। पुष्पमाला सुगन्धित पुष्पों के माध्यम से यजमान की सुगन्धि व कीर्ति चारों ओर फैलाती है। बाह्य शुद्धि के पश्चात् अन्तःकरण की शुद्धि हेतु प्राणायाम करें। दाएं हाथ में तीन बार जल लेकर, उसका प्राशन करें (जल पीएं)।

Scanned with CamScanner

ॐ भूः स्वाहा (प्रथम)

तीन बार जल पीएं

ॐ भुवः स्वाहा (द्वितीय)
ॐ स्वः स्वाहा (तृतीय)

इसके पश्चात् तीन बार गायत्री मन्त्र का विधिपूर्वक उच्चारण करें। फिर ब्राह्मण वर्ग 'शान्तिसूक्त' का पाठ करते हुए यजमान के भालप्रदेश पर तिलक करें, अक्षत लगावें। मौली (रक्षा-सूत्र) बांधें। पुरुष के दाएं हाथ एवं स्त्री के बाएं हाथ पर मौली बांधी जाती है। स्त्री स्वंय कमाती हो तो अपने दाएं हाथ पर सूत्र-वेष्टन करा सकती है। तत्पश्चात् 'गणपति' का स्मरण करें। गणपति स्मरण के बाद गुरु का ध्यान और उसके पश्चात् प्रधान संकल्प करना चाहिए।

पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर, अपने-अपने आसनों पर बैठकर, इष्टदेव के सन्मुख होकर वामभाग में पवित्र कलश एवं दक्षिण भाग में पूजन सामग्री स्थापित करके, उत्साह पूर्वक 'भद्रसूक्त' का वाचन करते हुए यजमान के ललाट प्रदेश पर चन्दन अथवा कुंकुम से अंगूठे द्वारा तिलक करें। ब्राह्मणों का तिलक अंगूठे से नहीं होता अपितु तर्जनी व मध्यमा से होता है।

अथ भद्रसूक्तम्-

**ॐ आनोभद्द्राः क्रतवो यन्तु विश श्वतोदब्धासो ऽ अपरीतासऽउद्भिदः।
देवानोयथासद्मिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे॥1॥**

देवानाम्भद्द्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ठं रातिरभिनोनिवर्त्तताम् देवाना ठं सक्ख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे॥2॥

तान्पूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्॥ अर्य्यमणंवरुण ठं सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगामयस्सकरत्॥3॥

**तन्नोव्वातो मयोभुव्वातुभेषजन्तन्मातापृथिवीतत्त्पिताद्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतन्धिष्ण्या युवम्॥4॥**

तमीशानञ्जगतस्तस्त्थुषस्पतिन्धियाञ्जिन्नमवसेहूमहेव्वयम्॥ पूषानो यथाव्वेद सामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धयः स्वस्तये॥5॥

**स्वस्ति नइन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः- पूषाव्विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥1॥**

Scanned with CamScanner

पृषदश्श्वामरुत: पृश्निमातर: शुमंयावानोव्विदथेषुजग्गमय:
अग्निर्जिह्वामनव: सूरचक्षसोव्विश्श्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह॥2॥

भद्द्रङ्कर्ण्णेभि: शृणुयामदेवाभद्द्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्रा:।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्वयशेमहिदेवहितँय्यदायु:॥3॥

शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्च्चक्क्राजरसन्तनूनाम्।
पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तो:॥4॥

अदितिरद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्र:।
वि श्वेदेवाऽअदिति: पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्त्वम्॥5॥

द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्ति: पृथिवीशान्तिराप:
शान्तिरौषधय: शान्ति: व्वनस्प्पतय: शान्तिर्व्विश्श्वेदेवा:
शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्ति: सर्व्व ँ शान्ति: शान्तिरेवशान्ति
सा माशान्तिरेधि॥6॥

यतोयत: समीहसे ततोनोऽअभयंकुरु।
शन्न: कुरुप्प्रजाब्भ्योऽभयन्न: पशुभ्य:॥7॥

॥ सुखशान्तिर्भवत ॥

Scanned with CamScanner

अथ गणेशगुर्वादीन्नमस्कारा:

अथगुरुनमनम्-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:॥1॥
ध्यान मूलं गुरो: मूर्ति: पूजामूलं गुरो: पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरो: कृपा॥2॥
न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तप:।
गुरो: परतरंनास्ति तस्मात्सम्पूज्यते गुरु॥3॥
नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्।
गिरसायज्ञपीठस्थ तस्मै श्री गुरवे नम:॥4॥
त्वं पिता, त्वं च मे माता, त्वं बन्धु त्वं च देवता।
त्वं मोक्ष प्राप्तिहेतुश्च तस्मै श्री गुरवे नम:॥5॥

अथसर्वदेवनमस्कारम्-

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नम:। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम:।
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नम:। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नम:।
ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नम:। ॐ इष्टदेवताभ्यो नम:।
ॐ कुलदेवताभ्यो नम:। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नम:।
ॐ स्थानदेवताभ्यो नम:। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नम:।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नम:। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नम:।
ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नम:॥

Scanned with CamScanner

गणपति स्मरण

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥1॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥2॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥3॥
शुक्लाम्बरधर देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नो पशान्तये॥4॥
अभीप्सितार्थ-सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥5॥
सर्वमंगलमाङ्गल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥6॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भवान्मङ्गलायतनो हरिः॥7॥
तदैव लग्नं सुदिनं तदैव, ताराबलं चद्रबलं तदैव।
विद्याबलं दैवबलं तदैव, लक्ष्मीपते तेंऽध्रि युगं स्मरामि॥8॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थे जनार्दनः॥9॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिः ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥10॥
सवेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं, ब्रह्मेशान जनार्दनः॥11॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णु महेश्वराम्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यर्थ सिद्धये॥12॥

Scanned with CamScanner

अथ प्रधान संकल्प-

यजमान एवं यजमान-पत्नी दक्षिण हाथ में जल लें। जल में कुंकुम, अक्षत, पुष्प व द्रव्य रखकर, दृढ़चित्त होकर निम्न संकल्प बोलें। संकल्प के परिपूर्ण हो जाने पर हाथ का जल पवित्र स्थान में त्याग दें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तेकदेशे, श्रीमन्नृपविक्रमादित्य राज्यात् अमुकनाम्नि संवत्सरे संवत्.. .अमुकायने...अमुकऋतौ...अमुकमासे...अमुकपक्षे...अमुकतिथौ...अमुकवासरे. ..अमुकनक्षत्रे...अमुकराशि स्थिते चन्द्रे...अमुक राशि स्थिते सूर्ये...अमुक राशि स्थिते देवगुरौ बृहस्पति...शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नोहं...अमुक शर्माहं...ममात्मन: श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं निरन्तरऐ श्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थम् प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकालसंरक्षणार्थं सकलमनईप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं लोकेसभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोलाभादिप्राप्त्यर्थम् इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशो: समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुष्य आरोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं मम जन्मराशेरखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशे: सकाशाद्ये केचिद्विरुद्धचतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थितक्रूरग्रहास्तै: सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्तेरविच्छिन्नवृद्ध्यर्थम्आधिदैविकाऽधिभौतिकाऽध्यात्मिकत्रिविधतापोषशमनार्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-फलावाप्त्यर्थं

मम जन्मसमये सम्पादित जन्माङ्गे। (अमुक) लग्नात् ग्रहस्थिति वशेन प्रदर्शित कालसर्प योगानां मध्ये (अमुक) नामक कालसर्प योगस्य शान्ति निमित्तं अद्य अस्मिन् तीर्थे (स्थाने) श्रौत स्मार्तविधिना कालसर्पजनित दोष शन्तिमहं करिष्ये। तत्रादौ यथाविधि गणपति पूजनं, मातृकास्थापनं, नान्दीश्राद्धं ग्रहपीठस्थापनं, नागपीठस्थापने तेष ध्यान-आह्वानादि षोडशोपचारै, पंचोपचारै, राजोपचारै, अन्योपचारै वा यथामिलितोपचचारद्रव्यै पूजनाद्यर्चन अहं करिष्ये।

Scanned with CamScanner

तदङ्भूतेन तेषां ग्रहाणां सर्पाणां आह्वाहित देवानां देवनाङ्ग कर्म तथा प्रधान कालसर्पस्य शान्त्यर्थं यथाज्ञानेन शास्त्रोक्त विधिना तर्पण मार्जनादि सर्वाणि कर्माणि एवं जलविसर्जनादि कर्म करिष्ये॥

जल शुद्ध भूमि पर त्याग दें। पुन: आचमनी में जल लें।

तदंगतया गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं शिवपञ्चायतनदेवतापूजनं नवग्रहपूजनं च अहं करिष्ये।

जल त्याग दें। पुन: आचमनी में जल लें।

तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशार्चनं शङ्खघण्टार्चनं दीपपूजनं च करिष्ये।

अथ दिग्रक्षणम्-

बाएं हाथ में सरसों के दाने लेकर मन्त्र पढ़ते हुए समस्त दिशाओं का रक्षण करने हेतु 'रक्षोघ्न-सूक्त' का पाठ करें।

ॐ रक्षोहणं व्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्त्किरामि यम्मेनिष्ट्यो यममात्त्यो, निचखानेदमहन्तं व्वलगमुक्तिरामियम्मे सबन्धुर्य्यमसबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामियम्मेसजातोयमसजातो निचखानोत्कृव्यांकिरामि॥1॥

रक्षोहणोवोव्वलगहन: प्प्रोक्षामिव्वैष्णवान्त्रक्षोहणोवो व्वलगहनोऽ वनयामि वैष्णवान् रक्षोहणोवो व्वलगगहनो वस्तृणामिव्वैष्णण - वान्त्रक्षोहणौवां व्वलगहनाऽउपदधामि व्वैष्णवीरक्षोहणौवां व्वलगहनौपर्य्यू हामिव्वैष्णवी व्वैष्णवमसिव्वैष्णवास्थ॥2॥

रक्षसांभागो सिनिरस्त ठं रक्षऽइदमह ईं रक्षो भितिष्ठा मीदमह ठं रक्षो वबाधऽइदमह ठं रक्षोधमन्तमोनयामि। घृतेनद्द्यावापृथिवीप्प्रोर्ण्णुवाथां व्वायोव्वेस्तोकानामग्निराज्यस्यव्वेतु स्वाहा स्वाह कृतेउद्ध्र्वनभम्मारुतंगच्छतम्॥3॥

रक्षोहाव्विश्श्वचर्षणिरभियोनिमयोहते। द्रोणेसधस्थ-मासदता॥4॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता:।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥1॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वतो-दिशम्।
सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारम्भे॥2॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वत:।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥3॥
भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसा:।

Scanned with CamScanner

स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवंत्विमाम्।।4।।
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहम्।।5।।

इतना बोलकर सभी दिशाओं में सरसों बिखेर दें और वाम पाद से तीन बार भूमि का ताड़न करें। फिर हाथ में जल लेकर दसों दिशाओं में मार्जन करें। चाहे तो पञ्चगव्य से मार्जन करें।

ॐ पूर्वे रक्षतु गोविन्द: आग्नेयां गरुड़ध्वज:।
याम्या रक्षतु वाराहा नारसिंहस्तु नऋत्य।।
वारुण्यां केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदन:।
उत्तरे श्रीधरो रक्षेदीशान्यां तु गदाधर:।।
उर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधरत्ताच्चच त्रिविक्रम्।
एवं दश दिशो रक्षेंद् वासुदेवो जनार्दन:।।1।।

भैरव नमस्कार-

तीक्ष्णदंष्ट्रं महाकाय कल्यान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

इसके बाद उदक का स्पर्श कर लें। हाथ धो लें। पुन: आचमनी में जल लेकर विनियोग करें।

अथ वरुणावाहनम् (कलशपूजनं)-

तत्त्वायामीत्यस्य शुन:शेप ऋषि: त्रिष्टुपछन्द: वरुणो देवता वरुणाह्वाने विनियोग:।

इतना कहकर जल त्याग दें। अपने वामभाग में चावल का अष्टदल बनाकर उस पर जलपूरित पवित्र कलश की स्थापना करें। उस कलश में थोड़ा कच्चा दूध, अक्षत, गन्ध, पत्र पुष्प, गंगाजल एवं द्रव्य का विसर्जन करें। तत्पश्चात् मन्त्र पढ़ते हुए कलश में वरुण देवता का आह्वान करें। आह्वान मन्त्र यह है-

ॐ तत्वायामिब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भि:।
अहेडमानो व्वरुणेहबोद्ध्युरुश ठं समानऽआयु: प्रामोषी:।।
मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम्।
आवाहये प्रतीचीनं वरुणं यादसां पतिम्।।
ॐ भूभुर्व: स्व अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि।।

Scanned with CamScanner

इसके पश्चात् चावलों से कलश में वरुण देवता की प्रतिष्ठा करें।

अथप्रतिष्ठापन्-

ॐ मनोजूतिर्ज्जुष्ठतामाज्जस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टँय्यज्ञ ठं समिमन्दधातु। व्विश्श्वेदेवासइहमादयन्तामोऽम् प्रतिष्ठ॥

ॐ वरुणाय नमः। वरुण सुप्रतिष्ठतो वरदो भव। प्रतिष्ठाप्य॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः चन्दनं समर्पयामि।

वरुण देवता को चन्दन, पुष्प, गन्धादि चढ़ावे तथा अनामिका अंगुली से कलश को स्पर्श करता हुआ बोले।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥1॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥2॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥3॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् संन्निधिंकुरू॥4॥
ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करै स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥5॥

कलश के चारों ओर पुष्प बिखेरते हुए बोलें-

ॐ पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः
पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः
कलशमध्ये अपाम्पतये वरूणाय नमः।

इतिवरुणं सम्पूज्य

कलश में स्थापित वरुण देवता को गंधक्षत पुष्प चढ़ावें। धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ावें। तत्पश्चात् सब तीर्थो का ध्यान करते हुए प्रार्थना पूर्वक नमस्कार करें।

कलश प्रार्थना-

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥1॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।

Scanned with CamScanner

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥2॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्र विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥3॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥4॥

(* उदकस्पर्श - पूजा करते हुए अधोवायु आ जाए अथवा कोई हँस दे, बीच में झूठ बोल जाए, बिल्ली, मूषक का स्पर्श हो जाए या क्रोध आ जाए तो कानों के पवित्र जल लगाना चाहिए, इससे शुद्धि हो जाती है।)

अथ पवित्रीकरणम्-

तत्पश्चात् (1) अंकुश मुद्रा से (तीर्थों का आवाहन), (2) मत्स्यमुद्रा (आच्छादन), (3) धेनु मुद्रा (अमृतीकरण), (4) कूर्म मुद्रा प्रदर्शन, (5) शंख मुद्रा स्पर्श करते हुए 'वं' इस मूलमन्त्र को आठ बार अभिमन्त्रित करें। फिर कलश में से कुछ जल लेकर पूजन सामग्री पर छिड़कें। भूमि का प्रोक्षण करें।

कुछ जल स्वयं के शरीर पर छिड़कें। शरीर को मार्जन द्वारा पवित्र करने का मन्त्र-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

पूजन सामग्री एवं अन्य वस्तुओं को मार्जन करने का मन्त्र-

ॐ आपोहिष्ट्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे। योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयते हनः। उशतीरिवमातरः॥1॥

तस्माअरङ्गमामवोयस्यक्षयाय जिन्वथ। आपोजनयथाचनः॥2॥

अथ दीप पूजनम्-

वायुरहित स्थल पर शुद्ध घी का दीपक जलाकर चावल चढ़ाते हुए मन्त्र पढ़ो।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्गिनर्व्वर्चोज्ज्योतिव्वर्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्चोज्ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्य सूर्योज्ज्योतिः स्वाहा॥

Scanned with CamScanner

ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

(तत्पश्चात् हाथ जोड़कर दीपक की प्रार्थना करें)

दीप प्रार्थना-

भो दीपदेवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।।
अनेन पूजनेन दीपदेवता प्रीयताम्।।

अथ शङ्खपूजनम्-

शंख में जल भर कर अर्धचन्द्राकार तिलक करें।
शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापति विद्यादग्रे गङ्गा सरस्वती।।
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्यचाज्ञया।
शङ्ख तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तत्वाच्छङ्ख प्रपूजयत्।।
ॐ अग्निऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्।
उपयामगृहीतो स्यग्नयेत्त्वाव्वर्च्चस एषतेयोनिरग्नयेत्त्वाव्वर्च्चसे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

शङ्खप्रार्थना-

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्यं नमोऽस्तु ते।।
पाञ्चजन्यार्य विद्महे पावमानाय धीमहि।
तन्नो शङ्खः प्रचोदयात्।।
(शङ्ख मुद्रा प्रदर्शन करे)

अथ घण्टापूजनम्-

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत्।।
ॐ सुपर्णोसिगरुत्म्माँ स्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रञ्चक्षुर्बृहद्द्रथन्तरेपक्षौ।
स्तोमऽआत्माच्छन्दा ठ स्यङ्गानियजू ँ षिनाम। सामतेतनूर्व्वामदेव्यं य्यज्ञायज्ञिम्पुच्छन्धिष्णयाः शफाः। सुपर्णोसिगरुत्म्मान्दिवङ्गच्छस्वः पत।।

Scanned with CamScanner

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाने गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारर्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

(गुरुड़ मुद्रा का प्रदर्शन करें।)

अथ पुण्याहवाचन सूक्ष्म प्रयोग-

यजमान अपने सामने, शुद्धभूमि पर चावलों का अष्टदल बनावें, उस पर पाँच पत्तों व दूर्वा से युक्त पवित्रकलश को स्थापित करें। कलश में यव डालें, फिर जल से परिपूर्ण करके अष्टदल के ऊपर रखें। इसके पश्चात् कलश में गन्ध, अक्षत, सर्वोषधि, पञ्चपल्लव, सप्तमातृका, फल, पञ्चरत्न, सुवर्ण, द्रव्य इत्यादि चढ़ावें। लाल वस्त्र के कलश का वेष्टन करके, उस पर पूर्णपात्र रखें फिर नारियल रखें। कलश में वरुणदेवता का आह्वान करें, चन्दनपुष्पादि अर्पण कर, अर्चना करें। तत्पश्चात् ब्राह्मणों के हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, ताम्बूल, दक्षिणा आदि देवें। फिर आचार्य की आज्ञा लेकर यजमान हाथ जोड़कर वचन बोले, ब्राह्मण उसको प्रतिवचन देते हैं।

यजमान के वचन-

1. ॐ पुण्याहकालान्वाचयिष्ये।	1. वाच्यताम्।
2. भो ब्राह्मणा! अस्मिन्कर्मणि पुण्याहम् भवन्तो ब्रुवन्तु।	2. ॐ अस्तु पुण्याहम्।
3. भो ब्राह्मणा! कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।	3. ॐ अस्तु कल्याणम्।
4. भो ब्राह्मणा! ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।	4. ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।
5. भो ब्राह्मणा! स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।	5. ॐ आयुष्मते स्वस्ति।
6. भो ब्राह्मणा! श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।	6. ॐ अस्तु श्री (ब्राह्मण सभी वचनों के उत्तर पद को तीन-तीन बार बोलें।)
7. अस्मिन् पुश्याहवाचने न्यूनातिरिक्ता या विधि या उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् परिपूर्णास्तु।	7. ॐ अस्तु परिपूर्णाः॥

Scanned with CamScanner

अन्तिम वचन के साथ यजमान ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे। यजमान अपनी पत्नी को वाम भाग में ले, चार अविधुर पुण्यवान ब्राह्मण यजमान के दक्षिण भाग में खड़े होकर, दूर्वा, आम्रपत्र से सपत्नीक यजमान को अभिषिक्त करें। तत्पश्चात् ब्राह्मण यजमान को मन्त्राशीर्वाद देवे।

अथ आयार्चादि ऋत्विग्वरणम्-

सपत्नीक यजमान ब्राह्मणों को नमस्कार कर, अर्घ्य व आसन देकर उनका स्वागत करे। तंत्पश्चात् सर्वप्रथम आचार्य[1] के दक्षिण पैर के अंगूठे का प्रक्षालन (दुग्ध मिश्रित जल से) कर चन्दन, पुष्पादि चढ़ावें।

पाँव धोने का मन्त्र-

यत्पुण्यं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे।
तत्फलं पाण्डवश्रेष्ठ! विप्राणां पाद शौचने॥
पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि तीर्थानि सागरे।
सागरे सर्वतीर्थानि, विप्रस्य दक्षिणपदे॥

आचार्य को पुष्पाहार, वस्त्र, यथाशक्ति दान-दक्षिणा दे। तत्पश्चात् सभी ब्राह्मणों का इसी क्रम से पूजन करें एवं अक्षत, पुष्पहार देते हुए चन्दन से तिलक करें।

ब्राह्मणों को तिलक करने का मन्त्र-

ॐ नामेऽस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शा श्वते, सहस्रकोटियुगधारिणे नमः॥

इसके पश्चात् पवित्र रक्तसूत्र (मौली) से ब्राह्मणों का अभीष्ट कर्म के लिए व्रतबन्धन करे।

1. **अपूज्यायत्रपूज्यन्ते, पूज्यानां च व्यतिक्रमः**
त्रिणितत्रप्रर्वतन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्॥
पूजन में व्यक्तिक्रम करने से भारी दोष लगता है। अतः सबसे पहले आचार्य, गुरु, फिर ब्रह्मा, फिर ऋत्विक् उसके बाद अन्य लोगों का आतिथ्य-सत्कार क्रमवार करें।

Scanned with CamScanner

मौली बांधने का मंत्र

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सप्यमाप्यते।।

मौली बांधने के पश्चात् ब्राह्मणों को यथाशक्ति वस्त्रादि भेंट कर दक्षिणा दे इसके बाद ब्राह्मण अभीष्ट देवता का पूजन करते हुए कर्म प्रारम्भ करते हैं।

Scanned with CamScanner

अथ मातृकास्थापनं पूजनम्

मातृका स्थापन एक प्रकार से शक्तिपूजन है। शक्ति के बिना शिव भी 'शव' हो जाता है। शास्त्रकारों ने कहा है कि संकल्पित कार्य एवं मण्डप (अनुष्ठान) के सभी कार्य निर्विघ्न परिपूर्ण हो जाए इसलिए एक बार मातृका (शक्ति) पूजन अवश्य करना चाहिए। उसके बाद वि श्वदेव, वसौद्धारा एवं नान्दीश्राद्ध करना चाहिए।[1]

अत: अग्निकोण में एक पीठ स्थापित करें। उस पर लालवस्त्र बिछावे। सवासेर गेहूँ से उस पर सोलह कोठे बनावें। सोलह कोष्ठकों (कोठों) में सोलह सुपारी रखें। मध्य के चार कोष्ठकों के अग्निकोण में कांसे के पात्र में गणपति की स्थापना की जाती है। ईशानकोण में कुलदेवी, नैऋत्य में गौरी तथा वायव्य कोण में पद्मा की स्थापना की जाती है।[2] अन्य देवियों की क्रमानुसार स्थापना चित्र के अनुसार करें।

ईशान्य — पूर्व — आग्नेय

उत्तर — दक्षिण

स्वाहा 11	मातर 12	लोक मातर 13	धृति 14	स्वधा 10
देवसेना 9	कुलदेवी 17		गणेश 1	विजया 7
जया 8	पद्मा 2		गौरी 3	सावित्री 6
तुष्टि 16	मेघा 5		शची 4	पुष्टि 15

वायव्य — पश्चिम — नैऋत्य

हाथ में जल, अक्षत, कुंकुम, पुष्प, फल दक्षिणा लेकर संकल्प करें।

1. अविघ्नो मण्डश्चैव मातृणां पूजनं सकृत्।
वैश्वदेव वसोर्द्धारा नान्दी श्राद्धमत: परम्।।
2. मध्यस्थ वेदकोष्टेषु वह्निस्कोणे गणे श्वर। ईशाने कुलदेवी व गौरी पूजा च नैऋते।। पद्मावायव्य कोणेषु तदबाह्यो देवताक्रमं। स्वाहा मातृ धृतिश्चैव, स्वधाचविजयाजया सावित्री तुष्टिमेधा च, शचिपुष्टिस्तथाग्रत:, देवसेना जया एता बाह्य कोष्ठेषु सव्यत:।।

Scanned with CamScanner

* देशकालौ संकीर्त्य-

(यजमानस्य) अमुक नामधेस्य कर्मागं निमित्तं गौर्यादि षोडश मातृणां वसोर्द्धारा सहितानां गणेश गोत्रदेव्या सहितानां मातृका स्थापनं अहं करिष्ये। यजमान बाएं हाथ में अक्षत ले तथा दाएं हाथ से अक्षत बढ़ाते हुए सर्वप्रथम गणपति का आह्वान करे।

गणपति आह्वान-

गजस्या गणनाथत्वं, सर्वविघ्न-विनाशकम्।
लम्बोदरं त्रिनेचं च आगच्छ गणनायक:॥

ॐ गणानांत्वा गणपति ॐ, हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॐ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ॐ हवामहे वसोमम। आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।

समीपेमातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुव: स्व: गणपतये नम:। गणपतिमावाहयामि॥1॥

गौरी स्थापना-

हिमाद्रितनयां देवीं वरदा भैरवप्रियां।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥
ॐ आयंगौ: पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुर: पितरंच प्रयन्त्स्व:॥2॥
ॐ भूर्भुव: स्व: गौर्य नम:। गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

पद्मा स्थापना-

सुवर्णाभ्यां पद्महस्तां विष्णोर्वक्षतलस्थितां।
त्रैलोक्यपूजितां देविं पद्मामावाहयाम्यहं॥

ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोव्विरोकऽउभाविन्द्रउदिथ: सूर्यश्च आरोहतं वरुणमित्रगतन्ततश्चक्षथामदितिन्दितिञ्च मित्रोसिव्वरूणोसि॥3॥

ॐ भूर्भुव: स्व: पद्मायै नम:। पद्मावाहयामि स्थापयामि।

शची स्थापना-

उत्पालाक्षी सुदर्शनां शचि कुण्डलधारिणी।
देवराज वल्लभां देवीं शचीमावाहयाम्यहं॥

Scanned with CamScanner

ॐ कदाचनस्तरीरसिनेन्द्र सश्चसिदाशुषे।
उपोपेन्नुमघवं भूय इन्नुतेदानं देवस्या पृच्यते॥4॥
ॐ भूभुर्वः स्वः शच्यै नमः। शचीमावाह्यामि स्थापयामि।

मेधा स्थापना-

वैवस्वत करफल्लाब्जतुल्यस्त्रुक पद्मवासिनी।
बुद्धिप्रसादिनी सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्॥
ॐ मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु में स्वाहा॥5॥
ॐ भूभुर्वः स्वः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

सावित्री स्थापना-

जगत्सृष्टु वपुधात्री स्त्रिरूपेण व्यवस्थिता।
ॐ कारक्षां भगवती सावित्री मावाह्याम्यहं॥
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्या धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥6॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः। सावित्री मावाह्यामि स्थापयामि।

विजया स्थापना-

वि श्वभद्रांत्वयारक्तां रक्ताम्बर धरां सदा।
त्रैलोक्य पूजितां देविं विजयामावह्याम्यहम्।
ॐ विजयन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाण वाँ 2 उत।
अनेशन्नस्य याऽइषव आ भुरस्य निषगंधिः॥7॥
ॐ भूभुर्वः स्वः विजयायै नमः। विजयामावाह्यमि। स्थापयामि।

जया स्थापना-

दैत्यपक्षक्षयंकरी देवानां च भयप्रदां।
गीर्वाण वंदितां देवीं जयामावाहयाम्यहम्॥
ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरा पापकाशिनी तयानस्तन्वाशन्तमया गीरिशन्ताभिचाकशाहि॥8॥
ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः। जयामावाहयामि स्थापयामि।

Scanned with CamScanner

देवसेना स्थापना-

मयूर वाहनारूढां शक्तिखड्ग-धनुर्धराम्।
आवाहये देवसेनां तारकासुर-मर्दिनीम्॥
ॐ देवानां भद्रासुमतिर्ऋजूयतां तान्देवाना ॐ रातिरभिनो निवर्ततताम्।
देवानांसख्मुपसे दिमाव्वयन्देवान आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥9॥
ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः। देवसेनायाहवाह्यामि स्थापयामि।

स्वाहा स्थापना

हव्यं ग्रहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छतु।
दिव्यरूपासने स्वाहा समागच्छति सागरे॥
ॐ स्वाहायज्ञंमनसः स्वाहोरोरंतरिक्षात् स्वाहा द्यावा पृथिवीभ्यां ॐ स्वाहा वातादारभे स्वाहा॥10॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

स्वधा स्थापना-

कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छतु।
पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्॥
ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। अक्षन्नपितरो मीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्॥11॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

मातृस्थापना-

भूतग्राममिदं कृत्स्नं याभिरूपादेतत्पुराः।
त्रैलोक्यपूजितां देवी मातृमावाहयाम्यहम्॥
ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेननोघतप्वः पुनातु। विश्व ठं हिरिप्रम्प्रवहन्ति देवीरूदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि दीक्षातपसोस्तनूरसितान्त्वा शिवा ठं. शग्मांपरिदधे भद्रंवर्णपुष्यन्॥12॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्योः नमः। मातरमावाहयामि स्थापयामि।

Scanned with CamScanner

लोकमातर स्थापना-

आवाहये लोकमातृजगत्पावन संस्थितां।
शक्रद्यौरसितौ विद्या स्तोत्रै राराधानै रपि:॥

ॐ भायैदार्व्वाहारं प्रभाया अग्न्येधंब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेकतारं वर्षिष्ठायनाकायपरीवेष्टारं देवलोकायपेशितारं मनुष्यलोकायप्रकरीता ठं. सर्वेभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तार मवऋत्यै वधायोपमंस्थितारं मेघायवास: पल्पुलीं प्रकामायर जयित्रीम्॥13॥

ॐ भूर्भुव: स्व: लोकमातृत्यो नम:। लोकमातृमावाहयामि स्थापयामि।

धृतिस्थापना-

मनुतुष्टिकरी देवी लोकानुग्रहकारिणी।
सर्वकाम-समृध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ यत्प्रज्ञान मुतचेतो धृतिश्च यज्योतिरंतरमृतं प्रजासु। यस्मान्नऋते किंचनकर्मक्रियते तन्मेमन: शिवसंकल्पमस्तु॥14॥

ॐ भूर्भुव: स्व: धृत्यै नम:। धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

पुष्टि स्थापना-

सुप्रीताया विलोकेऽस्मिन् पुष्टित्वं च सुखप्रदां।
भक्तेभ्यश्चापि वरदां विष्णु ज्वालातिकुण्डलाम्॥

ॐ त्वमंगप्रस ॐ सिषोदेव: शविष्ठमर्त्यम्। नत्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्रब्रवीमितेवच:॥15॥

ॐ भूर्भुव: स्व: पुष्ट्यै नम:। पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

तुष्टि स्थापना-

आवाहयामि तां तुष्टिं सर्वभूतेषु पूजितां।
संतोषभाविता तुष्टि चार्यरक्षणीधरेमम॥

ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दिदयच्छवस ऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणंधेहि चित्रम्॥16॥

ॐ भूर्भुव: स्व: तुष्टयै नम:। तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

Scanned with CamScanner

कुलदेवी स्थापना-

तामात्मादेहिनामात्री पशुपुत्र विवर्द्धनी।
वंशरक्षा करीं देवी कुलदेवीमावाह्याम्यहं॥

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुपे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा व्याचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥17॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुल देव्यै नमः। कुलदेवीमावाहयामि स्थापयामि। तत्पश्चात् बाएं हाथ के सभी अक्षत दाएं हाथ में लेकर प्राणप्रतिष्ठा करें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ठं समिन्दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयान्तामों 3 प्रतिष्ठ।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति न कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सगणाधिपगौर्यादिकुलदेवताः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवत।

इसके बाद पंचोपचार यथामिलित द्रव्योपचार, पुष्प, गन्ध, फल, दक्षिणा से षोडशमातृकाओं का पूजन करें। फिर प्रार्थनापूर्वक नमस्कार करें।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता॥
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूजयास्तु षोडशः॥
अनया पूजया गणपत्यादि कुलदेवतान्तः मातरः प्रीयन्ताम्।

सर्प के दर्शन

23 मार्च 93 मंगलवार नासिक में श्री गुरुदेव द्वारा कालसर्प योग की विधिपूर्ण होने पर श्री किशोर भाई (घटकोपर) की धर्मपत्नी व बच्चों को सर्प के दर्शन हुए। श्री किशोर भाई की पत्नी ने बताया कि सर्प की आकृति ठीक वैसी ही थी। जैसे सर्प गोदावरी-गंगा के सरोवर में छोड़े गए थे।

Scanned with CamScanner

अथ सप्तघृतमातृका पूजनम्

स्थापित षोडशमातृका पीठ के ऊपर वाली दीवार पर 34 अंगुली दीर्घ एवं 16 अंगुली विस्तीर्ण सात बिन्दियां बनाकर, उस पर शुद्ध गोघृत व रूई से घी की धारा दी जाती है।[1] कुंकुम या हल्दी से निर्मित इन बिन्दुओं में प्राणप्रतिष्ठा की जाती है। इनका गुड़ से एकीकरण कर, इन्हें रक्तसूत्र से वेष्टन किया जाता है। ये ही घृतमातृकाएं कहलाती हैं।

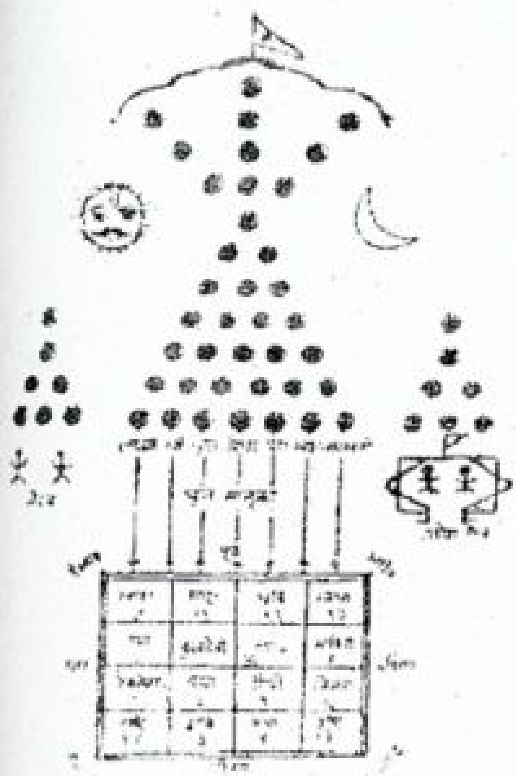

सप्तघृतमातृका

इन घृतमातृकाओं के ऊपर 6-5-4-3-2-1 और फिर 1-1-1 क्रम से बिन्दुओं का स्तूप बनाया जाता है। इन घृत मातृकाओं के पास गणेशगोत्र एवं दोनों ओर भैरव मन्दिर की स्थापना 3-2-1 और फिर 1-1 बिन्दु लगाकर की जाती है। इन सभी बिन्दियों की संख्या कुल मिलाकर 52 होती है। इन सभी के नाम एवं पूजन की विधि प्राचीन शास्त्र-परम्परा में उपलब्ध है। विवाह, यज्ञोपवीत के अवसर पर इसकी पूजा अनिवार्य मानी गई है। सप्तघृतमातृका का चित्र यहां दिया जा रहा है। घृतमातृका से दक्षिण दिशा में कुंकुम-हल्दी से गणेश और कुलदेवी की मूर्तियां बनाई जाती हैं। उत्तर की तरफ दो लकीरें खींचकर काला-गोरा भेरू के प्रतीकात्मक चिह्न बनाए जाते हैं। सप्तधारा तप्त घृत से बनाई जाती है। घी के अभाव में दूध भी काम में लिया जा सकता है।[1]

---

*1. चतुर्विंशांगुलि दीर्घा विस्तीर्णा षोडशांगुली
साज्यं कस्य वसोद्धारा कर्मे कर्मे पृथक्पृथक्॥1॥

Scanned with CamScanner

कहीं-कहीं देशाचार-कुलाचार से सात की जगह पांच माताएं भी कही गई हैं परन्तु हिन्दू सनातन धर्म में वशंवृद्धि हेतु किए गए प्रत्येक मंगल (वृद्धि) कार्य में घृतमातृकाओं का पूजन होता है। सात घृतमातृकाओं के नाम इस प्रकार हैं-1. लक्ष्मी, 2. श्री, 3. धृति, 4. मेधा, 5. प्रज्ञा, 6 स्वाहा, 7. सरस्वती।[2]

धृतधारा देने का मन्त्र-

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वासवितापुनातुवसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

तत्पश्चात् सातों बिन्दुओं को गुड़ से एकीकृत करें। अलंकार करें। हाथ में अक्षत लेकर एक-एक देवी की प्रतिष्ठा करें।

श्री प्रतिष्ठापनम्-

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमसीय पशूना ঁ रूपमन्नस्य रसोयशः श्री श्रयतां मयि स्वाहा।।1।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियम् आवाह्यामि स्थापयामि।

लक्ष्मीप्रतिष्ठापनम्-

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।2।।

ॐ भूर्भुवः, स्वः लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।

घृतिप्रतिष्ठापनम्-

ॐ भद्रंकर्णेभिः श्रणुयामदेवाः भद्रं पश्येमाक्षमिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ঁ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः। धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

मेधाप्रतिष्ठापन्-

---

1. पंच वा सप्तधारा वा वसोर्मन्त्रेण कारयेत्।
   दुग्धेन वा वसोद्धाराः कार्यास्तासां च देवता।।2।।
2. श्रीश्च लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
   मांगलेषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताः घृत मातर।।3।।

Scanned with CamScanner

ॐ मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा॥4॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधाम् आवांहयामि स्थापयामि।

स्वाहाप्रतिष्ठापनम्-

ॐ प्राणायस्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोताय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥5॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः। स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

प्रज्ञा प्रतिष्ठापनम्-

ॐ आयंगौ! पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्चप्रयन्त्स्वः॥6॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः। प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

सरस्वती प्रतिष्ठापनम्-

ॐ पावकानः सरस्वतीव्वाजेमि र्व्वाजनीवति। यज्ञाव्वष्टुधियाव्वसुः॥7॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

सामूहिक रूप से सभी देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा चावल चढ़ाते हुए निम्न मन्त्रों से करें।

ॐ तदस्तु मित्रावरुणातदग्ने शंय्योरश्मभ्यमिदमस्तुशस्तं अशीमहीगाधमुतमिव प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहतेसाधनाय॥1॥

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्ययज्ञमिममिंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिन्दधातु। वि श्वेदेवासऽइहयादयन्तामों 3 प्रतिष्ठ॥2॥

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्येतीमनसावाऽइद ँ सर्वामप्त तन्मनसेवैतत्सर्वमाप्नोति बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तमो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समीमंद घात्वीतीयद्धिदृढंतत्संदधाती वि श्वेदेवासऽइहमादयंता मिति सर्ववैवि श्वेदेवाः सर्वेणैवे तत्संदधाति सयदिकामेयत्ब्रुयात्ब्रुयुः प्रतिष्ठेति एषवै प्रतिष्ठा नाम यज्ञोयत्रैतेन यज्ञेनयजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति॥3॥

भवतां ब्राह्मणानां वचनात् गौर्यादिषोडश मातरः वसोद्धाराः सहिताः गणेश गोत्रदेव्या सहिताः आगच्छ सुप्रतिष्ठता फलदा वरदा भवन्तु॥

इदमत्रचन्दनं पुष्पः आचमनं प्राणायामं।

उपकल्पित तिथौ अस्मद् अमुक कर्म प्रारंभ निमित्तं गौर्यादिषोडशमातृणां वसोद्धारा सहितानां गणेशगोत्रदेव्या सहितानां पंचोपचारि पूजनाद्यर्चन महं करिष्ये।

Scanned with CamScanner

इदमत्रचन्दनं पुष्पम्। गौर्यादिषोडश मातृभ्यः वसोद्धारा सहितेभ्यः गणेशगोत्रदेव्यासहितेभ्यः धूपदीपं समर्पयामि॥

गौर्यादिषोडशमात्रेभ्यः वसोद्धारा सहितेभ्यः गणेशगोत्र देव्यासहितेभ्यः घृतगुडनैवेद्यं अमृतस्वरूपेण प्रियतां वः स्वाहा॥

गौर्यादि षोडशमातृभ्यः वसोद्धारा सहितेभ्यः गणेशगोत्र देव्यासहितेभ्यः पूंगीफलं मुद्रा, ताम्बूलं नमस्कारं। अर्घ्यं पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ग्रहाणाअर्घ्यं मया दत्तं देहि मे वांच्छितं फलम्। रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवती देहि मे, पुत्रं देहि धनं देहि सर्वकामाश्च देहि मे।

नमस्कारम्। पुनर्पृच्छा।

अद्य पूर्वाचरित एवं ग्रहगण विशेषण विशिष्टायां शुभपूण्यतिथौ अमुक कर्म प्रारम्भ निमित्तं गौर्यादिषोडश मातृभ्यः वसोद्धारा सहितानां गणेशगोत्र देव्या सहितानां पूजनं कृतस्य विधेर्यन्यूनातिरिक्तं तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां वचनात् गौर्यादिषोडश मातृणां प्रसादात् ब्राह्मण वचनात् सर्वं परिपूर्णं अस्तु॥

स्वस्तिवाचन आशीर्वचनं च॥

अथ सांकल्पिक वैश्वदेव प्रयोग

मातृका पूजन के बाद शुभप्रसंग में वैश्वदेव किया जाता है। वैश्वदेव क्रिया लुप्त न हो इसलिए सांकल्पिक वैश्वदेव की आज्ञा है। अतः निम्न संकल्प से वैश्वदेव हो जाएगा। फिर नान्दीश्राद्ध होगा।

एक पात्र में चावल भरकर फल व दक्षिणा लेकर ब्राह्मण को दें।

अत्राद्य महामांगल्य प्रद मासे पक्षे तिथौ वासरे अस्मिन् कर्मणि विहित वैश्वदेवा करण जनित प्रत्यवाय परिहारार्थं तत्करण जनितफल प्राप्त्यर्थं च इदं तण्डुलपात्रं सदक्षिणं शास्त्रोत्तफल प्राप्तयर्थं कस्यचित् ब्राह्मणायाहं दास्ये।

तेन करिष्यमाण कर्मणि अधिकार सिद्धिरस्तु।

Scanned with CamScanner

नान्दी श्राद्ध

गर्भाधान आदि संस्कार, बावड़ी, देवता की प्रतिष्ठा आदि पवित्र कार्यों में संन्यासदीक्षा, काम्य, वृषोत्सर्ग कर्म, गृहप्रवेश, तीर्थयात्रा, श्रावणीकर्म, सर्पबलि और आश्विन, मार्गशीर्ष की पूर्णिमा की पाकसंस्था के प्रथम आरम्भ में नान्दीमुख श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। गौरी आदि मातृकाओं का पूजन नान्दीश्राद्ध का ही अंग समझना चाहिए। जिस कर्म में नान्दीश्राद्ध न किया जाए वहां मातृका पूजन भी नहीं होता।

नान्दी श्राद्ध पितृगणों की तृप्ति एवं वंशवृद्धि हेतु किया जाने वाला एक प्रकार का वाचिक श्राद्ध है, इसमें पिण्डदान नहीं होता। नान्दी श्राद्ध करने से पितरों को आशीर्वाद प्राप्त होता है। पितर बन्धन छूटते हैं। पितर शक्तिशाली होकर अपनी सन्तान को वरदान देते हैं। कहा है-

आयुः कीर्ति बलं तेजो, धनं पुत्रं पशुं स्त्रियः।
ददन्ति पितरस्यतस्य, आरोग्यं नात्र संशयः॥

नान्दी श्राद्ध करने से पितर सन्तुष्ट होकर साधक को आयुष्य, कीर्ति, बल, तेज, धन, पुत्र, यश, स्त्री और आरोग्य प्रदान करते हैं।

नान्दीश्राद्ध के कुछ नियम-

1. इस श्राद्ध में 'स्वधा' की जगह 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण होता है।
2. इसमें सब कर्म 'सव्य' (दक्षिण यज्ञोपवीत) से करना।
3. नान्दीश्राद्ध में कुश की जगह मूलरहित दर्भ ग्रहण करना चाहिए।
4. युग्म ब्राह्मण, युग्म कुशा, युग्म दर्भ, प्रत्येक वस्तु युग्म रूप से लेना चाहिए।
5. इस कार्य में यजमान उत्तराभिमुख और ब्राह्मण पूर्वाभिमुख अथवा यजमान पूर्वाभिमुख तथा ब्राह्मण उत्तराभिमुख बैठे।
6. इस श्राद्ध में पिण्डों के विषय में दही, मधु, बेर, दाख व आंवले काम में लिए जाते हैं।
7. प्रथमा विभक्ति को अन्त में लगाकर संकल्प किया जाता है।
8. सर्वत्र उच्चारण के विषय में नाम व गोत्र का उच्चारण नहीं किया जाता

Scanned with CamScanner

गोत्र की जगह 'कश्यप' गोत्र और नाम की जगह 'नारायण' नाम का उच्चारण किया जाता है।

9. इस श्राद्ध में लालपुष्पों की माला काम नहीं आती। मालती, मल्लिका, केतकी और कमल ग्राह्य है।
10. इस श्राद्ध में अपसव्य नहीं होता, तिल एवं पितृतीर्थ जल भी काम में नहीं लिया जाता।
11. श्राद्ध का अंग रूप तर्पण भी इसमें नहीं किया जाता।
12. नान्दीश्राद्ध में पिता, दादा और परदादा (प्रपितामह) तथा माता, नाना, परनाना (वृद्धप्रमातामह) को स्मरण किया जाता है, उन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है। इस वर्ग में जीवित व्यक्ति जिसका पार्वण न हो, उस पार्वण के विषय का श्लोक एक देश न पढ़े।
13. नान्दीश्राद्ध में कपूर वगैरह से आरती नहीं होती।
14. जब नान्दीश्राद्ध का प्रयोग चलता हो तब यजमान पत्नी को अपने पति के साथ न बैठकर अपने आसन से उठकर अन्यत्र दूर बैठना चाहिए।

Scanned with CamScanner

अथ नान्दीश्राद्ध प्रयोग

यदि यजमान पूर्वाभिमुख हो तो दक्षिण जानु दबाकर एक पात्र में उत्तर मुखवाले द्रोव के चटों को स्थापित करें। स्वयं उत्तरमुख हो तो नान्दीश्राद्ध के चट पूर्वमुख स्थापित करे। विश्वदेव के स्थान पर दो सुपारियां या दो दूर्वा के चट रखे। दो सुपारियां सपत्नीक पितृपार्वण के स्थान पर, दो सुपारियां सपत्नीक मातामह पार्वण के स्थान पर। इस तरह से छह सुपारियां छह कुश के बटुन् (चट) नागरवेल के पान, दुनें या किसी पात्र में रखें। फिर यव हाथ में लेकर (बटुन्) चटों पर चढ़ावे।

क्षणदानं कुर्यात्-

ॐ सत्यवसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखान् अद्य कर्त्तव्य प्रधान संकल्पोक्तकर्मणि सांकल्पिक नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षण: क्रियताम्॥ (ऐसा कहकर यव छोड़ दें।) (कुछ क्षण मौन रहें) क्षणदान का अर्थ शान्त रहना है।

यजमान ब्राह्मणों से कहे-**प्राप्नुतां भवन्तौ।**

ब्राह्मण प्रतिवचन कहे-**प्राप्नावाव।**

पुन: यव हाथ में ले-**गोत्राणा नान्दीमुखानां पितृपितामह प्रपितामहानां सपत्नीकानाम् अद्य कर्त्तव्य प्रधान संकल्पोक्त कर्मांगि सांकल्पिक नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षण: क्रियताम्॥** (ऐसा कहकर यव छोड़ दे)।

यजमान ब्राह्मणों से कहे-प्राप्नुतां भवन्तौ।

ब्राह्मण कहे-प्राप्नवाव।

पुन: यव हाथ में ले-**द्वितीयगोत्राणां नान्दीमुखानां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानाम् अद्य कर्त्तव्य प्रधान संकल्पोक्त कर्मांगसांकल्पिक नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षण: क्रियताम्।** (ऐसा कहकर यव छोड़ दे) प्राप्नुतां भवन्तौ। प्राप्नवाव॥

अथ पाद्य दानम्-

(आचमनी में दुग्ध-मधु मिश्रित जल लेकर चढ़ावे)

Scanned with CamScanner

ॐ सत्यवसुसंज्ञका: वि श्वेदेवा: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धि:॥1॥

ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्य: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धि:॥2॥

ॐ पितृपितामहप्रपितामहा: नादीमुखा: भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादाववनेजनं पादप्रक्षलनं वृद्धि:॥3॥

(द्वितीय गोत्र)

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धमातामहा: सपत्नीका: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्व: इद्रं व: पाद्य: पादाववनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धि:॥4॥

संकल्प:

अद्य पूर्वोच्चरारित. शुभपुण्यतिथौ सांकल्पिक विधिना नान्दीश्राद्धं करिष्ये।

अथासनदानम्-

ॐ सत्यवसुसंज्ञका: वि श्वेदेवा: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्व: इमें आसने वो नमो नम: नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्त तथा प्राप्नुवाम:॥1॥

(ऐसा कहकर एक चट के नीचे डाब या पुष्प के टुकड़े का आसन दें। यही आवृत्ति तीन बार करें।)

गोत्रा नान्दीमुखा: पितृपितामह प्रपितामहा: सपत्नीका: इदं व आसनम्॥2॥

द्वितीय गोत्रा: नान्दीमुखा: मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा: सपत्नीका: इदं व: आसनम्॥

ततो गन्धादि दानम्-

(गन्ध दान में दीपक, अगरबत्ती (धूप) लगावे, ताम्बूल, पूंगीफल, वस्त्र, यज्ञोपवीत चटों पर चढ़ावे)

ॐ सत्य वस्तुसंज्ञका: वि श्वेदेवा: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्व: इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:॥1॥

गोत्रा: नान्दीमुखा पितृपितामह प्रपितामहा: सपत्नीका: इदं वो गन्धाद्यर्चनं यथाविभागं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:॥2॥

द्वितीया गोत्रा: नान्दीमुखा: मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा: सपत्नीका: इदं वो गन्धार्चनं यथाविभागं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:॥3॥

Scanned with CamScanner

भोजन-निष्क्रयद्रव्यदानम्-

(यजमान दो ब्राह्मणों से कहें कि, आप हमारे घर पर यथारुचि तृप्त होकर भोजन प्राप्त करें। ब्राह्मण कहें कि भोजन हुआ। भोजन दक्षिणा के साथ आंवला-द्राक्ष भी देना चाहिए) अथवा-दो ब्राह्मण भोजन करें उतना द्रव्य चढ़ावें।

ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवा नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तामनिष्क्रयीभूतं किञ्चत् हिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥1॥

गोत्रा नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः। युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तन्निष्क्रयीभूतं किञ्चत् हिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥2॥

द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामह प्रमातामह वृद्धमातामहाः सपत्नीका, युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तन्निष्क्रयीभूतं किञ्चित् हिरण्यंदत्तम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥3॥

ततः सक्षीरयवमुदक दानम्-

(तत्पश्चात् चटों पर दूध, जल, पंचामृत चढ़ावें।)

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्॥1॥

गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामह प्रपितामहाः वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम्॥3॥

ततो जलम् दद्यात् (अंगूठे से ब्रह्मतीर्थ मुद्रा में चटो पर जल चढ़ावें)

ॐ अघोराः पितरः सन्तु। सन्तु अघोराः पितरः (इतिजलम्)

ततः पुष्पम्-ॐ सौमनस्रूमस्तु (इतिपुष्पम्)

ततः यवाः-ॐ अक्षतं चारिष्टं चाऽस्तु (इतियवाः)

बद्धांजलि आशीर्ग्रहणम्-

(यजमान हाथ जोड़ कर पितरों से आशीर्वाद ग्रहण करें। यजमान वचन मांगता है, ब्राह्मण प्रतिवचन देता है)

गोत्रं नो वर्धताम्-वर्धताम् वो गोत्रम्।

दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्-अभिवर्द्धन्तां वो दातारः।

वेदाश्चनोऽभिवर्द्धधन्ताम्-अभिवर्द्धन्तां वो वेदाः।

सन्ततिनोऽभिवर्द्धन्ताम्-अभिवर्द्धन्तां वः सन्तति।

Scanned with CamScanner

श्रद्धा च नो मा व्यगमत्-माव्यगमद्व: श्रद्धा।
बहुदेयं च नो स्तु-अस्तु वो बहुदेयम्।
अन्नं च नो बहुभवेत्-भवति वो बह्वन्नम्।
अतिथींश्च लभेमहि-अतिथींश्च लभध्वम्।
याचितारश्च न: सन्तु-सन्तु वो या चितार:।
एता आशिषं सत्या: सन्तु-सन्त्वेता: सत्या आशिष:।

दक्षिणादानम्-

(ब्राह्मणों को द्रव्य-दक्षिणा, जव, द्राक्ष, आंवले-फल-पुष्प देवे)

ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्य: कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थ द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥1॥

गोत्रेभ्य: नान्दीमुखेभ्य: पितृपितामह प्रपितामहेभ्य: सपत्नीकेभ्य: कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थ द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणा दातुमदमुत्सृजे॥2॥

द्वितीयगोत्रेभ्य: नान्दीमुखेभ्य: मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्य: स्पत्नीकेभ्य: कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थ द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥3॥

फिर बुटन् (चट) के आगे अर्ध्यदान करते हुए इन दो मन्त्रों को पढ़े।

ॐ उपास्मैगायतानर: पवमानायेन्दवे। अभिदेवांऽइयक्षते॥1॥

ॐ इडामग्नेपुरूद ठं स ठं सनिंगो श श्ववत्तम ठं हवामानायसाध।
स्थान्न: सूनुस्तनयो विजावाग्ने साते सुमतिर्भूत्वमस्ये॥2॥

अब यजमान कहे-नान्दी श्राद्ध सम्पन्न। ब्राह्मण कहे-सुसम्पन्नम्।

अब यजमान कहे-तेन श्रीकर्मांग देवता: प्रीयन्ताम् वृद्धि:। ॐ विश्वेदेवा: प्रीयन्ताम्।

देव विसर्जनम्-

ॐ वाजेवाजेवतवाजिनो नोधनेषुविप्राऽअमृताऽऋतज्ञा:।
अस्यमद्ध्व: पिवतमादयध्वं तृप्तायातपथिमिर्द्धेवयानै:॥

इतना कहकर जल छोड़े घंटा बजाते हुए विश्वेदेव देवता का विसर्जन करे।

Scanned with CamScanner

पितृविसर्जनम्-

ॐ आमाव्वाज्यस्यप्रसवो जगम्यादेमेद्द्यावापृथिवीव्विश्वरूपे। आमागन्तां पितरामातराचामासोमाऽअमृतत्त्वेनगम्यात्॥

(पितरों के चट्टों की ओर घंटा बजाते हुए उनका विसर्जन करे।) यजमान हाथ में जल ले।

मयाऽऽचरितऽस्मिन्सांकल्पिक नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीनान्दीमुखप्रसादश्च सर्वम् परिपूर्णोस्तु।

ब्राह्मण कहे-अस्तु परिपूर्णम्

अनेन सांकल्पिकाविधिना नान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम्।

Scanned with CamScanner

षोडशोपचार गणपति पूजनम्

ताम्रपात्र में गणपति की मूर्ति दूर्वासन पर विराजित करें, अथवा सुपारी पर पवित्र रक्तसूत्र वेष्टित कर गणपति बनावें। उस पर ध्यान केन्द्रित करते हुए आह्वान मुद्रा में यह मन्त्र पढ़ें।

1. आह्वान-

हे हेरम्ब त्वमेह्ये हि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः॥
नागास्य नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुशपरश्वधैः॥
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे॥

"हे माता पार्वती तथा त्रिलोचन महादेव के पुत्र हेरम्ब! आप आइए, आइए। आप सिद्धि और ऋिद्धि के पति हैं, तीन नेत्रों से सुशोभित हैं, लाखों का लाभ कराने वाले तथा पिता के भी पिता हैं, लक्ष और लाभ के पिता हैं, यहाँ पधारिए। आप गजानन हैं, नागमय हार धारण करते हैं, आपके चार भुजाएं हैं, आप गणों के राजा हैं, पाश, अंकुश और परशु आदि दिव्य निजी आयुध आपके हाथों की शोभा बढ़ाते हैं। मैं पूजन के लिए और अपने इस यज्ञ की रक्षा के लिए भी आपका आह्वान करता हूँ। यहाँ पधारकर आप पूजा ग्रहण करें और यज्ञ की रक्षा भी करें।"

ॐ गणानांत्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥

अथवा ॐ सहस्रशीर्षा (यजु. 23/19) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि ध्यायामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापन-

आह्वान के पश्चात् देवता का प्रतिष्ठापन करे-

Scanned with CamScanner

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्धातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों 3 प्रतिष्ठ॥ (यजु. 2/13)॥

अस्य प्राणा: प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राण: क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै, मामहेति च कश्चन॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नम: सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

कुंकुम से रंगे चावल गणेशजी पर चढ़ावें।

2. आसन-अर्पण-

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर दिव्य सिंहासन की भावना से पुष्प अर्पित करे-

विचित्ररत्नाचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।

स्वर्णसिंहासनं चारु गृहाण सुरपूजित॥

"देव पूजित गणेश! यह सुन्दर स्वर्णमय सिंहासन ग्रहण कीजिए। इसमें विचित्र रत्न जड़े गए हैं तथा इन पर दिव्य आस्तरण (बिछावन) पड़ा हुआ है।" लाल पुष्प या दूर्वांकुर गणेशजी के नीचे आसन रूप में रखना।

ॐ पुरुषऽएवेदं ॐ सर्वंयद्भूतं यच्चभाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ (यजु. 31/2) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नम:, आसनं समर्पयामि।

3. पाद्यम्-

इसके बाद निम्नांकित मन्त्र से गणेशजी के पादप्रक्षालन के लिए पाद्य अर्पित करें-

ॐ सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।

विघ्नराज गृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल॥

"भक्तवत्सल भगवान् विघ्नराज! यह सब तीर्थों के जल से तैयार किया गया गन्ध आदि से मिश्रित पाद्य जल आप ग्रहण कीजिए।"

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुष:। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतंदिवि॥ (यजु. 3/3)

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नम: पादयो: पाद्यं समर्पयामि।

4. अर्घ्य-दान-

तदन्तर गन्ध आदि से युक्त अर्घ्य-जल अर्पित करें और निम्नांकित मन्त्र पढ़े-

Scanned with CamScanner

ॐ गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

"करुणानिधान गणाध्यक्ष! आपको नमस्कार है। आप गन्ध, पुष्प, अक्षत और फल आदि से युक्त यह अर्घ्यजल[1] आप स्वीकार करें।"

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ्व्यक्रमत्साशनानशनेऽअभि॥ (यजु, 31/4) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

5. आचमनीय-अर्पण-

इसके अनन्तर गंगाजल से आचमन कराए और नीचे दिया हुआ मन्त्र पढ़े-

विनायकं नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दितः।
गंगोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

"देवेश्वर! देववन्दित प्रभो! विनायक! आपको नमस्कार है। आप गंगाजल से आचमन करें।"

ॐ ततोव्विराडजायत व्विराजोऽअधि पुरुषः॥ स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (यजुः 21/5)

ॐ सिद्धिबुद्धिसाहित्य महागणपतये नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

ठण्डा जल कपूर से सुवासित कर आचमनी में लेकर देवता के मुख के पास ले जाकर निवेदन करना ही आचमनीय कहलाता है।

6. स्नानीय-समर्पण-

तदनन्तर नीचे दिए हुए मन्त्र को बोलकर गंगाजल से स्नान कराने की भावना से स्नानीय जल अर्पित करे-

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"देव! मन्दाकिनी (गंगा का जो जल समस्त पापहारी और प्रभु है, वही) आपके स्नान के लिए प्रस्तुत किया गया है, आप स्वीकार करें।"

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्। पशूंस्तांश्चक्रेवायव्यानारण्या

---

1. आपः क्षिरं कुशाग्राणिदधि कुंकुम अक्षताः।
दूर्वा सर्षपाश्चैव अष्टाङ्गो अर्घ्य उच्यते॥

अर्थात् जल, दूध, कुश, दधि, कुंकुम, अक्षत, दूर्वा, सरसों इनको ताम्रपात्र (अर्घ्यपात्र) में देवता के पैरों में चढ़ाना ही अर्घ्य कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

ग्राम्याश्चये॥ (यजु: 31/6)

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, सर्वाङ्गे स्नानं समर्पयामि।

पहले शुद्ध जल से, फिर पंचामृत से पुनः शुद्ध जल से देवप्रतिमा को यथाविधि स्नान कराना चाहिए।

पञ्चामृत-स्नान-

इसके बाद नीचे लिखे मंत्र को पढ़कर पञ्चामृत से गणपति देव कों स्नान कराए।

पंचामृतं मयाऽनीत पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा व समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"प्रभो! दूध, दही, घी, मधु और शर्करा को एकत्र मिलाकर तैयार किया गया यह पंचामृत मैं ले आया हूं। इसे आप स्नान के लिए ग्रहण करें।"

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः। सरस्वतीतु पंचधासो देशेऽभवत्सरित्॥ (यजु: 34/11) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नान समर्पयामि।

इसके बाद दूध, दही आदि से पृथक्-पृथक् स्नान कराकर शुद्ध जल से भी स्नान कराना चाहिए। दूध से स्नान कराने के लिए मन्त्र निम्नलिखित है-

पयः स्नान-

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

"प्रभो! कामधेनु के थन से प्रकट, सबके लिए परम-जीवन पवित्र तथा यज्ञ का हेतुभूत दूध आपको स्नान के लिए अर्पित है।"

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽऔषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ (यजु. 18/36)

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, पयः स्नानं समर्पयामि।

दधि स्नान-

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"देव! यह दूध से उत्पन्न, मीठा-खट्टा, चन्द्रमा की कान्ति के समान उज्ज्वल दही मैं लाया हूं, आप इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।"

Scanned with CamScanner

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्त्प्रणआयूँ षि तारिषत्॥ (यजु. 23/32) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।

घृत स्नान-

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"हे भगवान! नवनीत (मक्खन) से उत्पन्न तथा सबको सन्तुष्ट करने वाला यह घृत, मैं आपको अर्पित करता हूँ। इसे आप स्नान के लिए स्वीकार करें।"

ॐ घृतंघृतपावानः पिबतव्वसांव्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्यहविरसि स्वाहा। दिशः प्प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽद्दिशोदिग्ग्भ्यः स्वाहा॥ (यजु. 19/6)

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।
घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

मधु स्नान-

पुष्परेणुसमुद्भूत सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"प्रभो! यह पुष्प के पराग से प्रकट और तेज की पुष्टि करने वाला दिव्य सुस्वादु, मधुर मधु आपकी सेवा में प्रस्तुत है। आप इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।"

ॐ मधुं वाताऽऋतायते मधुक्षरन्तिसिन्धवः। माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥1॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्त्पार्थिव ठं. रजः। मधुद्द्यौरस्तु नः पिता॥2॥ मधुमान्नोव्वनस्पतिर्मधुमाँ 2ऽअस्तुसूर्य्यः। माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥ (यजु. 13/27-29)

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, मधुस्नानं समर्पयामि।
मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा-स्नान-

इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभां।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"जो ईख के सार तत्त्व से बनी है, पुष्टि देने वाली तथा मैल को दूर कर

Scanned with CamScanner

देने वाली है। वह दिव्य शर्करा आपकी सेवा में प्रस्तुत है, आप इसे स्नान के लिए स्वीकार करें।

ॐ अपां ॐ रसमुद्वयस ॐ सूर्येसन्त ॐ समाहितम्। अपा ॐ रसस्य योरसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वाजुष्टागृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥ (यजु. 9/3) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

इसके बाद सुगन्ध तैल (इत्र) आदि अर्पित करें-

मांगलिक स्नान-(सुवासित तैल एवं इत्र)

चम्पकाशोकबकुलमालतीमोगरादिभिः।
वासितं स्निग्धताहेतुं तैलं च प्रतिग्रह्यताम्॥

"प्रभो! चम्पा, अशोक, मौलश्री, मालती और मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट हेतुभूत यह सुन्दर तैल आप ग्रहण करें।"

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, सुवासितं तैलं समर्पयामि।

मलयाचल संभूतं चन्दनागरु संभवम्।
चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गन्धर्वस्त्वा व्विश्वावसुः परिदधातु। व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधि रस्यग्निरिडऽईडितः॥ (2/3)॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धिऋद्धि सहिताय महागणपतये नमः गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।

नाना सुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ अ ॐ शुनातेंऽअ ॐ शुः पृच्यताम्परुषापरुः॥ गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः॥ 27-20 ॥

शुद्धोदक स्नान-

(घण्टा बजावें)

तदन्तर गंगाजल से या तीर्थ जल से शुद्ध स्नान कराएं। मन्त्र निम्नलिखित है-

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

Scanned with CamScanner

इस शुद्ध जल के रूप में यहां गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी उपस्थित है, आप स्नान के लिए जल ग्रहण करें।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः॥ उशतीरिव मातरः॥ 59/11॥ तस्माऽअरंग मामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ॥ आपोजन यथाचनः॥ 52/11॥ (यजु. 11/50) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

स्नानांग पूजा-

ॐ भूर्भुवः स्वः महागणाधिपतये नमः (बोलते हुए)

1. वस्त्रोपवस्त्रार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
2. यज्ञोपवीतार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
3. गंधं समर्पयामि।
4. पुष्पाणि समर्पयामि।
5. धूपम् आघ्रापयामि।
6. दीपं दर्शयामि।
7. शर्करोपहार नैवेद्यम् निवेदयामि।
8. नैवेद्यमध्ये पानीयं समर्पयामि।
9. नैवेद्यान्ते हस्तप्रक्षालनं, मुखप्रक्षालनं समर्पयामि।
10. करोद्वर्तनार्थे चंदन समर्पयामि।
11. मुखवासार्थे पूंगीफलं, ताम्बूलं च समर्पयामि।
12. हिरण्यमुद्रां दक्षिणां समर्पयामि।
13. कर्पूरार्तिक्यं दर्शयामि।
14. प्रदक्षिणां समर्पयामि।
15. प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि।
16. क्षमापनं निवेदयामि।

ततो निर्माल्यम् उत्तरे विसृज्य गन्धाक्षतपुष्पाणिपत्राणि वा समर्प्य अभिषेकं कुर्यात्।

फिर पूजन का सारा जलादि उत्तर में विसर्जित करके वापस गन्धादि चढ़ाकर शुद्ध जल से गणपति का एवं उपस्थित देवों का अभिषेक करें। गणपति का अभिषेक "गणपति अथर्वशीर्ष" से अथवा सहस्रशीर्षा के सोलह मन्त्रों से करें।

Scanned with CamScanner

अथ गणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। एव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अब पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात् अब दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्गयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदान्दो द्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽतनलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा, त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिंद्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं चन्द्रमारस्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्। गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरूत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। स ठं हिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्रीछन्दः। गणपतिर्देवता।। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। रदं च वरदं हस्तेविभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तंलम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।

रक्तगन्धानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतैः पुरुषात्परम्।। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रथमपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।। एकतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पंचमहापापात्मुच्यते।। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।

Scanned with CamScanner

सायम्प्रात: प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्ममर्थं कामं मोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति। स पापीयान्भवति।। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्।। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान्भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यान्न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वांकुरैर्यजति। स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति। स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति। स वांछितफलमवाप्नोति। य: साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषात्प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात्प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति य एवं वेद।। इत्युपनिषत्।।

।। इति गणपत्यथर्वशीर्षम् ।।

तब श्री गणपति को पोंछकर शुद्धासन या स्थापित पीठ पर विराजमान करें। फिर वस्त्रादि से उत्तर पूजन करें।

7. वस्त्र समर्पण-(उत्तर पूजा)

शीतवातोष्णसंत्राणं सलज्जारक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रमत: शान्तिं प्रयच्छ मे।।

"प्रभो! यह वस्त्र आपकी सेवा में अर्पित है। यह सर्दी, हवा और गर्मी से बचाने वाला, लज्जा का उत्तम रक्षक तथा शरीर का अलंकार है, आप इसे स्वीकार करके मुझे शान्ति प्रदान करें।"

ॐ युवा सुवासा: परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमान:। तं धीरास: कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो 3 मनसा देवयन्त:।। ॐ तस्मात्यज्ञात्सर्व. (ऋ. 3/8/4) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नम:, वस्त्रं समर्पयामि।

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नम:, आचमनं समर्पयामि। स्नाने वस्त्रे च नैवेद्ये दद्यादाचमन तथा। चकाराद्यज्ञोपवीतान्तेऽपि दद्यात्। (1) स्नान (2) वस्त्र (3) नैवेद्य (4) यज्ञोपवीत-इन सबके बाद भी आचमन देना चाहिए।

उपवस्त्र (उत्तरीय) समर्पण-

उत्तरीयं तथा देव नानाचित्रितमुत्तमम्।
गृहणेदं मया भक्तया दत्तं तत् सफलीकुरु।।

Scanned with CamScanner

"हे देव! नाना प्रकार के चित्रों (बेल-बूटों) से सुशोभित यह उत्तम उत्तरीय वस्त्र मैंने भक्तिपूर्वक आपको अर्पित किया है, आप इसे ग्रहण करें और सफल बनाएं।"

ॐ सुजातोज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदत्स्वः। व्वासोऽअग्ने विश्वरूपं ॐ संव्ययस्व विभावसो॥ (यजु. 11/40)

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः उपवस्त्रं समर्पयामि। तदन्ते आचमनीयं समर्पयामि।

(वस्त्र के अभाव में लाल सूत एवं अलंकरण के लिए अक्षत् चढ़ाना चाहिए।)

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।

अलंकरण-

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय माहगणपतये नमः, अलंकरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीत-समर्पण-

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

"परमेश्वर! नौ तन्तुओं से युक्त, त्रिगुण और देवता स्वरूप यह यज्ञोपवीत मैंने आपको समर्पित किया है। आप इसे ग्रहण करें।"

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्॥
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु। तेजः॥

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनं समर्पयामि।

गन्ध

श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

"सुरश्रेष्ठ! यह दिव्य श्रीखण्ड चन्दन, सुगन्ध से परिपूर्ण एवं मनोहर है। विलेपनस्वरूप यह चन्दन आप स्वीकार करें।"

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनंत्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥ (यजु. 12/98) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपते नमः, चन्दनं समर्पयामि।

Scanned with CamScanner

अक्षत-

अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाश्च सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

"सुरश्रेष्ठ परमेश्वर! ये कुंकुम में रंगे हुए सुन्दर अक्षत हैं, मैंने भक्ति-भाव से इन्हें आपकी सेवा में अर्पित किया है। आप इन्हें ग्रहण करें।"

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी। (यजु. 3/51) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प-माला-

माल्यदीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

"प्रभो! मालती आदि की सुगन्धित मालाएँ और पुष्प मेरे द्वारा लाए गए हैं, आप इन्हें पूजार्थ ग्रहण करें।"

ॐ औषधीः प्रतिमोदध्वंपुष्पवतीः प्रसूवरीः अश्वाऽइवसजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः॥ (यजु. 12/77) ॐ यत्पुरुष ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

मन्दार-पुष्प-

वन्दनाजनमन्दार मन्दारप्रिय धीपते।
मन्दारजानि पुष्पाणि श्वेतार्कादीन्युपेहि भोः।

"हे वन्दन करने वाले भक्तों के लिए मन्दार (कल्पवृक्ष) के समान कामनापूरक मन्दारप्रिय! बुद्धिपते गणेश! मन्दार के श्वेत आक आदि के पुष्प आप ग्रहण कीजिए।"

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, मन्दार पुष्पाणि समर्पयामि।

शमीपत्र-

त्वत्प्रियाणी सुपुष्पाणि कोमलानि शुभानि वै।
शमीदलानि हेरम्ब गृहाण गणनायक॥

"गणनायक हेरम्ब! आपके जो प्रिय सुन्दर पुष्प तथा कोमल शुभ शमीपत्र हैं, उन्हें ग्रहण कीजिए।"

Scanned with CamScanner

ॐ य इन्द्राय वचोयुजा ततक्षुर्मनसा हरी। शमीभिर्यज्ञमाशत।। (ऋग. 1/20/2) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, शमीपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुर-

दूर्वाङ्कुर सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।

"गणनायक! आपकी पूजा के लिए मेरे द्वारा अत्यन्त हरे, अमृतमय तथा मंगलप्रद दूर्वाङ्कुर लाए गए हैं, आप इन्हें स्वीकार करें।"

ॐ काण्डात्काडात्प्ररोहन्तीपुरुषः परुषस्परि। एवानोदूर्वेत्प्र तनु सहस्रेण शतेन च।। (यजु. 13/20) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, दूर्वाङ्कुरान्समर्पयामि। अत्र दुर्वाङ्कुरैः पूजनम्। विशेष सिद्धि हेतु नाम लेकर दूर्वा चढ़ावें।

1. गणाधिपाय नमः।।
2. उमापुत्राय नमः।।
3. अघनाशाय नमः।।
4. विनायकाय नमः।।
5. ईशपुत्राय नमः।।
6. सर्वसिद्धि प्रदाय नमः।।
7. एकदत्ताय नमः।।
8. इभवक्राय नमः।।
9. मूसकवाहनाय नमः।।
10. कुमार गुरवे नमः।।

गणाधिप नमस्तेस्तु उमापुत्रोधनाशन।
विनायकेश पुत्रेति सर्वसिद्धि प्रदायक।।
एकदत्ततेभवक्रेति तथा मूषकवाहन।
कुमार गुरवे भक्त्या जीता दूर्वाम् गृहाण मे।।
ततो बिल्वपत्रम्-फिर बेल पत्र चढ़ा दे।

सिन्दूर-

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

Scanned with CamScanner

"प्रभो! सुन्दर लाल सौभाग्यस्वरूप सुखवर्धक शुभद एवं कामपूरक सिन्दूर आपकी सेवा में प्रस्तुत है, आप इसे ग्रहण करें।"

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥ (यजु. 17/95)

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमलद्रव्य, अबीर चूर्ण-

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धाढ्यं चारु गृह्यताम्॥

"भांति-भांति के सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित यह गन्धयुक्त अबीर नामक सुन्दर तथा उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिए।"

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति वाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ठं सं परिपातु विश्श्वतः॥ (यजु. 29/51) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दशांग धूप-(घण्टा बजाकर करें)

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

"वनस्पति के रस से प्रकट, सुगन्धित, उत्तम गन्धरूप और समस्त देवताओं के सूंघने योग्य यह धूप आपकी सेवा में अर्पित है। आप इसे ग्रहण करें।"

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तंयोस्मान्धूर्वति तं धूर्वयं वयंधूर्वामः।देवानामसि वहिन्नतमं ठं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥ (यजु. 1/8) ॐ ब्राह्मणोस्य ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः धूपमाघ्रार्पयामि।

दीप दर्शन-(घण्टा बजावें)

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्ताया दीपं प्रयच्छामि परमात्मने।
त्राहि मां तिमिराद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

"देवेश! घी में डुबोई रूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्वलित करके दीप आपकी सेवा में अर्पित किया गया है, आप इसे ग्रहण करें। यह त्रिभुवन के अन्धकार को दूर करने वाला है। मैं इष्ट देवता परमात्मा गणपति को दीप देता

Scanned with CamScanner

हूँ। प्रभो! आप मुझे घोर नरक के अन्धकार से बचाइए। दीपज्योतिर्मय देव! आपको नमस्कार है।"

ॐ अग्निर्ज्योतिज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ (यजु. 3/9) ॐ चन्द्रमा. ऊ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य निवेदन-

दीप अर्पण के पश्चात् हाथ धोकर नैवेद्य अर्पण करें। नैवेद्य में भांति-भांति के मोदक, गुड़ तथा ऋतु के अनुकूल उपलब्ध नाना प्रकार के उत्तमोत्तम फल प्रस्तुत करें। नैवेद्य में देय वस्तु का पहले शु-जल से प्रोक्षण करें। फिर धेनु-मुद्रा दिखाकर देवता के सन्मुख स्थापित करें। इसके बाद निम्नांकित मन्त्र को पढ़ें-

नैवेद्य गृह्यतां देव भक्तिं में ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्रं च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

"देव! आप नैवेद्य ग्रहण करें और अपने प्रति मेरी भक्ति को अविचल कीजिए। वांच्छित वर दीजिए और परलोक में परम गति प्रदान कीजिए। शक्कर और खाँड से तैयार किए गए खाद्य पदार्थ, दही, दूध, घी तथा भक्ष्य भोज्य आहार नैवेद्य के रूप में प्रस्तुत हैं, आप यह नैवेद्य कृपापूर्वक स्वीकार करें।"

ॐ नाभ्याऽआसी दन्तरिक्ष ठं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाद् 2 अकल्पयन्॥ (यजु. 31/13) नैवेद्यं गायत्री मंत्रेण संप्रोक्ष्य, तुलसीदलं धेनुमुद्रया अमृतीकृत्यं प्रदर्श्य निवेदयेत् निधाय ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, नैवेद्यं मोदकादीनि ऋतुफलानि च समर्पयामि।

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, आचमनीयं मध्ये पानीयं, उत्तरापोशानं हस्तप्रक्षालनं, मखु प्रक्षालनं, अन्ते आचमनीयं च समर्पयामि॥

(नैवेद्यान्न अग्नि को भी निवेदित करें।)

करोद्वर्तन के लिए चन्दन-

ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमे श्वर॥

Scanned with CamScanner

"देव! मलयपर्वत से उत्पन्न चन्दन में कस्तूरी आदि मिलाकर मैंने करोद्वर्तन तैयार किया है। हे परमेश्वर! आप इसे स्वीकार करें।"

अं ठ शुना ते अं ठंशुः पृच्यतां परुषां परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः (यजुः 20/27) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

पूंगी फलादिसहित ताम्बूल अर्पण-

ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

"प्रभो! महान् दिव्य पूंगीफल, इलायची और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा आपकी सेवा में प्रस्तुत है, आप इसे ग्रहण करें।"

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतवन्त। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (यजु, 31/14) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, मुखवासार्थमेलापूंगीफलादिसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

नारिकेलफल-अर्पणम्-

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

"देव! यह नारियल का फल मैंने आपके सामने रखा है, इससे जन्म-जन्मान्तर में मुझे सफलता प्राप्त हो।"

ॐ याः फलीनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वं ठ हसः॥ (यजु, 12/89) ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, नारिकेलफलं समर्पयामि।

दक्षिणा-समर्पण-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसो।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

"सुवर्ण हिरण्यगर्भ ब्रह्मा के गर्भ में स्थित अग्नि का बीज है। वह अनन्त पुण्य-फल प्रदान करने वाला है। भगवान्! वह आपकी सेवा में अर्पित है, अतः इसे स्वीकार कर मुझे शान्ति प्रदान करें।"

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ (यजु, 13)।

Scanned with CamScanner

ॐ यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः।
तदग्नि वैश्वकर्म्माणः स्वर्देवेषु नो दधत्॥ 64/18 ॥

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः कृताया पूजायाः सद्गुण्यार्थ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

> टिप्पणी-तुलसी गन्ध पुष्पैक्य सम्पूज्यान्नं हरेः प्रियम्। सम्प्रोक्ष्यार्ध्यजलेनैव संरक्ष्या स्त्रेत्र सर्वदा। धेनुमुद्रां प्रदशर्य ततो देवं निवेदयेत्॥ वै श्वदेवं पुराकृत्वा नित्ये चाभ्युदयेतथा। स्वाभीष्ठ देवतादिभ्यो नैवेद्यं च निवेदयेत् अकृत्वा वै श्वदेवं तु नैवेद्यं यो निवेदयेत्। तदन्नं न च गृह्णान्ति देवा विष्णवादयो ध्रुवम्।

नीराजन या आरार्तिक-(आरती)

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्ये पश्य से वरदो भव॥

"प्रभो! केले के गर्भ से उत्पन्न यह जलाया गया कपूर है, इसी के द्वारा मैं आपकी आरती करता हूँ। आप इसे देखिए और मेरे लिए वरदायक होइए।"

ॐ इदं ठ हविः प्रजननं में अस्तु, दशवीरं ँ सर्वगण ँ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनिः। अग्निः प्रजां बहुलां में करोत्वन्नं पयो रेत्तो अस्मासु धत्त॥ (यजु, 34/32)

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पांजलि-समर्पण-

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पांजलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर॥

"परमेश्वर! यथा समय उत्पन्न होने वाले नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प मैंने पुष्पांजलि के रूप में अर्पित किए हैं, आप इन्हें स्वीकार करें।

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

विशेषार्ध्य समर्पण-

तदन्तर जव, गन्ध, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा एक ताम्रमय पात्र में रखकर दोनों घुटनों को पृथ्वी पर टेक कर उक्त अर्ध्यपात्र (ताम्रपात्र) को दोनों हाथों की अंगुलियों में लेकर और उसे मस्तक से लगाकर निम्नांकित श्लोकों को पढ़ते हुए श्रीगणपति को अर्ध्य दे-

Scanned with CamScanner

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वांञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्ध्येण सफलोऽस्तु सदा मम॥

तीनों लोकों की रक्षा करने वाले गणाध्यक्ष! रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए। आप भक्तों को अभय देने वाले और भव-सागर से उनकी रक्षा करने वाले हैं। हे दयासागर! आप दो माताओं के पुत्र होने से "द्वैमातुर" कहे गए हैं।

प्रभो! आप षण्मातुर (छह मुखवाले) स्कन्द के बड़े भाई हैं, वरदाता हैं, वर दीजिए। अभीष्ट ऋतुओं के दाता गणेश! मेरी मनइच्छा पूर्ण कीजिए। इस फलयुक्त अर्ध्य-दान से आप मेरे लिए सफल-फलदाता हो जाइए।

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, विशेषार्ध्यं समर्पयामि।

टिप्पणी-जोधपुर के विद्वान् गणपति को दूर्वाङ्कुर चढ़ाते वक्त निम्न आठ नामों का प्रयोग भी करते हैं-

(1) ॐ गणाधिपाय नमः (2) ॐ उमापुत्राय नमः (3) ॐ अघनाशाय नमः (4) ॐ विनायकाय नमः (5) ॐ ईशपुत्राय नमः (6) सर्वसिद्धिप्रदाय नमः (7) ॐ कुमार गुरवे नमः (8) ॐ इभवक्त्राय नमः।

श्रीयज्ञ का विलक्षण चमत्कार विवाह के बीस वर्ष बाद पुत्र सन्तान

श्रीयज्ञ के विलक्षण चमत्कार का एक नया प्रमाण अभी-अभी मिला। आचार्य पुष्पा राघव के रिश्ते में दामाद श्री वाई.एन.एस. तोमर, सिंगापुर शिपिंग कॉर्पोरेशन में इंजीनियर के पद पर काम कर रहे हैं। उनकी पत्नी मिथिलेश से उन्हें विवाह के उपरान्त बीस वर्ष के बाद भी कोई सन्तान नहीं थी। डॉक्टरी परीक्षण से दोनों ही स्वस्थ थे। सन्तान न होने का कारण नजर नहीं आ रहा था।

1 जनवरी, 92 को सम्पन्न श्रीयज्ञ में आचार्य पुष्पा राघव ने सपरिवार भाग लिया था तथा 108 पवित्र यज्ञकुण्डों की भस्म अपेन साथ बम्बई ले गई थीं। यही यज्ञभस्म पूर्ण श्रद्धा व आत्म विश्वास के साथ श्री वाई.एम.एस. तोमर एवं पत्नी मिथिलेश को दी गई। साथ ही दृढ़ता के साथ आचार्य पुष्पा

Scanned with CamScanner

राघव ने कहा-"आपके लड़का ही होगा।" सच, ठीक नौ महीने बाद इंजीनियर तोमर के यहाँ बीस वर्ष के बाद पहली बार थाली बजी और उन्हें 'पुत्र रत्न' की प्राप्ति हुई।

Scanned with CamScanner

विशेष ज्ञातव्य

तत्पश्चात् गुप्त प्रार्थना, नमस्कार, अपराधक्षमापन करते हुए देवता का विसर्जन किया जाता है। यदि इनका पूजन गौण हो तथा प्रधान देवता कोई अन्य हो तो प्रधान देवता की उत्तर पूजन के पश्चात् ही अपराध क्षमापन एवं विसर्जन होता है।

पुरुषसूक्त के षोडश मन्त्र कोई भी देवता के वैदिक षोडशोपचार पूजन में काम आ सकते हैं। केवल महागणपतये की जगह अभीष्ट देवता का नाम चतुर्थी विभक्ति में लिया जाएगा। जैसे शिवाय नमः, अम्बिकायै नमः, विष्णवे नमः, सूर्याय नमः, इत्यादि।

जहां तक हो ब्रह्मकर्म में पुराणोक्त श्लोक काम में न लाकर, केवल वैदिक विधान से करे। ब्राह्मणेतर लोगों के लिए पुराणोक्त श्लोकों का विधान है। विस्तार से कर्म करना हो तो दोनों ही काम में ले सकते हैं।

विशेष टिप्पणी-

ब्राह्मवैष्णवरौद्रेस्तु सावित्रैर्मित्र वारुणेः।
तल्लिङ्गैरेव मन्त्रैस्तु ह्यर्चयेत्सुसमातिः॥

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अम्बा, सूर्य, वरुण इनके पूजन में इनसे सम्बन्धित सूक्तों का पाठ भी करना चाहिए।

षोडशोपचार पूजा में अलग-अलग देवताओं के अलग-अलग सूक्तों से की गई पूजा भी शास्त्रविहित है, परन्तु यजुर्वेदीय ऋषि 'पुरुषसूक्त' को ही सब प्रकार के देवताओं के पूजन के लिए सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।

यजुर्वेद के ऋषियों द्वारा सर्वत्र सर्वदेवपूजन में पुरुषसूक्त ही विहित है-

यथा-

आद्यया ऽऽवाहयेद्देवमृचा तु पुरुषोत्तम्।
द्वितीययाऽऽसनं दद्यात्पाद्यं चैव तृतीयया॥
अर्ध्यश्चतुर्थ्या दातव्यः पञ्चम्याऽचमनं तथा।
षष्ठ्यां स्ननं प्रकुर्वीत, सप्तम्यां वस्त्रधौतकम्॥
यज्ञोपवीतं चाष्टम्यां नवम्यां गन्धमेव च।
चतुर्दश्यां नमस्कारं, पञ्चदश्यां प्रदक्षिणाः॥

Scanned with CamScanner

षोडश्योद्वासनं कुर्याच्छेषकर्माणि पूर्ववत्।
तञ्चसर्वे जपेद्भूय: पौरुषं सूक्तमेव च॥

कौन कहता है यज्ञ की अग्नि में चमत्कार नहीं होता

किसी भी प्रकार की चिन्ता, कष्ट, रोग, व्यथा व कामना हो, तो संकल्प पूर्वक यज्ञ की मन्त्रपूत अग्नि में विधिवत लिखकर समर्पित करें और चमत्कार देखें। इसी प्रकार का 108 कुण्डीय 'श्रीयज्ञ' 1-1-92 को किया गया था। जिसमें 17 नि:सन्तान लोगों को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, धनहीनों को धन मिला, यहां तक कि गरीब लोगों को लॉटरी में भू-खण्ड मिला, एक मेघवाल को प्रेत-पीड़ा से मुक्ति मिली। काल वर्ष के बावजूद भी यज्ञ स्थाली के 50 कोस तक भरपूर बारिश एवं फसलें हुई।

स्थान - इण्टरनेशनल सोसायटी ऑफ श्रीयज्ञ
श्री विद्या यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना पीठ
उदय पैट्रोल पम्प के पास, कुड़ी-भगतासनी
मुख्य पाली रोड, नया जोधपुर (राज.)
दूरभाष : (0291) 31883

Scanned with CamScanner

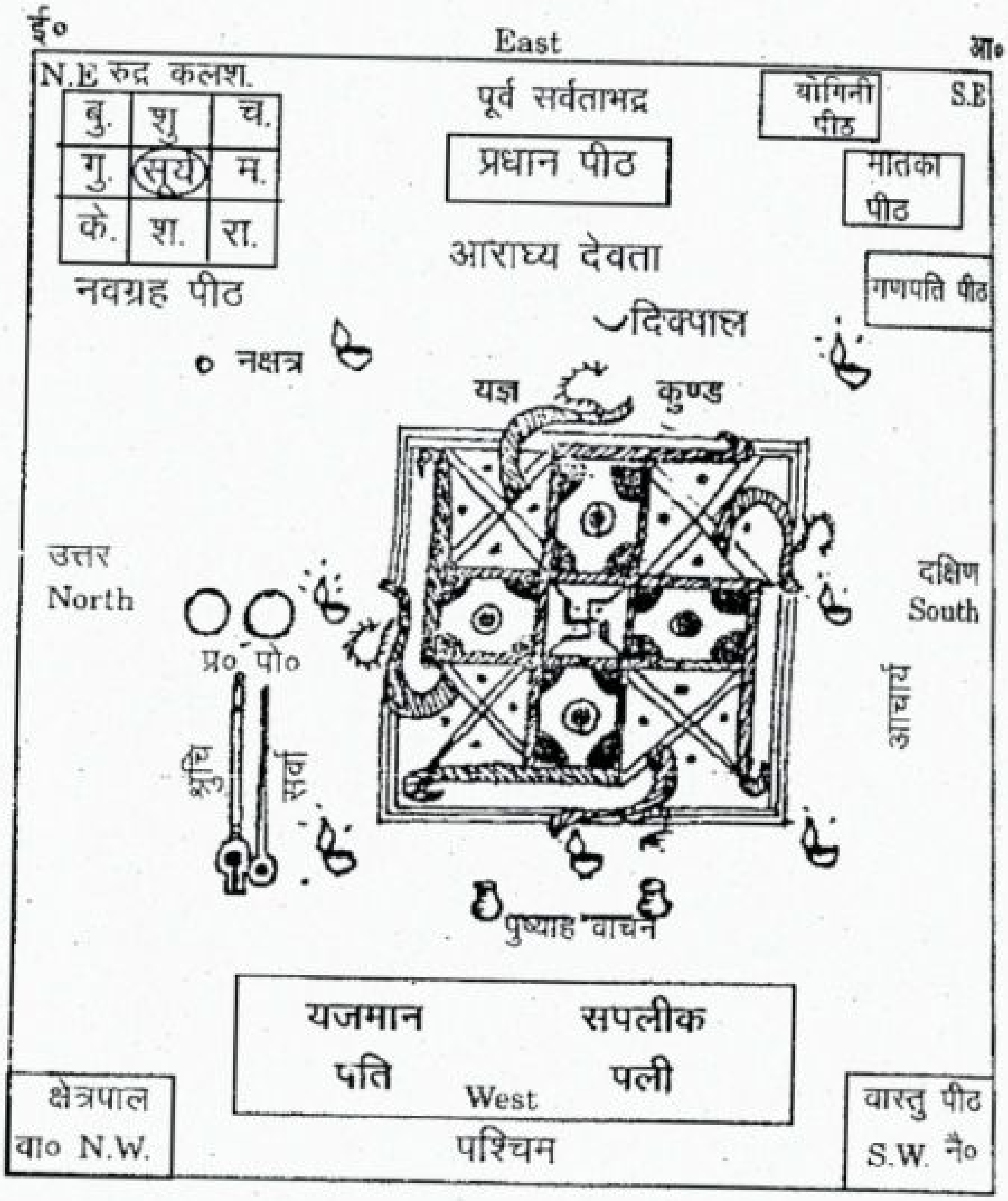

Scanned with CamScanner

॥ सर्वतोभद्रमंडलम् ॥

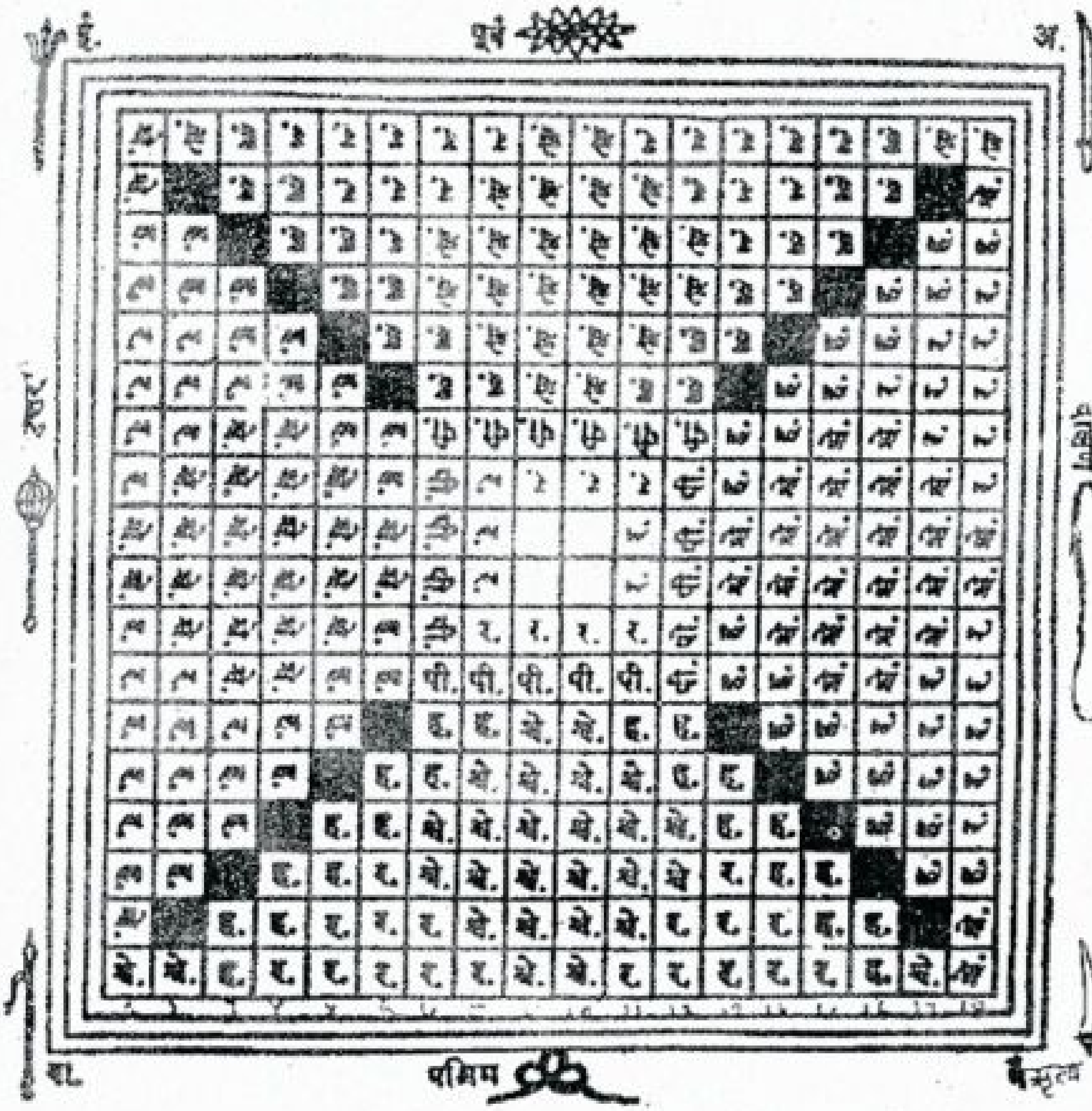

Scanned with CamScanner

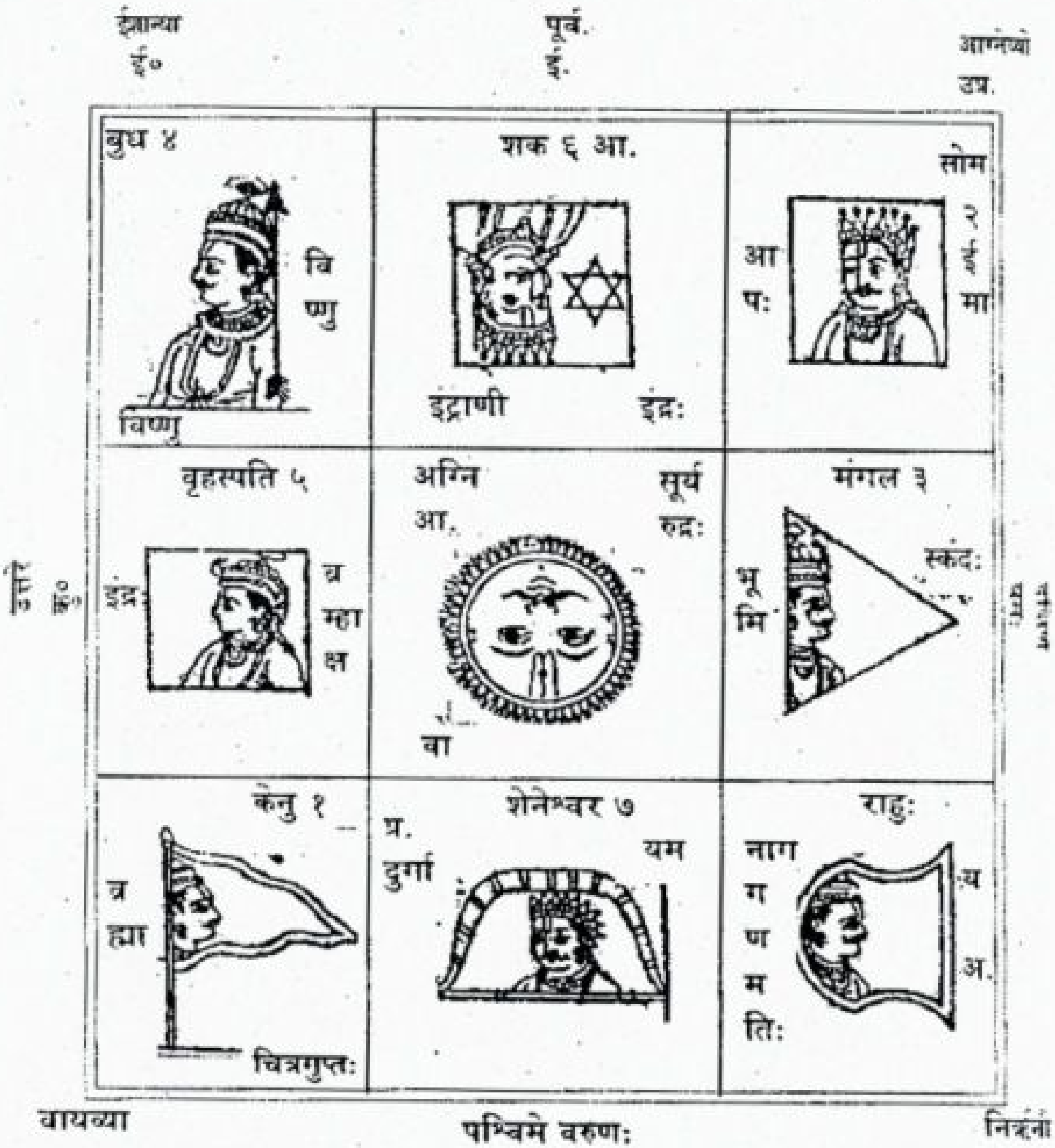

इद्रंस्कंदपुराणद्युक्तमधिदेवप्रत्यधिदेव सहितं नवग्रह मडलम्.

Scanned with CamScanner

अथ नवग्रह-स्थापनम् (ग्रह-मण्डल)

आचम्य प्राणानायम्य संकल्पः

तत्राद्यौ शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः यजमानस्य वा जन्मराशेः नामराशेः सकाशाद्वा जन्मलग्नाद् वर्षलग्नाद्वा चतुर्थाष्टमद्वादशादि अनिष्टस्थानस्थित-नवग्रहपीडापरिहारद्वारा तृतीयैकादशस्थान-स्थित ग्रहस्य शुभफल प्राप्त्यर्थम् आयुष्यारोग्यप्राप्त्यर्थं नवग्रहस्थापनं अहं करिष्ये।

लकड़ी के पवित्र पीठ (बाजोट) पर सवा हाथ (मीटर) सफेद वस्त्र बिछावे। उस पर चावल या पंचमेवा से नौ कोष्ठक (कोठे) बनावे। इसे कमलाकृति में भी बना सकते हैं अथवा चमचौरस भी बना सकते हैं। परन्तु बीचोंबीच सूर्य वाले कोष्ठक में वरुणकलश की स्थापना होती है। नौ कोष्ठक में नौ सुपारियां रखें। हाथ में चावल लेकर प्रत्येक ग्रह का क्रमशः आह्वान करके सुपारी पर चावलों से प्राणप्रतिष्ठा करें। फल-पुष्प-नैवेद्य दक्षिणा अर्पित करें। घृत 4, चरु 2, तिल 2, प्रतिग्रह 16, अर्क 8 समिध।

रवि

फल-द्राक्षा कपिल अग्नि

उदयं तं महातेज तेजस्वी अभयप्रदं
दुर्निरक्षसुगमनं सूर्यमावह्वयाम्यहम्॥1॥
भो भो सूर्यगृहाध्यक्ष कलिंगविषयोद्भवः
रक्त काश्यप गोत्रेय द्विभुज-पद्मलोचनः॥2॥
सप्ता श्ववाहनागच्छ पद्ममध्येवरप्रदः
अग्निंदूतेति मन्त्रेय रुद्ररूपीप्रतिष्ठित॥3॥
ॐ अग्निंदूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रूवे
देवां 2 आसादयादिह ॥ 22/17॥

सूर्य यंत्र

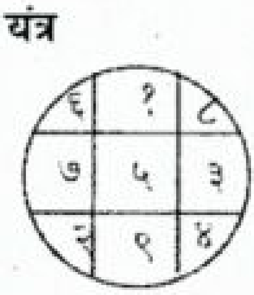

मध्ये सूर्यं स्थापयामि-

ॐ
आकृष्णेनरजसावर्त्तमानो-निवेशयन्नमृतम्मर्त्यंच, हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥5॥

Scanned with CamScanner

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।[1]

नमस्कार - जवाकुसुमसंकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

चन्द्रः-

चन्द्र

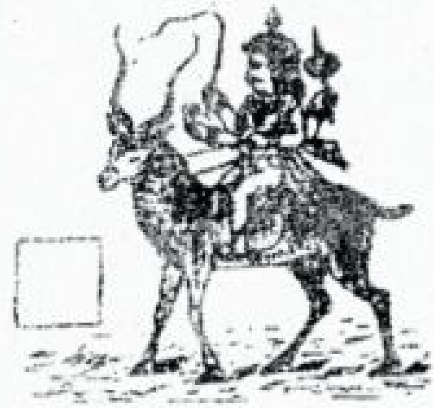

पिंगल नामाग्नि
समिधा-पलाश, फल-इक्षु

द्विजराज सुरश्रेष्ठ तारापत्यश्सु नन्दनः।[2]
औषधीनां सुगमनं सोमववहयाम्यहम्॥1॥
अहोचन्द्रः जगत्प्राण यमुनाविषयोद्भवः।
स श्वेतात्रिगोत्रेय गदापाणी वरप्रदः॥2॥
दशाश्ववाहनायाहि उमारूपीसमांविशः।
हुताशनदलेनेवं मंत्रेणा अश्वग्निनार्चितः॥3॥
ॐ अश्वग्नेसमीधीष्ट वसोषधीरनुध्यसे।
गर्भेसंजायसे पुनः॥4॥
अग्नि कोणे सोमं स्थापयामि-
ॐ इमन्देवाऽअसपत्क्न ठ सुवद्ध्वम्महते
क्षत्राय महतेज्जयैष्ठ्यायमहते
जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्यपुत्र-ममुष्यै
पुत्रमस्यैविशऽएषवोमीराजा सोमो स्म्माक-
म्ब्राह्मणाना ठ राजा॥5॥

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ श्राँ श्राँ श्राँ सः चन्द्राय नमः।

चन्द्र यंत्र

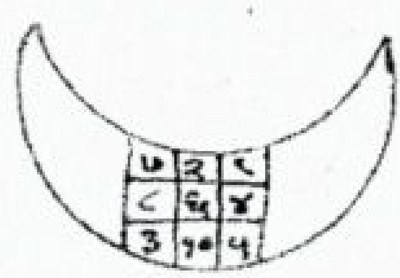

नमस्कार - दधिशंखतुषाराभं
क्षीरोदार्णवसन्निभम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥
निर्जितारं च शत्रुणां यजमानाधिदेवताः।
भौम
ऋषिभिः स्तूयमानं च भौमवाह्याम्यहम्॥1॥

---

1. सूर्य मन्त्र - जपसंख्या 7,000 रत्न-माणिक्य, समिधा-अर्क, दान-गेहूं, गाय रक्तवस्त्र, गुड, सुवर्ण, मात्र, रक्त-चन्दन, रक्त-कमल।
2. चन्द्र मन्त्र - जपसंख्या 11,000, रत्न मोती, समिधा-पलाश, दान-वंशपात्र,चावल, कपूर, मोती, श्वेतवस्त्र, वृषभ, चांदी, धृतकुम्भ, शंख।

Scanned with CamScanner

उज्जयिन्यां समुत्पन्नो भोभो भौमश्चतुर्भुजः।
भारद्वाजकुले जात शूलशक्तिगदाधरः।।2।।
वरदो मेषमारुढः स्कन्दप्रावृड्तडित्प्रभो।
स्योना पृथ्वीति मन्त्रेण दलेयाम्ये प्रतिष्ठितः।।3
ॐ स्योनापृथिवीनोभवान्क्षरानिवेशनी-
पृच्छानः शर्म्मसप्रथाः।।4।।
दक्षिणे भौमं स्थापयामि-
ॐ अग्निमूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम
अपा ठ रेता ठ सिजिन्वति।।3/12।।
तान्त्रिक मन्त्र - ॐ क्राँ क्रीं क्रौ सः भौमा
नमः।
नमस्कार - धरणीगर्भसम्भूतं
विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिदत्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।[1]

मंगल

धूमकेतु नामाग्नि, समिधा, खैर (खदिर), फल-सुपारी

मंगल यंत्र

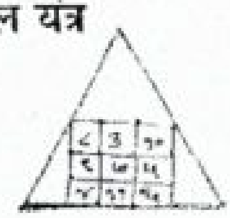

बुधोबुद्धिप्रदाता च सौम्यदृष्टिर्महायशः
यजमान-हितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम्।।1।।[2]
अहो चन्द्र सुतः श्रीमान् मागधायसमुद्भवः।
अत्रिगोत्रः चतुर्बाहुः खड्गखेटक धारकः।।2।।
गदावरदसिंहस्य सुवर्णाभश्समाविश।
कृष्णवर्दि सपत्रे च इदं विष्णु प्रपूजयेत्।।3।।
ॐ इदं विष्णुविचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्।
समूढमस्यपा ठꣳ सुरे स्वाहा।।5/15।।
इशाने बुधं स्थापयामि-
ॐ उद्बुद्धयस्वाग्नेप्रतिजागृहि-
त्वमिष्टापूर्तेषु ठ सृजेथाममंच।
अस्मिन्सधास्त्थे अद्ध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा
यजमानश्चसीदत।।5/54।।
तान्त्रिक मन्त्र - ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं बुधाय नमः
नमस्कार - प्रियंगुकलिकाश्यामं
रूपेणाप्रतिमं बुधम्।

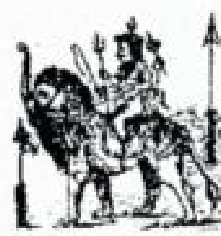

अग्नि-जठराग्नि, समिधा -अपामार्ग, आंधी झाड़ा

बुध यंत्र

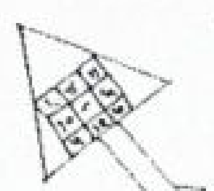

---

1. मंगल मन्त्र - जपसंख्या 10,000, रत्न-प्रकाल, समिधा दान-गेहूँ, मसूर, लालवृष, गुड़, सुवर्ण, ताम्र, रक्तवस्त्र, कठोर।
2. बुधमंत्र- जपसंख्या, 4,000 रत्न 4-75 समिधा- अपामार्ग, दान-मूंग, नीले वस्त्र, कांस्य कस्तूरी, घी, पंचरत्न, हाथी दासी।

Scanned with CamScanner

सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।[1]

बुध्यायस्यसमोनास्ति देवतानां च पुरोहित:।
त्राता च सर्वदेवानां गुरुमावह्याम्यहम्।।1।।
अहो वाचस्पतेपीत संजात: सिन्धुमण्डले।
एह्या गिरसगोत्रेय हयारूढचतुर्भुज:।।2।।
दंडाक्षसूत्रवरद: कमण्डलुधरप्रभो।
महाइन्द्रेति संपूज्यो विधवत्युत्तरेदले।।3।।
ॐ महाइन्द्रोवज्रहस्त: षोडशीशर्म्ययच्छतु
हंतुपाप्मानं योस्यान्द्वेष्टियं च वयं द्विष्म:।।26/10
उत्तरे गुरु स्थापयामि-
ॐ बृहस्पतेअतियदर्योऽअर्हाद्द्युमद्वि-
भातिक्रतु मज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासु
द्रविणंन्धेहि चित्रम्।।26/3।।

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ ज्रां ज्रीं ज्रौं स: गुरवे नम:।।

नमस्कार - देवांनाचं ऋषीणांच
गुरुंकाचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम्।।
सोमतुल्योदितिप्राज्ञो दानवानां च पुरोहित:।
त्राता च सर्वदैत्यानां शुक्रमावहयाम्यहम्।।1।।
भाभो भोजकटेजात शुक्रश्वेताश्ववाहन:।
समागच्छश्चतुर्बाहु भृगुगोत्रविभूषण:।।2।।
परिधाक्षा बलिहस्त कमण्डलु धरप्रद:।
पूर्वपत्रेति शुक्रश्च प्राच्यां शुक्रं निधापयेत्।।3।।
ॐ शुक्रज्योतिश्चचित्रज्योतिश्च
सत्यज्योतिश्च।
ज्योतिष्मांश्च शुक्रश्च ऋतपाश्चात्य ठं हा:।।17/80।।
ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणा व्यापि
बत्क्षत्रम्पय: सोमप्रजापति:। ऋतेन

गुरु

गुरु यंत्र

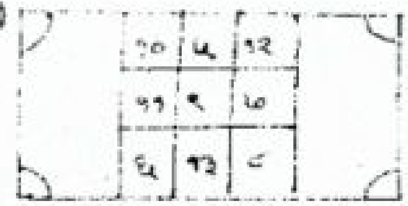

सखीनामाग्नि, फल-आम्रफल
समिधा-अश्वत्थ (पीपल)

शुक्र

हाटक नामाग्नि, समिधा-उदुम्बर (उभटा) फल-खारक, मिश्री

शुक्र यंत्र

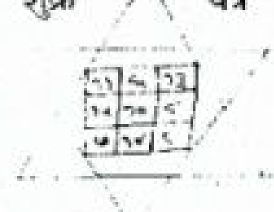

1. गुरु मन्त्र - जपसंख्या 17,000, रत्न-पुखराज, समिधा-अश्वत्थ, दान-शक्कर, हल्दी, अश्व, पीतपुष्प, चने की दाल, लवण, सुवर्ण।

Scanned with CamScanner

सत्यमिन्द्रियविपान ठं शुक्रमन्धस
इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु।।19/75।।
पूर्वे शुक्र स्थापयामि-

महातेज नामाग्नि
समिधा-(खेजड़ी) शमी
फल-नारियल

तान्त्रिक मन्त्र-

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।[1]

नमस्कार-

हिमकुंदमृणाग्लाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र-प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

शनि

कृष्णाङ्गोकृष्णवर्णश्च कृष्णाजिनंधरस्तथा।[2]
शौरोमंदगतिश्चैव शनिमावह-याम्यहम्।।1।।
अहो सौराष्ट्रसंजात छायापुत्रश्चतुर्भुजः।
कृष्णवर्णार्क गोत्रेय बाणहस्ते धनुर्धरः।।2।।
त्रिशूली च समागच्छ वरदो मे ग्रधवाहनः
प्रजापत्योति संपूज्यो यमवत् पश्चिमे दले।।3।।
ॐ प्रजापतेनत्वदेतांन्यन्यो विश्वारूपाणि
परिताबभूव यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्व
ममुष्य-पितासावस्य-पिता वय ठं. स्यामपतयो
रयिणा ठं. स्वाहा।।10/20।।
पश्चिमे शनिंस्थापयामि-
ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये,
शंय्योरभिस्रवन्तुनः।।36/12।।

शनि यंत्र

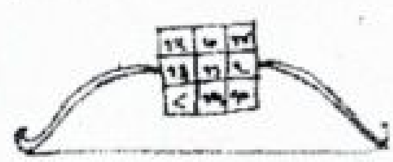

तान्त्रिक मन्त्र-

ॐ खाँ खीं खौ सः शनैश्चराय नमः

नमस्कार - नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं
यमाग्रजम्।
छायमार्तण्डसम्भूतं तन्नमामि शनैश्चरम्।।

---

1. शुक्र मन्त्र-जपसंख्या 16,000, रत्न-हीरा, समिधा-औदुम्बर, दान-श्वेत घोड़ा, चित्राम्बर, गाय, चांदी, चावल, घृत, सुगन्धित द्रव्य।

2. शनि मन्त्र-जपसंख्या 23,000, रत्न-नीलम, समिधा-शमीवृक्ष (खेजड़ी), दान-तिल, तैल, उड़द, लोहा, भैंस, इन्द्रनील, श्यामवस्त्र, काली गाय।

Scanned with CamScanner

रक्तांगो रक्तवर्णश्च, रक्ताजीवनंधरस्तथा।
सिंहकायां समुत्पन्नो राहुमावाहयाम्यहम्॥1॥
राहोवबरके देशे संजात:काय वर्जित:
गोत्रे पेठेन सेह्वो ही सिंहारूढो वरप्रद:॥2॥
करालवदन: श्रेष्ठ कालरूपी जनप्रभो।
आयंगौरीतिमन्त्रेण पूज्यो नैऋतपत्रके॥3॥
ॐ आयंगौ: पृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुर: पितरं च प्रयन्त्स्व:॥3/5॥
नैऋत्ये राहुं स्थापयामि-
ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृध: सखा कयाशचिष्ठयावृता॥27/39॥

हुताशनाग्नि
समिधा-दूर्वा
फल-दाड़िम

राहु

तान्त्रिक मन्त्र-
ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम:।[1]

नमस्कार-
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहु प्रणयाम्यहम्॥
एह्येहि भगवान् केतो व्योमचारि महाद्युति।
ग्रहैस्तु सहिता सर्वे केतुमावहयाम्यहम्॥1॥
केतवो विविधाकारा मलयान्द्रिसमुद्भवा:।
द्विभुजा जै मुनिगोत्रे गदाहस्तो वरप्रदा:॥2॥
आगच्छन्तु कस्ययोनि शोभने मारुते दले।
ब्रह्मजज्ञानं मन्त्रेण चित्रगुप्तमवार्चितम्॥3॥
ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमत: सूरुचोवेनऽआव: सुबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठा: सतश्चयोनि मसतश्च विव:॥13/3॥

राहु यंत्र

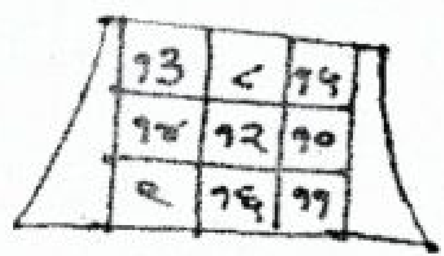

वायव्ये केतुस्थापयामि-
ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथा:॥29/37॥

1. राहु मन्त्र-जप 18,000, रत्न-गोमेद, समिधा-दूर्वा, दान-गेहूं, अश्व, नीलवस्त्र, कम्बल, तिल, तैल, लोह, अभ्रक।

Scanned with CamScanner

तान्त्रिक मन्त्र-

ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः केतवे नमः।[1]

नमस्कार - पलाशपुष्पसंकाशं

तारकाग्रहमस्तकम्।

रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।

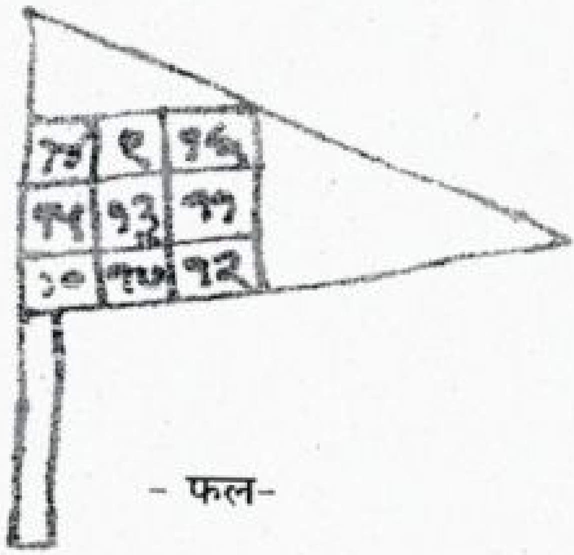

केतु यंत्र

- फल-

सूर्य । अर्केण नश्यते व्याधिः।

चन्द्र 2 पालाशो सर्वकामदः।

मंगल 3 खादीर श्चार्थ लाभाय।

बुध 4 अपामार्गेण रूपवान्

गुरु 5 अक्वत्थ सर्व कामानाम्

शुक्र 6 शुभं चौदुंवरी मता।

शनि 7 शमी शमयते पापं

राहु 8 दूर्वा दीर्घायुरेवच

केतु 9 कुश धर्मार्थ कामानां

रक्षणं राक्षसात् विदुः।।

आलाभेतु प्रकर्तव्या

सर्वापालाश वृक्षजा

प्रादिश मात्र समिध करना।

---

1. केतु मन्त्र-जपसंख्या 17,000, रत्न-वैदूर्य (लहसुनिया), समिधा-कुशा, दान-कम्बल, तिल, कस्तूरी, शस्त्र, छाग, तैल, कृष्णपुष्प।

Scanned with CamScanner

अथ अग्न्युत्तारण प्राण-प्रतिष्ठा

संकल्प-देश कालौ संस्मृत्य-आसाम्।

अमुकामुक मूर्तीनाम्, अग्नितपन ताडनावधातादि दोष परिहारार्थम् अग्न्युत्तारणपूर्वक प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये।। इति संकल्प।।

मूर्तीं घृतेनाभ्यज्य, पात्रे निधायं तदुपरि दुग्ध मिश्रित जलधारां पातयेत्।।

ॐ समुद्रस्यत्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽ अस्मभ्य ꣹ शिवोभव।।17/4।।

हिमस्य त्वा जरायणाऽग्ने परि व्ययामसि।

पावको अस्मभ्य ꣹ शिवो भव।।17/5।।

उपज्मन्नुपवेतसे वतरनदीष्वा। अग्नेपित्त मपामसि मण्डूकिताभिराग हि सेमन्नो यज्ञ म्पावक वर्ण ꣹ शिवङ्कधि।।17/6।।

अपामिद न्ययन ꣹ समुद्रस्यनिवेशनम्। अन्याँस्ते ऽ अस्यत्तपन्तु हेतय: पावको ऽअस्मभ्य ꣹ शिवोभव।।17/7।।

अग्ने पावक रोचिषामन्द्रया देव जिह्व्वया। आदेवान् वक्षि यक्षिच।।17/8।।

सन: पावक दीदिवो ग्ने देवाँ 2 ऽइहावह।। उपयज्ञ ꣹ हविश्चन:।।17/9।।

पावक या यश्चितय न्त्या कृपाक्ष्ज्ञामन् रुरुच ऽ उषसोन भानुना। तूर्वन् नयामन्नेतशस्य नूरणऽआयो घृणे न त तृषाणोऽअजर:।।17/10।।

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे।। अन्याँस्ते ऽ स्मत्तपन्तु हेतय: पावको ऽ अस्मभ्य ꣹ शिवोभव।।17/11।।

नृषदेवेड्प्सुष देवेड् बर्हि ष देवेड् वनसदेव्वेट् स्वर्विदेवेद्।।17/12।।

ये देवा देवानां-यज्ञिया यज्ञियाना ꣹ संवत् सरीण मुपभागमासते।। अहुतादो हविषो यज्ञेऽअस्मिन् त्स्वयम्पिबन्तु मधुनो घृतस्य।।17/13।।

ये देवा देवेष्वधिदेवत्वमा यन्ये ब्रह्मण: पुर ऽएतारोऽअस्य।। येभ्यो न ऽ ऋते पवते धाम किञ्चननते दिवोन पृथिव्याऽअधिस्नुषु।।17/14।।

प्राणदाऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा व्वरिवोदा:।। अन्याँस्ते ऽअस्म त्तपन्तु हेतय:, पावकोऽअस्मभ्य ꣹ शिवोभव।।17/15।।

।। इत्युग्न्युत्तारणम् ।।

Scanned with CamScanner

॥ अथ प्राण प्रतिष्ठा प्रयोगः ॥

अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्रः ऋषयः। ऋग् यजुः सामानि छन्दांसि। परा प्राण शक्ति देवता। आं बीजं। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम्। आसु अमुकामुक मूर्तिषु प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हौं

ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आँ ह्रीं क्रौं आसां

मूर्तीनां प्राणा इह प्राणाः॥ (दक्षिण हाथ से दोनों कपोल स्पर्श करें)

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हौं ॐ क्षं

सं हं सः ह्रीं ॐ आँ ह्रीं क्रौं आसां मूर्तीनां

जीवा इह जीवा स्थिताः॥ दक्षिण अंगुष्ठ का हृदय पर स्पर्श करें।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हौं ॐ

क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आँ ह्रीं क्रौं आसाम्

अमुकामुक मूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनः

त्वक्, चक्षुः श्रोत्र, जिह्वा, घ्राण, पाणि, पाद पायू उपस्थिानि इहैव आगत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥ (10 बार अक्षत चढ़ावें)

ततः प्रतिष्ठादिकं कुर्यात्॥

ॐ मनोजूति र्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामों 3 म्प्रतिष्ठ॥

गंधाक्षत पुष्प चढ़ावे।

ॐ एषवै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति॥

अमुकामुक देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत॥

नेत्रोन्मीलनम्

तांबे व कांसे के पात्र में घी और मधु मिलाकर सोने की शलाका से नेत्रोन्मीलन करें। सामने दर्पण रखें। फिर प्रसाद चढ़ावें।

ॐ चित्रं देवानां मुद्गादनीं कं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः (इस से नेत्रों की कल्पना करें) अग्नि र्ज्योति रग्नि स्वाहा। सूर्यो ज्योति ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योति र्वर्चः स्वाहा। सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा। ज्योतिः सूर्य सूर्यो ज्योति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

नेत्रों में स्वर्ण शलाका फिरावें।

ॐ वृत्रस्यासिकनीतकश्चक्षुदडिअसि चक्षुर्मे देहि।।

फिर गन्धादि पंचोपचार से पूजन करें। गंधादि पंचोपचारान् दत्त्वा षोडश संस्कार सिद्धये षोडशप्रणवा वृत्तीः कुर्यात्।। सोलह बार ॐकार का उच्चारण करते हुए अक्षत चढ़ावें। आसां अमुकामुक मूर्तिनां षोडश संस्काराः सम्पद्यन्ताम्।। इसके बाद अभिषेक करें या महास्नान करावें।

।। इति प्राण प्रतिष्ठा ।।

Scanned with CamScanner

प्रधान पीठ

द्वादशलिंगतोभद्र

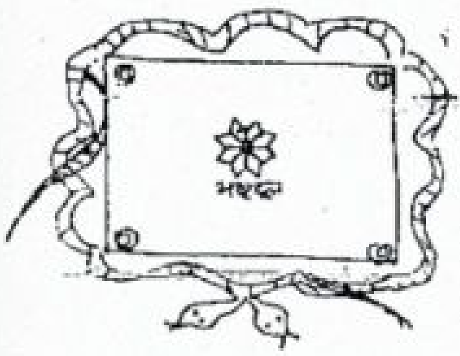

1. द्वादश कोण युक्त सर्पदल
2. चतुष्कलश
3. मध्ये अष्टदल
4. सर्पसर्पणि वेष्टित पाटलापर अष्टदल स्थापन मध्ये वर्तुलाकार, नव कुल नाग की स्थापना मध्ये कालीय सर्प, चार कोणों पर चार कलश
5. नवग्रह पीठ के ईशानकोण में रुद्रकलश चारों तरफ 28 नक्षत्रों की स्थापना करें।
6. नैऋत्यकोण या उस संक्रान्ति में जहां नागवास देवालयानुसार हो, वहां वेदिका बनानी व हां अग्निस्थापन के बाद ग्रह पूजन कर क्षीर रांधे।

नागक्रम

(पूर्वादिक्रमेण)

1. अनन्त, 2. वासुकी, 3. शेष, 4. पद्मनाभ, 5. कम्बल, 6. शंखपाल, 7. धृतराष्ठ, 8. तक्षक, 9. कालीय मध्यम में स्थापित होगा।

कालीय-मन्त्र-

कालीयो नाम नागासौ विषरूपो भयंकर:।

नारायणेन संपृष्टो दोषो क्षेमकारो भव॥

प्रतिकुण्डली में नागिनी

1, जरत्कारु, 2. जगद्गौरी, 3. मनसा, 4. सिद्ध योगिनी, 5. वैष्णवी, 6. नागभगिनी, 7. शैवी, 8. नागेश्वरी, 9. जरत्कारुप्रिया, 10. आस्तीकमाता, 11. विषहरा, 12. महाज्ञानयुंता।

Scanned with CamScanner

ग्रहों के प्रत्याधि देवता-

अनन्त भास्करं विद्यात् सोमं विद्यात् तु वासुकिं।
लोहितं तक्षकं विद्यात्, बुधं कर्कोटकं स्मृतं।
विद्यात् बृहस्पति पद्मं, महापद्मं च भार्गवं,
शंखपालशनिं विद्यात्, राहु कंबलकं तथा।
केतुश्च कालीयं विद्यात्, इति प्रत्याधि देवता।।

नवनाग स्थापना एवं पूजन

मातृका स्थापन पूजन, नान्दीश्राद्ध, षोडशोपचार गणपति पूजन, नवग्रहपूजन के पश्चात् मृत्युञ्जय रूप महादेव का ध्यान करें। नागपीठ पर, अथवा अष्टदल पर नागों की स्थापना प्रतिष्ठा करें।

मृत्युञ्जय महादेव का ध्यान-

हस्ताभ्यां कलश-द्वयामृतरसै राप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये, द्वाभ्यावहन्तं परम्।
अंकन्यस्तकरद्वाभ्यांऽमृतघटं कैलासकान्तं शिवम्,
स्वच्छांभोज गतं नवेन्दु मुकुटा.भान्तं त्रिनेत्रं भजे।।1।।
ॐ भूर्भुवः स्वः महामृत्युञ्जयाय नमः ध्यायामि।

महामृत्युञ्जय मन्त्र-

ॐ हौं ॐ जूं स भूर्भुवः स्वः
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
भूर्भुवः स्वरों जूं सः हों ॐ।।
(इस मन्त्र से शिवजी पर गन्धाक्षत पुष्प चढ़ावें)
अनया पूजनकर्मणा कृतेन महामृत्युञ्जयः प्रियतां न नमः।

नागपीठ के मध्य (बीचोबीच) में अनन्त नामक नाग की स्थापना करें।

1. अनन्त- अनन्तं विप्रवर्गं च रक्त-कंकुम-वर्णकम्
सहस्र-फण-संयुक्तं तं देवं प्रणमाम्यहम्।
मध्ये अनन्ताय नमः। अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि।

2. शेष- विप्रवर्गं श्वेतवर्णं सहस्रफणसंयुतम्।
आवहयाम्यहं देवं शेषं वै विश्वरूपिणम्।।2।।
पूर्वे शेषाय नमः। शेषं आवाहयामि स्थापयामि।

Scanned with CamScanner

3. वासुकी- क्षत्रियवर्गं पीतवर्णं, फणै र्सप्तशतैर्युतम्
युक्तमुत्तुगंकायं च वासुकीं प्रणमाम्यहम्।।3।।
आग्नेयां वासुक्यै नमः। वासुकीं आवाहयामि स्थापयामि।

4. तक्षक- वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पंचशतैर्युतम्।
युक्तमुत्तुंगकायं च तक्षकं प्रणमाम्यहम्।।4।।
दक्षिणे तक्षकाय नमः। तक्षकं आवहयामि स्थापयामि।

5. कर्कोटक- शूद्रवर्गं श्वेतवर्णं शतत्रयफणैर्युतम्।
युक्तमुत्तुग कायं च कर्कोटं च नमाम्यहम्।।5।।
नैऋत्ये कर्कोटकाय नमः। कर्कोटं आवाहयामि स्थापयामि।

6. शंखपाल- शंखपालं क्षत्रियं च, पत्र सप्तैशतैः फणैः।
युक्तमुत्तुंग कायं च, शिरसा प्रणमाम्यहम्।।6।।
पश्चिमे शंखपालाय नमः। शंखपालं आवाहयामि स्थापयामि।

7. नील- वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पंचशतैर्युतम्
युक्तमुत्तुंग कायं च, तं नीलं प्रणमाम्यहम्।।7।।
व्रायव्ये नीलाय नमः। नीलं आवाहयामि स्थापयामि।

8. कम्बलक- कम्बलं शूद्रवर्णं च शतत्रयफणैर्युतं।
आवाहयामि नागेशं प्रणमामि पुनः पुनः।।8।।
उत्तरे कम्बलकाय नमः। कम्बलकं आवाहयामि स्थापयामि।

9. महापद्म- वैश्यवर्गं नीलवर्णं पत्रं पंच शतैर्युतम्।।
युक्तमुत्तुंग कायं च महापद्मं नमाम्यहम्।।9।।

ईशान्ये महापद्माय नमः। महापद्मं आवाहयामि स्थापयामि। मध्ये अनन्तं, दक्षिणे राहवे नमः। वामे केतवे नमः। ईशान्यां अमृतरक्षणी सहितायै मनसादेव्यै नमः।। प्रतिष्ठः।। प्रतिष्ठः।।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ठँ समिमदधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्ता मों 3 प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च
अस्येदेवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

नवनागों को धूप-दीप-नैवेद्य, गन्ध-अक्षत, पुष्प, दूध, फल व चन्दन-केसर चढ़ावे।

ॐ नवकुलनागाय विद्महे, विषदन्ताय धीमहि तन्नोः सर्पः प्रचोदयात्।

Scanned with CamScanner

ध्यानम्

अनन्तपद्म पत्राद्यं फणाननेकतो ज्वलम्।
दिव्याम्बर-धरं देवं, रत्न-कुण्डल-मण्डितम्।।1।।
नानारत्नपरिक्षिप्तं मुकुटं द्युतिरंजितम्।
फणामणिसहस्रोद्यै रसंख्यै पन्नगोत्तमे।।2।।
नाना कन्यासहस्रेण समंतात् परिवारितम्।
दिव्याभरण दिप्तांग दिव्यचंदन-चर्चितम्।।3।।
कालाग्निमिव दुर्धर्ष तेजसादित्य सन्निभम्।
ब्रह्माण्डाधार भूतं त्वां, यमुनातीर-वासिनम्।।4।।
भजेऽहं दोष शान्त्यैत्र, पूजये कार्यसाधकम्।
आगच्छ कालसर्पाख्य, दोषं मम निवारय।।5।।

आसनम्- नवकुलाधिपं शेषं, शुभ्र कच्छप वाहनम्।
नानारत्नसमायुक्तं आसनं प्रतिगृह्यताम्।।

पाद्यम्- अनन्त प्रिय शेषं च जगदाधार-विग्रह।
पाद्यं ग्रहाणमक्तयात्वं काद्रवेय नमोस्तुते।।

अर्घ्यम्- काश्यपेयं महाघोरं, मुनिभिर्वन्दितं प्रभो।
अर्घ्यं गृहाणसर्वज्ञ भक्तया मां फलंदायक।।

आचमनीयम्- सहस्र फणरूपेण वसुधाधारक प्रभो।
गृहाणाचमनं दिव्यं पावनं च सुशीतलम्।।

पंचामृत स्नानम्- पंचामृतं गृहाणेदं, पावनं स्वभिषेचनमम्।
बलभद्रावतारेश! क्षेमं कुरु मम प्रभो।।

वस्त्रम्- कौशेय युग्मदेवेश प्रीत्या तव मयार्पितम्।
पन्नगाधीशनागेन्द्र तार्क्ष्यशत्रो तामेस्तुते।।

यज्ञोपवीतम्- सुवर्ण निर्मितं सूत्रं पीतं कण्ठोपहारकम्।
अनेकरत्नसंयुक्तं सर्पराज नमोस्तुते।।

अथ अंगपूजनम्।

चन्दनेन अंग पूजनम् कृत्वा।।

सहस्रफणाधारिणे नमः पादौ पूजयामि। अनंद्याय नमः गुल्फौ पूजयामि। विषदन्ताय नमः जंघौपूजयामि। मन्दगतये नमः जानू पूजयामि। कृष्णाय नमः कटिं पूजयासि। पित्रे नमः नाभिंपूजयामि। श्वेताय नमः उदरं पूजयामि।

Scanned with CamScanner

उरगाय नमः स्तनौ पूजयामि। कालिकाय नमः भुजौ पूजयामि। जम्बूकण्ठाय नमः कंठं पूजयामि। द्विजिह्वाय नमः मुखं पूजयामि। मणिभूषणाय नमः ललाटं पूजयामि। शेषाय नमः सिरं पूजयामि। अनन्ताय नमः सर्वांगान् पूजयामि।

यन्त्र की आवरण पूजा-

कालसर्प योग की विधि की निवृत्ति/वर्ष में पड़ने वाले कतिपय विशेष मुहूर्त में ही होती है तथा इस पर खर्चा भी अधिक आता है। इसके लिए उपर्युक्त 'नागपाश यन्त्र' को सप्त धातु में बनवाकर लाल या पीले मखमल को पीछे लगाकर लकड़ी के फ्रेम में जड़ित करके इसके नित्य दर्शन करे एवं दूर्वा, पीपल, अशोक या आम के पत्ते से नित्य प्रति जल के छींटा देने से यह योग शान्त होता है। इस प्रयोग से व्यक्ति के घर में, एवं मन-मस्तिष्क में शान्ति मिलती है। यह अनुभूत है।

इस यन्त्र के आगे नागपंचमी के दिन केसरयुक्त खीर का भोग लगावें। इससे योग के कुप्रभाव का नाश होता है। इसी प्रकार कालसर्प योग की अंगूठी स्वर्ण या रजत या सप्त धातु में बनती है। इसको धारण करने से भी व्यक्ति को 15 प्रतिशत से 20 प्रतिशत राहत मिलती है। नागपाश यन्त्र के नित्य पूजन से 30 प्रतिशत से 50 प्रतिशत राहत मिलती है। पूर्ण राहत तो कालसर्प योग की सम्पूर्ण विधि कराने पर ही मिलती है। इसके लिए हमारे यहाँ पर समय-समय पर शुभ मुहूर्त में सामूहिक विधि सम्पन्न कराई जाती है। इच्छित सज्जन सम्पर्क करके लाभ उठा सकते हैं तथा चाहें तो मन्त्र सिद्ध नागपाश यन्त्र अथवा कालसर्प योग की अंगूठी भी हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

अनन्ताय नमः। शेषाय नमः। वासुकये नमः। तक्षकाय नमः। कर्कोटकाय नमः। शंखपालाय नमः। नीलाय नमः। कंबलकाय नमः। महापद्माय नमः। दयाब्धे त्राहि संसार सर्पभयात् शरणागतः।

भक्त्या समर्पयेतुभ्यं प्रथम वरणार्चनं नमः।

प्रथमावरण देवताः प्रियन्ताम् नमः॥ (इस पंक्ति को प्रत्येक आवरण पूजा के बाद बोलें)

द्वितीया काल भौमाय, कालदुर्दराय, कालाय, धरणीधराय, फणाधराय मुखफहारिणे, सर्पगामिन, जलधराय वक्रगतिने रौद्राय श्रीधर धारिणे अभीष्टं देहि द्वितीया॥

Scanned with CamScanner

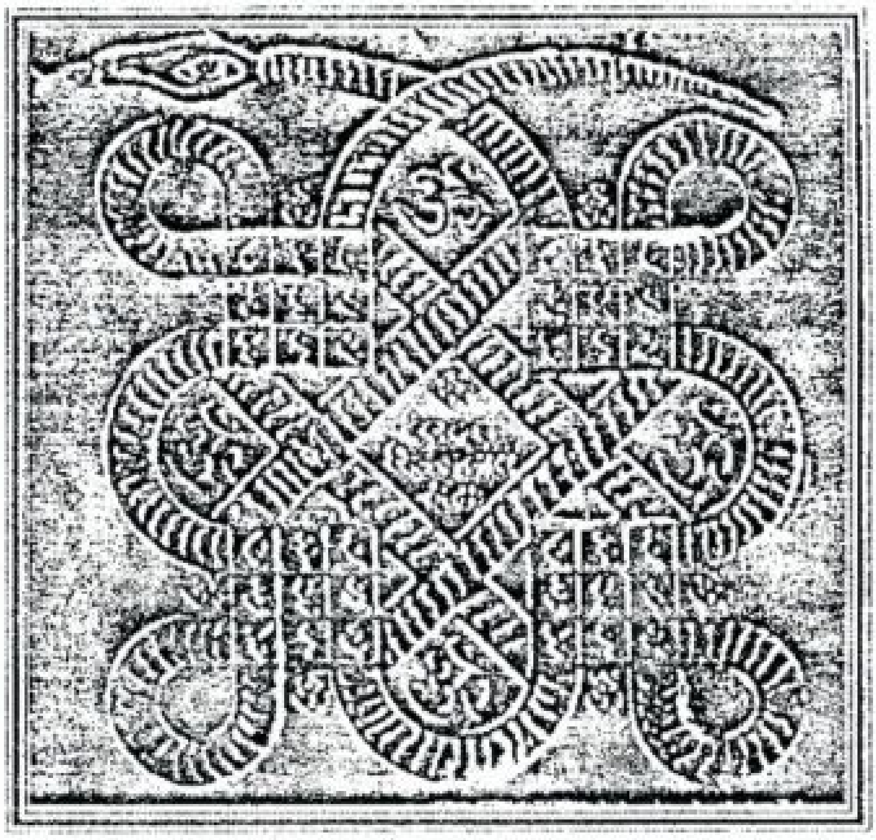

कालसर्प नागपाश यंत्र

तृतीया आदिकालाय, महाकालाय, गौर कालाय, शक्तिकालाय, वीरभद्राय, कालनेत्राय, सहजाय, सावित्र्याय, वारुण्यकुमाराय, क्षेत्राय, कपिलाय, भैरवाय, मुद्रिकाय, सुविग्निवायनमः। अभिष्टं देहि तृतीया।

चतुर्था, क्षां क्षीं क्षुं क्षैं क्षौं क्षः फट् स्वाहाः कालाय, रूप कालाय, सूर्यकालाय, क्षयकालाय अंतकाय। अभीष्ट देहि चतुर्थावरणम्।

पंचमा, नवशक्तिनाम्। दिव्यायै सुप्मायै सुप्मायै, रू जायै, रुद्रायै, खेचरायै, खेमलायै, खेधूपायै, सर्वतोमुख्यै, भद्रायै, अभिष्टं देहि पंचमा।

षष्टमा, गुरवे, परमगुरवे, पारत्पर गुरवे, परमेष्ठी गुरवे अभिष्टं देहि षष्ठमा।

सप्तमा नीलकण्ठाय, हारकेश श्वराय, कश्यपाय, आस्तिकाय कद्रुवे मलसायै अभिष्ट देहि पद्मा।

अष्टमा अणिमायै, महिमायै, लघिमायै, गरिमायै, प्राप्त्यै, प्राकाम्यै, अमितायै, वासितायै, अभीष्टंदेहि अष्टमावरण देवाः प्रियंताम् नमः।

नवमा, इन्द्राय, अग्नये, यमाय, निऋत्यै, वरुणाय, वायवे, सोमाय, ईशानाय, ब्रह्मणे, अनन्ताय, वज्राय, शक्तये, दण्डाय, खड्गाय, पाशाय, अंकुशाय, गदायै, त्रिशूलाय, पद्माय, चक्राय। अभीष्टसिद्धि समस्तावरण। ईशान्यां अमृतरक्षीण्धै मनसादेव्यै नमः सम्पूज्य गंधं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं समर्पयामि।

Scanned with CamScanner

गन्धम- कस्तूरी कर्पूर केसराढ्यं गोरोचनं चागररक्तचन्दनम्।
श्री चन्द्राढ्यं शुभ दिव्यं गन्धं गृहाण नागाप्रिये मयार्पितम्।।

अक्षतान्- काश्मीर पंकलितप्राश्च शालेमानक्षतान् शुभान्।
पातालाधिपते तुभ्यं अक्षतान् त्वं गृहाण प्रभो।।

पुष्पम्- केतकी पाअलजातिचम्पकै वकुलादिभि:।
मोगरै: शतपत्रश्च पूजितो वरदो भव।।
सौभाग्यद्रव्यं धूपं दीपं च दर्शयामि।

नैवेद्यम्- नैवेद्य गृह्यतां देव क्षीराज्य दधिमिश्रितम्।
नाना पक्वान्न संयुक्त पायसं शर्करायुतम्।।

फल, ताम्बूल दक्षिणाम्, पुष्पांजलि नमस्कारम्-

अनन्त संसार धरप्रियतां कालिन्दजावासक पन्नगाधिपते।
नमोस्मि देवं कृपणं हि मत्वा रक्षस्व मां शंकरभूषणेश।।
अनयापूजन कर्मणाकृतेन अनंत: प्रियताम् नम:।
राहुकेतु सहित अनन्तद्यावाहित देवा: प्रियताम् नम:।।

Scanned with CamScanner

नागपंचमी व्रत से सन्तान प्राप्ति

नागपंचमी का व्रत पुत्र प्राप्ति के लिए है। प्रत्येक मास की शुक्लपक्ष पंचमी को यह व्रत होता है तथा एक वर्ष पर्यन्त चलता है। वैसे तो नागपंचमी श्रावणशुक्ल पंचमी को प्रशस्त मानी गई है। यह व्रत किसी भी मास को प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रत्येक महीने शुक्ल पक्ष पंचमी के दिन पंचमुख नाग रजत या आटे का बनाकर उसका पूजन किया जाता है।

पंचमी नागपूजायां, कार्या षष्ठी समन्विता।
तस्यां तु तर्पिता नागा इतराषु चतुर्थिका।।

–चमत्कार चिन्तामणि

तेन नागपूजा दो चरैव

–निर्णय सिन्धु प्र. प. 63

श्रावण शुक्ला पंचमी को ही षष्ठीयुक्त नागपंचमी ग्राह्य है। अन्य पंचमी या चतुर्थी युक्त होनी चाहिए।

प्रथम मास में अनन्त, द्वितीय मास में वासुकी, तृतीय भास में शेष, चतुर्थ में पद्मनाभ, पंचम में कंबलक, षष्ठ में कर्कोटक, सप्तम में अश्वतर, अष्ट में धृतराष्ट्र, नवम मास में शंखपाल, दशम में कालीय, एकादश में तक्षक और द्वादश मास में कपिल इस प्रकार से उसका (नाग का) पूजन उस नाम से करे। पति-पत्नी दोनों को उपवास करना चाहिए। प्रत्येक पंचमी के दिन ब्राह्मण को पायस (खीर) का भोजन करवाएं, दक्षिणा देवें। इस प्रकार एक वर्ष तक व्रत करके नारायणवलि पूर्वक नागबलि विधि करे। सुवर्ण, रजत, ताम्र नाग का दान देवें और व्रत का उद्यापन करें। इस व्रत के प्रभाव से नाग-वध या सर्प-शाप का दोष दूर होकर पुत्र-सन्तति की प्राप्ति होती है।

Scanned with CamScanner

सर्व नागादि विष निर्मलीकरण
महामन्त्रा:

सर्पापसर्प भद्रं ते, गच्छ सर्प महाविष।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते, आस्तीक वचनं स्मर॥1॥
आस्तीकस्य वच: श्रुत्वा, य: सर्पो न निवर्तते।
शतधाभिद्यते मूर्ध्नि, शिशं वृक्ष फलं यथा॥2॥

अमृतरक्षिणी शाबर मन्त्र-

हाथ में जल, अक्षत, पुष्प लेकर, मनसादेवी का ध्यान करते हुए निम्न विनियोग पढ़ते हुए जल छोड़ें तथा गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ावें।

विनियोग- ॐ अमृतरक्षिणी सहितायै मनसादेव्यै नम: सम्पूज्य, गन्धं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं समर्पयामि।

तान्त्रिक मन्त्र-

(यह मन्त्र हाथ जोड़कर प्रार्थनापूर्वक पढ़े)

ॐ काल विकाला कंकालिनी चर्विणि, भूत्तहाणि, फणिविषिणि, विरथनारायणि हते। दह-दह हस्ते, चण्डे रौद्रि माहेश्वरी, महामुखी, ज्वालामुखी, शंकुकर्णि। शुकमुण्डे शत्रुं हन-हन सर्वनाशिनि। खं खं सर्वांग शोणित निरीक्षसि। मनसादेवी सम्मोह्य-सम्मोह्य, रुद्रस्य हृदयेजाता, रुद्रस्य हृदयस्पता, रुद्रो रौद्ररूपेण, त्वं देवी रक्ष रक्ष माम्, हूं माम्। फं फं ठं ठं स्कन्द मेखलावान् ग्रह शत्रु विषहारि शाले-माले। हर हर विशोक:। हां हां शबरी, हुं शबरी प्रकोणविषरे, सर्वे। विच मेघ मिले। सर्वनागादि विषहरणम्॥

दानमन्त्र पुराणोक्ता-

प्रायश्चित कर्म एवं उत्तरपूजा परिपूर्ण होने के बाद, आचार्यगण यजमानों को पवित्र जल से अभिषेक देते हैं। जिस प्रकार सर्प केचुली उतारता है, उसी प्रकार अभिषेक वाले पवित्र वस्त्र यजमान आचार्यगण को अर्पित कर देते हैं। उन अर्पित वस्त्रों के साथ सुवर्ण सर्प या सोने का तार या कुछ द्रव्य (धातु) देने की परम्परा

Scanned with CamScanner

है। उस समय यह मन्त्र पढ़ना चाहिए।

तमोमय महाभीम, सोम सूर्य विमर्दन।
हेमतार प्रदानेन, मम शान्तिप्रदो भव।।
विधुन्तुद नमस्तुभ्यं, सिंहिकानन्दनाच्युत।
दानेनानेन नागस्य, रक्ष मां वेधजाद्भयात्।।
यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकम्।
इष्टकार्यस्य सिद्ध्यर्थं, पुनरागमना य च।।

Scanned with CamScanner

सर्पवध-प्रायश्चित्त-कर्म

यदि मन (हृदय) में ऐसा विश्वास हो कि मेरे द्वारा सर्प का वध हुआ है तो निम्न प्रायश्चित्त कर्म करें।

सबसे पहले दक्षिणा सहित एक लोहे का दण्ड ब्राह्मण को भेंट करे। फिर संकल्प करें।

देशकालौ संकीर्त्य सभार्यस्य ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वा ज्ञानादज्ञानाद्वा जातसर्पवधोत्थ दोष परिहारार्थं सर्पसंस्कारकर्म करिष्ये।

तत्पश्चात् गुरु की आज्ञा लेकर गेहूँ, धान, व तिल इनके चूर्ण से सर्प बनाकर और उसको सूप में रखकर प्रार्थना करे कि, पूर्व मरे हुए सर्प! आप आओ और इस पिष्ट में समावेश करो। आपके संस्कार के लिए सावधान होकर आपकी प्रार्थना करता हूँ। फिर आह्वान आदि सोलह सामग्रियों से पूजन कर और नमस्कार करके हे सर्प! आप बलि को ग्रहण करो और ऐसे ऐश्वर्य को बढ़ाओ, इस प्रकार बलि देकर और ब्राह्मण के चरणों को धोकर आचमन करें।

इसके बाद स्थंडिल में विधि नामक अग्नि को स्थापन करके ध्यान करके फिर संकल्प करें कि, इस सर्प संस्कार होम-रूप कर्म के विषय में देवता के परिग्रह के लिए अन्वाधान करता हूँ। फिर सर्प के समस्त शरीर को घी से लेप दे। आग्नेयी दिशा की ओर अग्रभाग वाली कुशाओं को बिछावे तथा जल छिड़की हुई पृथ्वी पर चिता को बनाकर **'ॐ भूः स्वाहा अग्नये इदं'** व्याहृतियों से तीन आहुति दे। **'भूर्भुवः स्वः स्वाहा'** कहकर सर्प के मुख में चौथी आहुति दें। फिर शेष घृत को स्रुवे में लेकर, उससे ही सर्प की देह पर सींचे, यहां स्विष्टकृत् आदि शेष नहीं होता। सर्प का चमस के जल से गायत्री मन्त्र द्वारा प्रोक्षण करे। इसके बाद निम्न स्तुति पढ़े-

"जो अन्तरिक्ष, पृथ्वी, स्वर्ग में रहने वाले हैं, उन सर्पों को नमस्कार है। जो सूर्य की किरण जल इसमें विराजमान हैं, उनको नमस्कार है। जो यातुधानों के बाणरूप हैं और जो वनस्पति और वृक्षों पर सोते हैं, उनको नमस्कार है। हे महाभोगिन्! रक्षा करो, रक्षा करो। सम्पूर्ण उपद्रव और दुःख से रक्षा करो। पुष्ट जिसका शरीर है-ऐसी पवित्र सन्तति को मुझे दो। कृपा से युक्त दीनों पर दया करने वाले आप शरणागत मेरी रक्षा करो। जो ज्ञान वा अज्ञान से मैंने या मेरे पितरों

Scanned with CamScanner

ने सर्प का वध इस जन्म या अन्य जन्म में किया हो उस पाप को नष्ट करो और मेरे अपराध को क्षमा करो।"

फिर यज्ञ द्वारा सर्प को भस्मीभूत करें। इस कर्म में अस्थिसंचय न करें। फिर स्नान करके घर को जाए। सचेल स्नान करें।।

तत्पश्चात् घी और दूध से बने स्वादिष्ट भोजन से आठ ब्राह्मणों को तृप्त करें। अनन्त आदि आठ ब्राह्मणों को आसन, अर्घ्य, पाद्य, गन्ध, पुष्पाहार दें। ब्राह्मणों को और आचार्य को ताम्बूल दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें। इसके बाद सर्पसूक्त का पाठ करें।

-धर्मसिन्धु से साभार

अग्न्याधान

कुशकण्डिका करके

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्याहमुपब्रुवेदेवां 3 आसादयादिह॥

अग्नि के उत्तर में आचार्य और ब्रह्मा का वरण कर लेवें। तब संकल्प करें। ब्रह्मा दक्षिणा में रखें।

ततो विधि नाम्ने अग्नये नमः॥

इससे अग्नि की पूजा करके रेखात्रय की पूजा करे।

ॐ ब्रह्मणे नमः (पूर्वरेखा) **ॐ विष्णावेनमः** (मध्यरेखा)

ॐ रुद्राय नमः (उत्तर रेखा) फिर सात जीमों की पूजा करें।

ॐ कराल्यै नमः ॥1॥ ॐ **धूमिन्यै नमः॥2॥ ॐ श्वेतायै नमः।**

ॐ लोहितायै नमः॥4॥ ॐ महालोहितायै नमः॥5॥ ॐ सुवर्णयै नमः॥6॥ ॐ पद्म रागायै नमः॥7॥

फिर दक्षिणा जानु को ढालकर ब्रह्मणऽन्वारब्ध होकर प्रज्वलित अग्नि में चुपचाप स्रुव से घी होमे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा (इति मनसा) इदं प्रजापतये न मम

(मन से ही त्याग कर हुतशेष को प्रोक्षणी पात्र में डाल देवें।)

ॐ इंद्राय स्वाहा॥ इदमिन्द्राय नमः (इत्याधारौ) यह नाक है।

ॐ अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये नमम॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम। (इति आज्यभागौ) ये नेत्र हैं।

इसके बाद 28 या 100 प्रायश्चित की आहुतियां देवें।

ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये नमम। ॐ भुः स्वाहा इदं वायवेनमम

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्यायनमम। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। इदं प्राजपतये

Scanned with CamScanner

नम:। इसे सात बार करने पर 28 आहुतियाँ होंगी।

॥ अथ हवन क्रम: ॥

-सूची-

1. कुश कण्डिका
2. गणपति आहुति
3. अम्बिका आहुति
4. षोडश मातृका हवनम्
5. सप्तघृत मातृ का हवनम्
6. पंच्च ओंकार हवनम्
7. सर्वतो भद्र
8. ग्रहादि होम:
9. अथाधि देवता होम:
10. प्रत्यधि देवता होम:-क्षेत्रपाले (योगिनी 64)
11. नक्षत्र
12. योग
13. पञ्चलोकपाल
14. दश दिग् पाल

इसके बाद प्रधान होम

15. फिर उत्तर पूजन और बलिदान

Scanned with CamScanner

अथ कुशकंडिका

अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनंदत्वा, तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य, ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीय, अत्र त्वं मे ब्रह्माभव, इत्यभिधाय कल्पितासने उपवेशयेत्।

ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणापरिपूर्य, कुशैः, अच्छाद्य, ब्रह्मणोमुखमवलोक्य, अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्।

ततः परिस्तरणम्।

बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय, आग्नेयादीशानान्तम्, प्राच्याम्, ब्रह्मणाग्निपर्यन्त, दक्षिणस्याम्, नैऋत्याद्वायव्यान्तम्, प्रतीच्याम्, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्, उत्तरस्यां।

अथ पात्रासादनम्।

ततोग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि, पवित्रछेदनार्थ, कुशत्रयं, पवित्र करणार्थ साग्रमनन्तगर्भ कुशपत्र द्वयम्, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जन कुशाः तिस्र, उपयमन कुशाः सप्त, समिधस्तिस्र, श्रुव, श्रुक, आज्यम्, तण्दुलपूर्णपात्रम्,

एतानि द्रव्याणि क्रमेणासादनीयानि।।

ततः त्रिभिकुशैः द्वेकुशेछित्वा, पवित्रकरणम्ः। स पवित्र स्तेन प्रणीतोदकम् त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निक्षिप्य, सव्यहस्तयोः प्रोक्षणीपात्रजलम् पवित्रेण त्रिरुत्पवनम्, प्रोक्षणौपात्रे सव्यहस्तकरणम् त्रिरुद्दिङ्गनम्, पुनः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्, प्रोक्षणीजलेन यथासादित वस्तु सेचनम्, अग्नि प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निधाय।।

आज्यस्थाल्यां, आज्यं निरूप्य, ततोऽधिश्रयणम्, ज्वलदुल्मुकं आज्यस्योपरिभ्रामयित्वा, वह्नौ क्षिपेत्।।

अधोमुखं श्रुवप्रतपनम्, सम्मार्जनकुशानां, अग्रैः अन्तरतः, मूलैर्वाह्यतः श्रुवं समृज्य, प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्व, पुनः प्रतप्य दक्षिणतोनिदध्यात्।।। एवं श्रुचमपि।।

आज्यस्याग्नेः अवतारणम्, प्रोक्षणीवत् उत्पवनम्, सत्यपद्रव्यैतन्निरसनम्, पुनः उत्पवनम्।।

ततः उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय, दक्षिणहस्तेघृताक्ततिस्रसमिधोभ्यादाय, उत्तिष्ठन् प्रजापतिंमनसाध्यात्वा, तूष्णिम्, अग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्र क्षिपेत्।।।

Scanned with CamScanner

ततः उपविश्य, प्रोक्षण्युदकेन (ईशान्कोणादारभ्य, ईशान-कोण पर्यन्तं) अग्निं पर्युक्ष, (इतरथावृत्ति) प्रणीकापात्रे पवित्रं निधय,दक्षिणजान्ववाच्य, ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमग्नौ श्रुवेण आज्याहुतिर्जुहुयात्।। (तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यन्तरं श्रुवावस्थित हुतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेप)।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये नमम।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय नमम। इत्याघारौ।।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये नमम।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय नमम। इत्याज्यभागौ।।

हस्त जलाक्षतं गृहीत्वा-

इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्षमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यः मया परित्यक्तानि नमम यथादैवतानि सन्तु।।

।। इति कुशकण्डिका ।।।।।

ततः आवाहितानां, देवनाम्, हवनम्।। (नाममंत्रेण वा वेदोक्तमंत्रेण) तत्र नाममंत्राः।।

ॐ गणानांत्वा गणपति ॐ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॐ हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ॐ हवामहे व्वसोमम। आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा। इदं गणपतये न मम।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽबालिके न मानयति कश्चन।। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कां पीलवासिनीम् स्वाहा। इदमम्बिकायै न मम।

ॐ वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय।।

।। अथ षोडशमातृका नाम् हवनम् ।।

ॐ गणपतये स्वाहा। इद गणपतये।।1।।

ॐ गोर्ये स्वाहा। इदं गौर्ये।।2।।

ॐ पद्मायै स्वाहा। इदं पद्मायै।।3।।

ॐ शच्यै स्वाहा। इदं शच्यै।।4।।

ॐ मेधायै स्वाहा। इदं मेधायै।।5।।

ॐ सावित्र्यै स्वाहा। इदं सावित्र्य।।6।।

ॐ विजयायै स्वाहा। इदं वि जयायै।।7।।

ॐ जयायै स्वाहा। इदं जयायै।।8।।

ॐ देवसेनायै स्वाहा। इदं देव सेनायै।।9।।

ॐ स्वधायै स्वाहा। इदं स्वधायै।।10।।

Scanned with CamScanner

ॐ स्वाहायै स्वाहा। इदं स्वाहायै।।1।।
ॐ मातृभ्य: स्वाहा। इदं मातृभ्यो।।2।।
ॐ लोकमातृभ्य: स्वाहा। इदं लोकमातृभ्यो।।3।।
ॐ धृत्यै स्वाहा। इदं धृत्यै।।4।।
ॐ पुष्ट्यै स्वाहा। इदं पुष्ट्यै।।5।।
ॐ तुष्ट्यै स्वाहा। इदं तुष्ट्यै।।6।।
ॐ आत्मन: कुलदेवतायै स्वाहा। इदं आत्मन: कुलदेवतायै न मम।।7।।
।। इति षोडशमातृकानाम् हवनम् ।।

।। अथ सप्तघृतमातृकानाम् हवनम् ।।

ॐ श्रियै स्वाहा। इदं श्रियै न मम।।1।।
ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै।।2।।
ॐ घृत्यै स्वाहा। इदं घृत्यै।।3।।
ॐ मेधायै स्वाहा। इदं मेधायै।।4।।
ॐ स्वाहायै स्वाहा। इदं स्वाहायै।।5।।
ॐ प्रज्ञायै स्वाहा। इदं प्रज्ञायै।।6।।
ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। इदं सरस्वत्यै न मम।।7।।
।। इति घृतमातृकानाम् हवनम् ।।

।। अथ पञ्चोङ्काराणां हवनम्।।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणो नमम।।1।।
ॐ विष्णवे स्वाहा। इदं विष्णवे।।2।।
ॐ गायत्र्यै स्वाहा। इदं गायत्र्यै।।3।।
ॐ पृथिव्यै स्वाहा। इदं पृथिव्यै।।4।।
ॐ गोवर्धनाय स्वाहा। इदं गोवर्धनाय नमम।।5।। इति.

।। अथ सर्वतोभद्रमण्डल देवतानां होम: ।।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम।।1।।
ॐ सोमाय स्वाहा।। इदं सोमाय।।2।।
ॐ ईशानाय स्वाहा। इदंमीशानाय।।3।।
ॐ इन्द्राय स्वाहा।। इदंमिन्द्राय।।4।।
ॐ अग्नये स्वाहा। इदंमग्नये।।5।।

Scanned with CamScanner

ॐ यमाय स्वाहा। इदं यमाय।।6।।

ॐ निर्ऋतये स्वाहा। इदं नैर्ऋत्ये।।7।।

ॐ वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय।।8।।

ॐ वायवे स्वाहा।। इदं वायवे।।9।।

ॐ अष्टवसुभ्य: स्वाहा। इदं अष्टवसुभ्यो।।10।।

ॐ एकादशरुद्रेभ्य: स्वाहा। इदं एकादशरुद्रभ्यो।।11।।

ॐ द्वादशादित्येभ्य: स्वाहा। इदं द्वादशादित्येभ्यो।।12।।

ॐ अश्विनीभ्यां स्वाहा। इदमश्विनीभ्या।।13।।

ॐ सपैतृकविश्वेभ्योदेवभ्य: स्वाहा:।

इदं सपैत्रिक विश्वेभ्योदेवेभ्यो।।14।।

ॐ सप्तयक्षेभ्य: स्वाहा। इदं सप्तेक्षेभ्यो।।15।।

ॐ अष्टकुलनागेभ्य: स्वाहा। इदं अष्टकुलनागेभ्यो।।16।।

ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्य: स्वाहा। इदं गन्धर्याप्सरोभ्यो।।17।।

ॐ स्कन्दाय स्वाह। इदं वृषभाय।।18।।

ॐ वृषभाय स्वाहा। इदं वृषभाय।।19।।

ॐ शूलाय: स्वाहा। इदं शूलाय।।20।।

ॐ महाकालय स्वाहा। इदं महाकालाय।।21।।

ॐ दक्षादि सप्तगणेभ्य: स्वाहा। इदं दक्षादिसप्तगणेभ्यो।।22।।

ॐ दुर्गायै स्वाहा। इदं दुर्गायै।।23।।

ॐ विष्णवे स्वाहा। इदं विष्णवे।।24।।

ॐ स्वधायै स्वाहा। इदं स्वधायै।।25।।

ॐ मृत्युरोगेभ्य: स्वाहा। इदं मृत्युरोगेभ्यो।।26।।

ॐ गणपतये स्वाहा इदं गणपतये।।27।।

ॐ अद्भ्य: स्वाहा। इदंमद्भ्य।।28।।

ॐ मरुद्भ्य: स्वाहा। इदं मरुद्भयो।।29।।

ॐ पृथिव्यै स्वाहा।। इदं पृथिव्यै।।30।।

ॐ गङ्गादिनदीभ्य: स्वाहा। इदं गंगादिनदीभ्यो।।31।।

ॐ सप्तसागरेभ्य: स्वाहा। इदं सप्तसागरेभ्यो।।32।।

ॐ मेरवे स्वाहा। इदं मेरवे।।33।।

ॐ गदायै स्वाहा। इदं गदायै।।34।।

ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। इदं त्रिशूलाय।।35।।

ॐ वज्राय स्वाहा। इदं वज्राय।।36।।

Scanned with CamScanner

ॐ शक्तये स्वाहा।। इदं शक्तये।।37।।

ॐ दण्डाय स्वाहा। इदं दण्डाय।।38।।

ॐ खड्गाय स्वाहा। इदं खड्गाय।।39।।

ॐ पाशाय स्वाहा। इदं पाशाय।।40।।

ॐ अङ्कुशाय स्वाहा। इदं अङ्कुशाय।।41।।

ॐ गौतमाय स्वाहा। इदं गौतमाय।।42।।

ॐ भरद्वाजाय स्वाहा। इदं भरद्वाजाय।।43।।

ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। इदं विश्वामित्राय।।44।।

ॐ कश्यपाय स्वाहा। इदं कश्यपाय।।45।।

ॐ वशिष्ठाय स्वाहा। इदं वशिष्ठाय।।47।।

ॐ अत्रयेस्वाहा। इदंमत्रये।।48।।

ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। इदं ऐन्द्र्यै।।50।।

ॐ कौमार्यै स्वाहा। इदं कौमार्यै।।51।।

ॐ ब्राह्मयै स्वाहा। इदं ब्राह्मयै।।52।।

ॐ वाराह्यै स्वाहा। इदं वाराह्यै।।53।।

ॐ चामुण्डायै स्वाहा। इदं चामुण्डायै।।54।।

ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। इदं वैष्णव्यै।।55।।

ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। इदं माहेश्वर्यै।।56।।

ॐ वैनायक्यै स्वाहा।। इदं वैनायक्यै।।57।। इति.

अथ ग्रहादिहोम:

तत्र तावद् गणपतये।।। ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियानान्त्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिँ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भमात्वमजासि गर्ब्भधम् स्वाहा इदं गणपतये न मम।।।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकाँ कांपीलवासनीम् स्वाहा। इदं अम्बिकायै नमम।।2।।

ततो ग्रहादित्रिमध्वक्तसमित्तिलचर्वाज्यद्रव्यै: प्रत्येकं अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा नाममंत्रेण जुहुयात्।।

ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय।।1।।

ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे।।2।।

ॐ भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय।।3।।

ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय।।4।।

Scanned with CamScanner

ॐ बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये।।5।।

ॐ शुक्राय स्वाहा। इदं शुक्राय।।6।।

ॐ मन्दाय स्वाहा। इदं मन्दाय।।7।।

ॐ राहवे स्वाहा। इद राहवे।।8।।

ॐ केतवे स्वाहा। इद् केतवे।।9।।

अथाधिदेवता होम:

ॐ ईश्वराय स्वाहा। इदमीश्वराय।।1।।

ॐ उमायै स्वाहा। इदं उमायै।।2।।

ॐ स्कंदाय स्वाहा। इदं स्कन्दाय।।3।।

ॐ विष्णवे स्वाहा। इदं विष्णवे।।4।।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय।।5।।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे।।6।।

ॐ यमाय स्वाहा। इदं यमाय।।7।।

ॐ कालाय स्वाहा। इदं कालाय।।8।।

ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा। इदं चित्रगुप्ताय।।9।।

अथ प्रत्यधिदेवता होम

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये।।1।।

ॐ अद्भ्य स्वाहा। इदमद्भ्यो।।2।।

ॐ पृथिव्यै स्वाहा। इदं पृथिव्यै।।3।।

ॐ विष्णवे स्वाहा। इदं विष्णवे।।4।।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिद्राय।।5।।

ॐ इद्राण्यै स्वाहा। इदमिन्द्राण्यै।।6।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापये।।7।।

ॐ सर्पेभ्य: स्वाहा। इदं सर्पेभ्यो।।8।।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे।।9।।

Scanned with CamScanner

-क्षेत्रपाल-51.

1. क्षेपापालाय स्वाहा
2. अजराय स्वाहा
3. व्यापकाय स्वाहा
4. इन्द्रचौराय स्वाहा
5. इन्द्रमूर्तये स्वाहा
6. उक्षाय स्वाहा
7. कूष्माण्डाय स्वाहा
8. वरुणाय स्वाहा
9. बटुकाय स्वाहा
10. विमुक्ताय स्वाहा
11. लिप्तकायाय स्वाहा
12. लीलाकाय स्वाहा
13. एकदंष्ट्राय स्वाहा
14. ऐरावताय स्वाहा
15. ओषधिध्राय स्वाहा
16. बन्धनाय स्वाहा
17. दिव्यकाय स्वाहा
18. कम्बलाय स्वाहा
19. भीषणाय स्वाहा
20. गदयाय स्वाहा
21. घण्टाय स्वाहा
22. व्यालाय स्वाहा
23. आणवे स्वाहा
24. चन्द्रवारुणाय स्वाहा
25. पटाटोपाय स्वाहा
26. जठालाय स्वाहा
27. क्रतवे स्वाहा
28. घण्टेश्वराय स्वाहा
29. विटङ्काय स्वाहा
30. मणिमानाय स्वाहा
31. गणबन्धवे स्वाहा
32. डामराय स्वाहा
33. दुण्ढिकर्णाय स्वाहा
34. स्थविराय स्वाहा
35. दन्तुराय स्वाहा
36. नागकर्णाय स्वाहा
37. नागकर्णाय स्वाहा
38. महाबलाय स्वाहा
39. फेत्काराय स्वाहा
40. चीकराय स्वाहा
41. सिंहाय स्वाहा
42. मृगाय स्वाहा
43. यक्षाय स्वाहा
44. मेघावाहनाय स्वाहा
45. तीक्ष्णोष्ठाय स्वाहा
46. अनलाय स्वाहा
47. शुक्ल तुण्डाय स्वाहा
48. सुधालायाय स्वाहा
49. बर्बरकाय स्वाहा
50. नवनाय स्वाहा
51. पावनाय स्वाहा

1. महाकाल्यै नमः।।
2. महालक्ष्म्यै नमः।।
3. महा सरस्वत्यै नमः।।

Scanned with CamScanner

योगिनी-64

1. गजाननायै स्वाहा
2. सिंहमुख्यै स्वाहा
3. गृध्रास्यायै स्वाहा
4. काक तुण्डिकायै स्वाहा
5. उष्ट्र ग्रीवायै स्वाहा
6. हयग्रीवायै स्वाहा
7. वाराह्यै स्वाहा
8. शरमाननायै स्वाहा
9. उलूकिकायै स्वाहा
10. शिवारावायै स्वाहा
11. मयूर्यै स्वाहा
12. विकटाननायै स्वाहा
13. अष्टवक्रायै स्वाहा
14. कोटराक्ष्यै स्वाहा
15. कुब्जायै स्वाहा
16. विकट लोचनायै स्वाहा
17. शुष्कोदयै स्वाहा
18. स्वदंष्ट्रायै स्वाहा
19. लालज्जिह्वायै स्वाहा
20. वानराननायै स्वाहा
21. रूक्षाक्ष्यै स्वाहा
22. के कराक्ष्यै स्वाहा
23. बृहत्तुण्डायै स्वाहा
24. सुराप्रियायै स्वाहा
25. कपालहस्तर्यै स्वाहा
26. रक्तामाक्ष्यै स्वाहा
27. शुक्यै स्वाहा
28. क्वेन्यै स्वाहा
29. कपोतिकायै स्वाहा
30. पाश हस्तायै स्वाहा
31. दण्डहस्तायै स्वाहा
32. प्रचण्डाय स्वाहा
33. चण्डविक्रमायै
34. शिशुघन्यै स्वाहा
35. पापहन्त्र्यै स्वाहा
36. काल्यै स्वाहा
37. रुधिर पायिन्यै स्वाहा
38. वसाधयायै स्वाहा
39. गर्भ रक्षायै स्वाहा
40. शव हस्तायै स्वाहा
41. आन्त्रमालिन्यै स्वाहा
42. स्थूल केश्यै स्वाहा
43. वृहत्कुक्ष्यै स्वाहा
44. सर्पास्यायै स्वाहा
45. प्रेतवाहनायै स्वाहा
46. दन्द शूक्करायै स्वाहा
47. क्रौञ्च्यै स्वाहा
48. मृगशीर्षायै स्वाहा
49. वृक्षाननायै स्वाहा
50. व्यात्तास्यायै स्वाहा
51. धूमनि: श्वासायै स्वाहा
52. व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा
53. तापिन्ये स्वाहा
54. शोषणी दृष्टवै स्वाहा
55. कोटर्यै स्वाहा
56. स्थूल नासिकायै स्वाहा
57. विद्युतप्रमायै स्वाहा
58. बालका स्थायै स्वाहा
59. मार्जायै स्वाहा
60. कर पूतनायै स्वाहा

Scanned with CamScanner

61. अट्टाद् हासायै स्वाहा
62. कामाक्ष्यै स्वाहा
63. मृगाक्ष्यै स्वाहा
64. मृगालोचनय स्वाहा

नक्षत्र: आहुति

1. अश्विन्यै स्वाहा
2. भरण्यै स्वाहा
3. कृत्तिकायै स्वाहा
4. रोहिण्यै स्वाहा
5. मृगशीर्षे स्वाहा
6. आर्द्रायै स्वाहा
7. पुनर्वसवे स्वाहा
8. पुष्याय स्वाहा
9. आश्लेषाये स्वाहा
10. मेघायै स्वाहा
11. पूर्वा फालगुन्यै स्वाहा
12. उत्तरा फालगुन्यै स्वाहा
13. हस्ताय स्वाहा
14. चित्राय स्वाहा
15. स्वात्यै स्वाहा
16. विशाखायै स्वाहा
17. अनुराधायै स्वाहा
18. ज्येष्ठाय स्वाहा
19. मूलाय स्वाहा
20. पूर्वा षाढायै स्वाहा
21. उत्तरा षाढायै स्वाहा
22. अभिजिते स्वाहा
23. श्रवणाय स्वाहा
24. धनिष्ठायै स्वाहा
25. शतभिषायै स्वाहा
26. पूर्वा भाद्रपदे स्वाहा
28. रेवत्यै स्वाहा।।

अथ योगा:

1. विष्कुम्भाय स्वाहा
2. प्रीत्यै स्वाहा
3. आयुष्मते स्वाहा
4. सौभाग्याय स्वाहा
5. शोभनाय स्वाहा
6. अतिगंडाय स्वाहा
7. सुकर्मणे स्वाहा
8. धृत्यै स्वाहा
9. शूलाय स्वाहा
10. गंडाय स्वाहा
11. वृहद्यै स्वाहा
12. ध्रुवाय स्वाहा
13. व्याघाताय स्वाहा
14. हर्षणे स्वाहा
15. वज्राय स्वाहा
16. सिद्धयै स्वाहा
17. व्यतिपाताय स्वाहा
18. वरीयानाय स्वाहा
19. परिघाय स्वाहा
20. शिवाय स्वाहा
21. सिद्धाय स्वाहा
22. साध्याय स्वाहा
23. शुभाय स्वाहा
24. शुक्लाय स्वाहा
25. ब्रह्मणे स्वाहा
26. इन्द्राय स्वाहा
27. वैधृत्यै स्वाहा

Scanned with CamScanner

अथ पञ्चलोकपाल होमः

ॐ गणपतये स्वाहा।। इदं गणपतये।।1।।

ॐ अम्बिकाय स्वाहा। इदं अम्बिकायै।।2।।

ॐ वायवे स्वाहा। इदं वायवे।।3।।

ॐ आकाशाय स्वाहा। इदं आकाशाय।।4।।

ॐ अश्विनीभ्यां स्वाहा। इदमश्विनीभ्यां।।5।।

ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये।।6।।

ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा। इदं क्षेत्रपालाय।।7।।

अथ दशदिक्पाल होमः

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय।।1।।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये।।2।।

ॐ यमाय स्वाहा। इदं यमाय।।3।।

ॐ नैर्ऋत्ये स्वाहा। इदं नैर्ऋत्ये।।4।।

ॐ वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय।।5।।

ॐ वायवे स्वाहा। इदं वायवे।।6।।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय।।7।।

ॐ ईशानाय स्वाहा। इदमीशानाय।।8।।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे।।9।।

ॐ अनन्ताय स्वाहा। इदं अनन्ताय।।10।।

प्रधान होमः

ततः द्वादशाक्षरमन्त्रेण वा अष्टाक्षरमन्त्रेण अष्टोत्तशतं, आहुतिर्जुहुयात्। यथा-

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा। इदं विष्णवे नमम:।।

अथवा

ॐ नमो नारायणाय स्वाहा। इदं विष्णवे नमम:।।

इति प्रधान होमः।

इस प्रकार स्तुति करके कलश सहित सुवर्ण-सर्प ब्राह्मण को दें। आचार्य के

Scanned with CamScanner

लिए गाय के दान का विधान है या तत्तुल्य दक्षिणा देवे। अन्त में ब्राह्मणों से आशीर्वाद लें। इस विधि से सर्प का संस्कार करने पर मनुष्य निरोगी हो जाता है। उत्तम सन्तति को प्राप्त करता है तथा उसे अकालमृत्यु का भय नहीं रहता। इसके बाद उत्तरपूजा में हवन प्रारंभ करें।

-प्रमाणम्-

कृत्वा सर्पस्य संस्कारमनेन विधिना नरः।
नीरोगो जायते क्षिप्रं, सन्तति लभते शुभाम्॥

-धर्म सिन्धु/परि. 3/पृष्ठ 242

1. सर्पों पर रुद्रभिषेक करें।
2. प्रधान होम के पहले स्थापित ग्रहादि का हवन करें।

Scanned with CamScanner

सर्पसूक्त

ब्रह्मलोकेषु ये सर्पा शेषनाग पुरोगमा:।
नमोस्तुतेभ्य: सर्पेभ्य: सुप्रीतो मम सर्वदा।।1।।
इन्द्रलोकेषु ये सर्पा: वासुकि प्रमुखादय:।
नमोस्तुतेभ्य: सर्पेभ्य: सुप्रीता मम सर्वदा:।।2।।
कद्रवेयाश्च ये सर्पा: मातृभक्ति परायणा।
नमोस्तुतेभ्य: सर्पेभ्या: सुप्रीता: मम सर्वदा।।3।।
इन्द्रलोकेषु ये सर्पा: लक्षका प्रमुखादय:।
नमोस्तुतेभ्य: सर्पेभ्य: सुप्रीता: मम सर्वदा।।4।।
सत्यलोकेषु ये सर्पा: वासुकिना च रक्षिता।
नमोस्तुतेभ्य सर्पेभ्य: सुप्रीता: मम सर्वदा।।5।।
मलये चैव ये सर्पा: कार्कोटक प्रमुखादय:।
नमोस्तुतेभ्य सर्पेभ्य: सुप्रीता: मम सर्वदा।।6।।
पृथिव्यांचैव ये सर्पा ये साकेत वासिता।
नमोस्तुतेभ्य: सर्पेभ्य: सुप्रीता: मम सर्वदा।।7।।
सर्वग्रामेषु ये सर्पा वसंतिषु संच्छिता।
नमोस्तुतेभ्य: सर्पेभ्य: सुप्रीत: मम सर्वदा।।8।।
ग्रामे वा यदिवारण्ये ये सर्पाप्रचरन्ति च।
नमोस्तुतेभ्य: सर्पेभ्य: सुप्रीता: मम सर्वदा।।9।।
समुद्रतीरे ये सर्पाये सर्पाजलवासिन:।
नमोस्तुतेभ्य: सर्पेभ्य: सुप्रीता: मम सर्वदा।।10।।
रसातलेषु ये सर्पा: अननतादि महाबला:।
नमोस्तुतेभ्य: सर्पेभ्य: सुप्रीता: मम सर्वदा।।11।।

इस प्रकार स्तुति करके कलश सहित सुवर्ण-सर्प ब्राह्मण को दें। आचार्य के लिए गाय के दान का विधान है या तत्तुल्य दक्षिणा देवें। अन्त में ब्राह्मणों से आशीर्वाद लें। इस विधि से सर्प का संस्कार करने पर मनुष्य निरोगी हो जाता है। उत्तम सन्तति को प्राप्त करता है तथा उसे अकालमृत्यु का भय नहीं रहता। इसके बाद उत्तरपूजा में हवन प्रारंभ करें।

Scanned with CamScanner

अथ प्रधान होम द्रव्याणि

मधु, सर्पिष, क्षीर, सुगन्धित द्रव्य मिश्रित तिलहन से मिश्रण करे। गुग्गल अवश्य डालें।

सर्पयज्ञ-

अथ हवन मन्त्राः

नमोस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवी मनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥1॥
या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पती । रनु।
ये वावटेषु शेरते तेभ्य सर्पेभ्यो नमः॥2॥
ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु।
येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्य सर्पभ्यो नमः॥3॥
आंयगौ पृश्निरक्रमीद सदन् मातरं पुरः।
पितरं च प्रयन्त्सवः॥4॥ (राहवे नमः)
ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ (केतवे नमः)
आनो भ्रदाः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवानो यथा सद्मिद वृधे असन्नाप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥5॥(अनन्ताय नमः)
देवानां भद्रा सुमतिऋजूयतां देवाना ठं, रातिरभिनो निवर्तताम्।
देवानां ठं. सुख्यमुपसे दिया वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीव से॥6॥
(वासुकिने नमः)
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं वरुण ठं. सोममश्विना सरस्वती नः सुभागा मयस्करत्॥7॥
(तक्षकाय नमः)
तन्नोवातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्णया युवम्॥8॥
(कर्कोटाय नमः)
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरब्धः स्वस्तये॥9॥

Scanned with CamScanner

(शेषाय नमः)
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।10।।
(पद्मनाभाय नमः)
पृषदश्वा मरूतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सुरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसागमन्निह:।।11।।
(शंखपालाय नमः)
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गे स्तुष्टुवा ठं. सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहित यदायु:।।12।।
(कम्बलकाय नमः)
शतमिन्नु शरदो अन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसंतनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गनतो:।।13।।
(कालीयाय नमः)
परिद्यामिव सूर्यो ऽहीना जनिमागमम्।
रात्री जगदिवान्यद्धंसात्तेना ते वारये विषम्।।14।।
यद् ब्रह्मभिर्यहषिभिर्यद्देवैर्विदितं पुरा।
यद्भूंत भव्यमासन्वत्तेना ते वारये विषम्।।15।।
मध्वा पृन्चे नद्यः पर्वता गिरयो मधु।
मधु परुष्णी शीपाला शमास्ने अस्तु शं हृदे।।16।।
मा नो देवा अहिर्बधीत्सोकान्त्सह पूरुषान्।
संयतं न विष्परन्द्यात्त न सं यमन्नमो देवजनेभ्य:।।17।।
नमोऽस्त्वसिताय नमस्तिरश्चिराजये।
स्वजाय बभ्रवे नमो नमो देवजनेभ्य:।।18।।
सं त्वे हन्मि दता दतः समुते हवा हन्।
सं ते जिह्वया जिह्वां सम्वास्नाहं आस्यऽम्।।19।।
अन्तरिक्षेण पतति विश्वा भूतावचाकशत्।
शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम।।20।।
ये त्रयः कालकाञ्जा देवि देवा इवश्रिताः।
तान्सर्वान्ह्व उतयेऽस्मा आरिष्टतातये।।21।।
अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थे समुद्रे अन्तर्महिमा ते पृथिव्याम्।
शुनो दिव्यस्य यन्य हस्तेना ते हविषा विधेम।।22।।
यत्ते देवा अकृण्वन्भागधेय ममावास्ये संवसन्तो महित्वा तेना नो

Scanned with CamScanner

यज्ञ पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्।।23।।
अहमेवास्म्यमावास्या: मामा वससन्ति सुकृतो मयी मे।
मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्र ज्येष्ठा: समगच्छन्त सर्वे।।24।।
आगत्रात्री संगमनी वसूनामूर्जं पुष्टं वास्वावे शयन्ती।
आमावासाऽयै हविषा विधेर्भोजं दुहाना पयसा न आगत्।।25।।
अमावास्ये न त्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिभूर्जजान।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।26।।
पूर्णापश्चादुत पूर्णा पुरस्तादुन्मध्यत: पौर्णमासी जिगाय।
तस्यां देवै: संवसन्तो महित्वा नाकस्य पृष्ठ समिष्नामदेय।।27।।
वृषभं वाजिनं वयं पौर्णमासं यंजामहे।
सनो ददात्वक्षितं रयिमनुपदस्वतीम्।।28।।
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिभूर्जजान।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।29।।
पौर्णमासी प्रथम यज्ञियासीदह्नां रात्रीणामतिशर्वरेषु।
ये त्वां यज्ञैर्यज्ञिये अर्धयन्त्यमी तेनाके सुकृत: प्रतिष्ठा:।।30।।
अपेह्यरिग्स्यारिर्वा असि। विशे विषमपृक्था विषमिद्वा अपृक्था:
अहिमेवाभ्यपेहि तं जहि।।31।।
इन्द्रस्य प्रथमो रथोदेवानामपरो रथो वरुणास्य तृतीया इत्।
अही नामपमा रथ स्थाणुमारदथार्षत्।।32।।
दर्भ: शोचिस्तरुणकमश्वस्य वार: पुरुषस्य वार: रथस्य बन्धुरम्।।33।।
अवश्वेत पदा जहि पूर्णेण चापरेण च।
उदप्लुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम्।।34।।
अरंधुषो निमज्योन्मज्य पुनरब्रवीत्।
उदप्लुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम्।।35।।
पैद्वोहन्ति कसर्णीलं पैद्व: श्चित्रमुतासितम्।
पैद्वो रथर्न्या: शिर: सं विभेद पृदाक्वा:।।36।।
पैद्व प्रेहि प्रथमोऽनु त्वा वयमेमसि
अहीन्नयऽस्यतात्पथे येनस्या वयमे मसि।।37।।
इदं पैद्वो अजायतेदमस्य पराणयम्।
इमान्यर्वत: पदाहिघ्न्यो वाजिनीवत:।।38।।
संयतं न विष्पदद्व्यात्तं न सं यमत्।
अस्मिक्षेत्रे द्यावही स्त्री च पुमाश्च तावुभावरसा।।39।।

Scanned with CamScanner

अरसास इहाह्यो ये अन्ति ये च दूरके।
घनेन हन्मि वृश्चिकमहिं दण्डेनागतूम्॥40॥
अथाश्वस्येदं भेषजमुभयोः स्वजस्य च।
इन्द्रो मेऽहि मघायन्त महिं पैद्वो अरन्ध्यत्॥41॥
पैद्वस्य अन्महेवयं स्थिरस्य स्थिरधाम्नः।
इमे पश्चा पृदाकवः प्रदीध्यन आसते॥42॥
नाष्टासवो नष्टविषा हता इन्द्रेण वज्रिणा।
जघानेन्द्रो जघ्निमा वयम्॥43॥
हतास्तिरश्चिराजयो निपिष्टासः पृदाकवः।
दव्रि करिक्रतं श्वित्रं दर्भेष्वसितं जहि॥44॥
किरातिका कुमारिका सका खनति भेषजम्।
हिरण्ययीभिरभ्रिर्गिरीणामुप सानुषु॥45॥
आयभगन्युवा भिष्क्पृक्निहा पराजितः।
स वै स्वजस्य जम्मन उभयोवृश्चिकस्य॥46॥
इन्द्रो मेऽहि मरन्धयत्पृदाकुं च पृदाक्वम्।
स्व्जं तिरश्चिराजिं कसर्णीलं दशोनसिम्॥47॥
इन्द्रो जघान प्रथमं जनिता रमहे तव।
तेषायु तृभंमाणं कः स्वित्तेषामसद्रसः॥48॥
सं हि शीर्षाण्यग्र पौन्जिष्ठ इव कर्वरम्।
सिन्धोर्मध्ये परेत्य व्यऽनिजमहे विषम्॥49॥
अहीनां सर्वेषां विषं परा वहन्तु सिन्धवः।
हतास्तिराश्चि राजयो निपिष्ठासः पृदाकवः॥50॥
औषधीनामहं वृण उर्वरीरिव साधुया।
नयाम्यर्वती रिवाहे निरैतु ते विषम्॥51॥
यदग्नौ सूर्ये विषं पृथिन्यामोषधीषु यत्।
कान्दाविषं कनन्ककं निरैत्वैतु ते विषम्॥52॥
ये अग्निजा औषधिजा अहीनां ये अप्सुजा विद्युत आवभूवु।
येषां जातानि बहुधा महान्ति तेभ्यः सर्पेभ्यो नमसा विधेम॥53॥
तौदी नामासि कन्याऽधृतारची नाम वा असि।
अधस्पदेन ते पदमा ददे विषदूषणम्॥54॥
अङ्गादङ्गात्प्रय च्वावय हृदयं परि वर्जय।
अधा विषस्य यत्तेजोऽवाचीनं तदेतु ते॥55॥

Scanned with CamScanner

आरे अभूद्विषमरौद्विषे विषम प्रागपि।
अग्निर्विषमहे र्निरधात्सोमो निरणयीत्।
दष्टारमन्वगा द्विष महिरमृत।।56।।
अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं जयाया हेतिं परिबाधमान:।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ठं. संपरिपातु विश्वत:।।57।।
वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सरवा प्रतरण: सुवीर:।
गोभि: सन्नद्धो असि वीड्यस्वास्थाता ते जयतु ते त्वानि।।58।।
कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृध: सखा।
कया शचिष्टया वृता।।59।।
काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुष: परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।60।।
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे।
समुषभ्दिरजा यथा।।61।।

भूताय त्वा नारातये स्वरभिविख्येषं दृ ठं, हन्तां दुर्या: पृथिव्या-मुर्वन्तरिक्ष मन्नेमि पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाभ्यदित्या उपस्थेऽगने हव्यं ठं. रक्ष।।62।।

तक्षकाम नम: अनन्ताय नम:
कर्कोटकाय नम: वासुकिने नम:
शंखपालाय नम: शेषाय नम:
कम्बलकाय नम: पद्मनाभाय नम:
अश्वनागाय नम: धृतराष्ट्राय नम:
कुलीरकाय नम: कालीयाय नम:
वैन्याय नम: सर्वेभ्य: नागिनीभ्यो नम:
अंगाय नम:
हैहयाय नम:
भूतनागेभ्यो नम:
एतैत् सर्पा: शिवकंठभूषा, लोकोपकाराय भुवं वहन्त:
जिह्वाद्वयोपेत मुखा मदीयां, गृह्णीत पूजा सुखदां नमो व:।।

> "शक्तिशाली सर्प मनोभावों को ताड़ लेते हैं। अत: उन्हें देखकर डरे नहीं, न ही उन्हें मारने की सोचें। उन्हें सच्चे मन से नमस्कार करें। मनौती करें, नैवेद्य चढ़ावें। वे बिना आपको नुकसान पहुंचाए, अपने रास्ते चले जाएंगे तथा आपके अभिलषित कार्य को भी सिद्ध कर देंगे।"
>
> -डॉ. द्विवेदी

Scanned with CamScanner

होमान्ते उत्तरपूजनम्

स्थापित देवानां उत्तरपूजनं च करिष्ये। गणेश मातृका कुण्डग्रह मृत्युञ्जय प्रधान देवतानां पूजन। पूजान्ते स्विष्टकृत होम: नवाहुतय:। स्थापित देवतानां बलिदानम्।

होमात्मकं दिग्पतिनां बलिदानम्।।

यदि जपात्मक होम हो तो उसका भी बलिदान करना।

बलिद्रव्याय नम: सम्पूज्य गधं पुष्पं समर्पयामि

(एक पत्तल पर तीन चावल के पिण्ड, उस पर शक्कर, घी का लेपन, एक तेल का दीपक आटे का चौमुखी लगाना, एक दोने में दूध, केसर, इलायची रखना, ऊपर गन्ध, अबीर, गुलाल चढ़ाना आदि तथा यह बलि-पत्तल किसी निर्जन, ऊंचे पर्वत या चौराहे पर रखना। काम्य विधि में बलिदान का बड़ा महत्त्व है।इस बलि पर कौआ शीघ्र झपटता है। अतृप्त आत्माएं कौए के शरीर में प्रवेश करती हैं। इसलिए पैतृक बलि लेने के लिए प्रथम कौआ ही आता है। ईश्वर ने उन्हें ही यह अधिकार दिया है। कौआ यमदूत है। वह धरती पर पक्षी रूप में भ्रमण करता रहता है।

एष बलिगणेशं नम: अनेन पूजनपूर्वक बलिदान कर्मणा कृतेन महागणेश प्रियतां नम:

नमस्कार-

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय:।
निर्विघ्नं कुरु मे ये देव प्रसन्नोभव सर्वदा:।।

मातृका बलि-

बलिद्रव्याय नम: सर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं सम्पूज्य एषबली मातृकां निवेदयामि। ऐषबलि सहगणेश गौर्याद्यावाहित मातर: प्रियतान नम: नमस्कार: नमो देव्यै महादेव्यै।।

Scanned with CamScanner

ग्रहबलिदानम्-

अधि, प्रत्यधि, देवता संज्ञा, राज्ञी, छाया, प्रभा सहित सूर्याय नमः।

अधि, प्रत्यधि देवता रोहिणी, अमृतादि सहित सोमाय नमः।।

अधि प्रत्यधि देवता धाम्ना सहित भौमाय नमः।

अधि प्रत्यधि देवता ज्ञाना सहित बुधाय नमः।

अधि प्रत्यधि देवता यशस्विनी सहित गुरवे नमः।।

अधि प्रत्यधि देवता शांकरी सहित शुक्राय नमः।

अधि प्रत्यधि देवता मन्दा सहित शनैश्चराय नमः।

अधि प्रत्यधि देवता धूम्रा सहित राहवे नमः।

अधि प्रत्यधि देवता शंकरी सहित केतवे नमः।

रुद्राणि सहित महारुद्राय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं समर्पयामि। बलि द्रव्याय नमः सम्पूज्य गन्ध पुष्पं समर्पयामिएष बलि निवेदयामि। अनया पूजन पूर्वक बलिदान कर्मणा कृतेन अधि प्रत्याधि देवता सहित नवग्रहाः प्रियतान् नमः। नमस्कारं।

ग्रहराज्यं प्रच्छन्ति-इसके बाद दशदिग्पालों की बलि जरूर देवें।

महामृत्युञ्जय बलिदानम्-

सर्वशक्तियुक्ताय महामृत्युञ्जयाय नमः सम्पूज्य गन्धं पुष्पं समर्पयामि बलिद्रव्याय नमः गन्धपुष्पं समर्पयामि (दूध, दही, घृत, मधु दो दोनों में रखें) महामृत्युञ्जय नमः बलिं निवेदयामि।

अनने पूजन पूर्वक बलिदान कर्मणा कृतेन सर्वशक्तियुक्त महामृत्युञ्जय प्रियतान् नमः। अमृतरक्षिणी सहित मनसादेव्यै नमः। सम्पूज्य गन्धंपुष्पं सम्पूज्य त्रिमधु (मधु, दूध, शक्कर) बलिद्रव्याय नमः। गन्धं पुश्पं सम्पूज्य ऐष बलिं निवेदयामि। अनेन पूजन पूर्वक बलिदान कर्मणा कृतेन सांग सपरिवार अमृतरक्षिणी सहिताय मनसा देव्याः प्रियतान् नमः मनसा देव्यै नमः।

प्रधान बलिम्-

धूम्रासहित राहवे नमः बाएं शंकरी सहित केतवे नमः। मध्ये अनन्तादि नवकुलनागेभ्यो नमः। सम्पूज्य गन्ध पुष्पं समर्पयामि। बलिद्रव्याय नमः (तीन शिकरो दही के रखने) सर्वोपचारार्थे गंध पुष्पं समर्पयामि। ऐषबलिं निवेदयामि। अनेनपूजन पूर्वक बलिदान कर्मणा कृतेन राहुकेतु सहित अन्ताध्यावाहित देवाः

Scanned with CamScanner

प्रियतान् नमः।।

नमोस्तु सर्पेभ्यो येकेच पृथ्वीमन।

ये अन्तरिक्षे ये दीवीतेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अनन्तं वासुकि शेषं पद्मं कम्बलमेव च।

धृतराष्ट्रं शंखपालं कालीयं तक्षकं तथा

पिंगल च महानाम मासि मासि प्रकीर्तितम्।

(नैऋत्य दिशा में सभी भूत-दिग्पालों की बलि दें)

सर्वदिग्भूतेभ्यो नमः गंधपुष्पं समर्पयामि। सर्वदिग्भूतबलि द्रव्याय नमः गन्धपुष्पं समर्पयामि। हस्ते जलमादाय सर्व दिग्भूतेभ्यो नमः इदं बलि निवेदयामि।

नमस्कार-सर्वदिग्भूतेभ्यो नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

अनयापूजन पूर्वक कर्मणा कृतेन सर्व दिग्भूतेभ्यो नमः।।

नाराचमुद्रा से भूतों को विसृजित करें-

ये रौद्रारौद्र कर्माणो रोद्रस्थान निवासिनः।

मातरोऽप्यग्ररूपश्च, गणाधिपतपश्चये।।

विघ्नभूताश्चये चान्ये, दिग्निवदिक्षु समाश्रिताः।

सर्वते प्रीतमनसः प्रतिगृहणं इमं बलिम्।।

तत्पश्चात् पूर्णाहुति करें। पूर्णाहुति में मृडनाम की अग्नि वैश्वानरः को आहूत करें। यथा-

मृडनाम्ने वैश्वानराय नमः।

मन्त्रपुष्पाञ्जलि, प्रदक्षिणा करें। अभिषेक लें। जल में सर्प छोड़ें तथा कालसर्प योग शान्ति की प्रार्थना करें।

मन्त्र पुष्पाञ्जलि-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाक महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। (यजु. 31/16) ॐ गणानांत्वा गणपति ఀ हवामहे प्रियाणात्वा प्रियपति ఀ हवामहे निधीनात्वा निधिपति ఀ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वाजासि गर्भधम्।। (यजु. 23/19) ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्व श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। (यजु. 19/6)

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। समे कामन् काय कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणोद्धातु वैश्रवणाय। महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति। साम्राज्यं, भोज्यं, स्वराज्यं, पारमेष्ठ्यं, राज्यं, महाराज्यमाधिपत्यमयं

Scanned with CamScanner

समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौम्:। सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुत: परिवेष्टारो मरुत्स्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवा: सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरूत विश्वतोमुखो विश्वताबाहुरुत विश्वतस्पात्। समबाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देवएक:।। (यजु. 17/19)

प्रदक्षिणा-

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानिसर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणापदे-पदे।।

"मनुष्य द्वारा जाने या अनजाने में जो कोई पाप किए गए हैं, वे परिक्रमा करते समय पद-पद पर नष्ट होते हैं।"

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिण:।
तेषां ठ सहस्रयोजेऽनवधन्वानि तन्मसि।। (यजु. 16/61)

ॐ सप्तास्य ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नम:, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा-

एकां विनायके कुर्याद् द्वे सूर्ये तिस्र ईश्वरे।
चतस्र: केशव कुर्यात्सप्ताश्वतथे प्रदक्षिणा:।।
एका चण्ड्या: रवे सप्त, तिस्र: कार्या विनायके।
हरेश्चतस्र: कर्त्तव्या: शिवस्यार्ध प्रदक्षिणा।।
वृषं चण्डं, वृषं चैव सोमसूत्र पुनर्वृषम्।
अपसव्यं यतीनान्तु सव्यन्तु ब्रह्मचारिणाम्।।
सव्यापसव्यं गृहिणामेवं शम्भो: प्रदक्षिणा।
सव्यं व्रजेत्तोत्तोऽसव्यं प्रनाल नैव लङ्घयेत्।।

गणपति को एक, सूर्य के दो, कृष्ण के चार, अश्वत्थ (पीपल) के वृक्ष के साथ दूसरे मत से चण्डी को एक, सूर्य को सात, विष्णु को चार, गणपति को तीन एवं शिवजी की आधी प्रदक्षिणा होती है। वृषभ से द्वारपाल की तरफ, फिर वहाँ से परनाल तथा परनाल से वृक्ष की तरफ से प्रदक्षिणा। यती लोग दायीं तरफ से, ब्रह्मचारी लोग बायीं तरफ से तथा गृहस्थ लोग दोनों तरफ से प्रदक्षिणा कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

अथाभिषेक मन्त्रा:

(आचार्यगण सर्व औषधियुक्त जल, समुद्र जल, पूजा के कलश में लेकर यजमान को निम्न मंत्रों से अभिषेक दें।)

यो सौ व्रजधरो देव: आदित्यानां प्रभुर्मत:।
सहस्रनयन: शक्रो राहुपीड़ा व्यपोहतु।।1।।
मुखं य: सर्व देवानां, सप्तार्चि रमितद्युति:।
कालसर्प कृतो दोष तस्य पीडां व्यपोहतु।।2।।
य: कर्मसाक्षी लोकानां, धर्मो महिष वाहन:।
राहुकाल कृतां पीड़ां, सर्व पीडां व्यपोहतु।।3।।
रक्षोगणाधिप: साक्षान्नीलाञ्जन समप्रभ:।
खड्गहस्तोति भीमश्च, ग्रहपीडां व्यपोहतु।।4।।
नागपाशधरोदेव: सदा मकरवाहन:।
सजलाधिपतिर्देवो राहुपीडां व्यपोहतु।।5।।
प्राणरूपोहि लोकानां सदाकृष्ण मृगप्रिय:।
कालसर्पोद्भवां पीड़ां, ग्रहपीडां व्यपोहतु।।6।।
यो सौ निधिपतिर्देव: खड्गशूल गदाधर:।
कालसर्पस्य कलुषं, धनदोत्र व्यपोहतु।।7।।
यों साविन्दुधरो देव: पिनाकी वृषवाहन।
राहु केतु कृतं दोष स नाशयतु शंकर:।।8।।

नोट - यह अवभृथ स्नान है। यहाँ वस्त्र छोड़े जाते हैं। जैसे सांप पुरानी केंचुली छोड़कर नया वस्त्र धारण करता है वैसे ही यजमान पुराने प्रायश्चित्त को त्याग नया जीवन धारण करता है।

Scanned with CamScanner

जल में सर्प छोड़ने का मन्त्र

कालसर्प योग की विधि कराने के बाद अथवा किसी दिन शुभमुहूर्त में किसी नदी, तालाब, समुद्र या जलाशय के किनारे वरुणदेवता का पूजन करें। गायत्रीमन्त्र से सूर्य को अञ्जलि देने के बाद, हाथ में चांदी के सर्प लें, अथवा किसी दोने में दूध, केसर डाल कर उसमें सर्प रख दें। मन में ऐसी भावना रखें कि इस सर्प विसर्जन के साथ ही हमारे सारे अशुभ कर्म पाताल लोक में जाकर शान्त हो जाएं। निम्न मन्त्र तीन बार अर्थ सहित पढ़ें।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये दिवि[1] येषाँ वर्ष मिषवः तेभ्यो दशप्राची र्दशादक्षिणा दशप्रतीची र्दशोदीची र्दशोर्द्ध्वाः तेभ्योनमोऽअस्तुतेनो वन्तुतेनो मृड्यन्तुते यन्द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टितमेषां जन्मेदध्मः॥

उन सर्पों के निमित्त नमस्कार है जो सर्प द्युलोक में, अन्तरिक्ष में और पृथिवी लोक में विद्यमान हैं। उन सर्पों के निमित्त पूर्वदिशा में दश अंगुली होकर (हाथ जोड़कर) नमस्कार है। दक्षिण दिशा में दश अंगुली होकर, पश्चिम दिशा में दश अंगुली होकर, उत्तर दिशा में दश अंगुली होकर, ऊर्ध्व में दश अंगुली होकर करबद्ध नमस्कार करता हूँ।

उन सर्पों को नमस्कार है, वे सर्प हमारी रक्षा करें, वे हमको सुखी करें। हे सर्प के अधिपति रुद्र! जिससे हम द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष रखता है उनको हम इन सर्पों की तीक्ष्ण दाढ़ों में सौंपते हैं। ये सर्प हमारे निमित्त शान्त होकर पाताल लोक में चले जाएं और हमें सभी प्रकार के भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख-शान्ति, ऐश्वर्य एवं वैभव से परिपूर्ण करें।

टिप्पणी-यहां पहली बार मन्त्र के उच्चारण में 'दिवि' दूसरी बार 'अन्तरिक्ष' और तीसरी बार 'पृथिवी' शब्द का घोष करें। यह मन्त्र अति गोपनीय है तथा पहली बार इस पुस्तक के माध्यम से प्रबुद्ध पाठकों के सामने अर्थसहित उद्घाटित किया जा रहा है। ताकि जनता जनार्दन भी इस वैदिक-मन्त्र के चमत्कार का लाभ उठा सके। यजुर्वेद संहिता के इस मन्त्र के देवता रुद्र हैं, ऋषि परमेष्ठी प्रजापति हैं, तथा इसका छन्द 'धृति' है, तथा इसमें 'सर्पेभ्यो' या 'रुद्रेभ्यो' दोनों का वाचन कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग शान्तिः प्रार्थना

जल में सर्प विसर्जन करते समय अपनी जन्मकुण्डली में प्रकट विशिष्ट कालसर्प योग का नाम लेकर 'कालीयो' की जगह उस नाम को रखकर प्रस्तुत प्रार्थना करें।

कालीयो नाम नागोऽसौ, कृष्णस्य पाद पांशुना।
रक्षा ताक्ष्येण सम्प्राप्तः सोऽभयं हि ददातु नः॥1॥
कालीयो नाम नागोऽसौ, विषरूपो भयंकरः।
नारायणेन संपृष्टो, सदा शं विदधातु नः॥2॥
कालीयो नाम नागोऽयं, ज्ञातो सर्वै महाबली।
अभयं प्राप्त कृष्णेन, निर्भयो विचरत्यहि॥
सो कालीय स्वदोषाच्च निर्भयं कुरु मां सदा।
अनेन पूजनेनाथ, प्रीतो सुखकरो भवेत्॥3॥
बलिं प्राप्य स्वकीयां हिं आशीषं में प्रयच्छतु।
कालसर्पस्य दोषाऽयं, शान्तो भवतु सर्वथा॥4॥
तृप्तो नागः प्रयच्छं में, धन धान्यादि सम्पदः।
जले विहर त्वं नाग, मां हि शान्तिप्रदो भव॥5॥
॥ समाप्तः ॥

Scanned with CamScanner

॥ नागसहस्रनामावलिः ॥

ॐ अस्य श्री नागदेवससहस्रनाममंत्रस्य अग्निऋषिः सर्वाणिछंदांसि तक्षो देवता क्षं बीजं ह्रीं शक्तिः नृं हृदयम् क्लीं कीलकम् विषं इति अस्रम् अमृतं इति कवचं अनन्तशेषतक्षकं इति परमो मंत्रः श्री अनन्तादिनवकुलनागदेवताप्रीत्यर्थ सहस्रनामभिः पुष्पार्पणे (बिल्वार्पणे, तुलसीदलार्पणे...) विनियोगः। (आदौ प्रणवः अंते नमः योजयेत्) ॐ अनंताय नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ तक्षकाय वासुकिने शंखपालाय महापद्माय कंबलाय कर्कोटकाय कुलिकाय फणिराज्ञे स्थिराय प्रभवे भीमाय प्रवराय वरदाय वराय मणिमंडलभूषिताय सर्वात्मने

सर्वविख्याताय, सर्वस्मै, सहस्रपदे, गूढगुल्फाय, हेमजंघाय, दिगंबराय, गंभीराय, वाताशनाय, उरगाय, कालयाय, कंबुकंठाय, विषकलाय, मणिभूषणाय, सुलक्षणाय, सर्वज्ञाय, भयाय, गरिम्णे, गर्विणे, सर्वागाय, सर्वभावनाय, सर्वभूतहराय, वृत्तये, निवृत्तये, नियंताय, शाश्वताय, ध्रुवाय, भगवते, अर्हणाय, अभिवाद्याय, महाकर्मणे, उन्मात्ताय, प्रच्छन्नाय, पातालवासिने, महायशसे, महाकायाय, पन्नगाय, शंकरभूषणाय, अनंतशिखिने, पातालवासिने, महायशसे, विश्वरूपाय, महाहनवे, लोकपालाय, अंतर्हितात्मने, प्रसादाय, पवित्राय, महते, नियमाय, नियमाश्रिताय, चमुनान्तर्वासिने, विषग्रहाय, विषहंत्रे, नागेन्द्राय, नागकन्यापरिवृताय, नागलोकाधिपतये, शौरये, अपराजिताय, स्वकर्मणे, सर्वभूताय, आवये, आविकाराय, निधये, सहस्राक्षाय, विशालाक्षाय, शनये, केतवे, ग्रहाय, ग्रहपतये, कालघ्ने, विश्वरूपिणे, विश्वात्मने, जगत्पतये, सर्वभूतात्मने, सर्वेश्वराय, चंचलाय, चपलाय, महाबलाय, उत्कंठाय, अंबुजाय, अहिर्बुध्न्याय, आह्निककर्मणे, अमितविक्रमाय, अपराजिताय, अश्वदाय, अग्निनेत्राय, अग्निवपुषे, अत्रिपुत्राय, अनघाय, आदिनाथाय, साधकाय, मंत्राय, योगिने, योज्याय, महाबीजाय, महारेतसे, महाबलाय, सर्वज्ञाय, सुबीजाय, बीजवाहनाय, भूपतये, विश्वरूपाय, स्वयंश्रेष्ठाय, बलाधीशाय, अबलाय, अट्टहासाय, अनाकुलाय, अघनाशिने, अनघाय, अप्सुनिलयाय, अर्हाय, अष्टमूर्तये, अनिर्विण्णाय, अचंचलाय, अष्टदिक्पालमूर्तये, अन्तकराय, गणाय, गणकर्त्रे, कामाय, सर्वभावकराय, सुरूपाय, तेजसे, तेजस्करनिधये, उदग्राय, दीर्घाय, हरिकेशाय, सुतीर्थाय, सिद्धार्थाय, सर्वशुभकराय, अरूपाय, अनंतरूपाय, अभ्यंकराय,

Scanned with CamScanner

अक्षराय, अभ्रवपुषे, अव्ययाय, अनादिनिधनाय, अघशत्रवे, अमराविघ्ने, हर्त्रे, अनादये, अनुत्तमाय, अह्ने, अमोघाय, बहुरूपाय, कपर्दिने, ऊर्ध्वरेतसे, सेनापतये, विभवे, अहश्चराय, नक्तंचराय, निम्नमन्यवे, सुवर्चसाय, गजघ्ने, दैतयघ्ने, कालाय, लोकधाम्ने, गुणकराय, सिंहशार्दूलरूपाय, कालयोगिने, महानादाय, सर्वकामाय, निशाचराय, बहुधराय, स्वर्भानवे, गतये, नित्यप्रियाय, नित्यनर्ताय, नर्तकाय, सर्वलालसाय, घोराय, नित्याय, गिरिसहायाय, अनभसे, विजयाय, व्यवसायाय, अतीन्द्रियाय, अघर्षणाय, घर्षणात्मने, कामनाशकाय, सुसहाय, मध्यमाय, तेजोपहारिणे, बलदात्रे, (200), भूरिदाय, अर्थाय, अवराय, गरलांशाय, गभीराय, गंभीरबलवाहनाय, बृहत्कर्णस्थितये, सुतीक्ष्णदशनाय, महाकायाय, महाननाय, अहायाय, अमृताय, अघोरवीर्याय, अवृंगाय, अविघ्नाय, अमिततेजसे, अतिवंद्याय, अष्टांगन्यासरूपाय, अनिलाय, अवशाय, अनावरणीयाय, तीक्ष्णतापाय, सहाय, कर्मकालविदे, समुद्राय, वडवामुखाय, हुताशनसहायाय, प्रशान्तात्मने, हुताशनाय, उग्रतेजसे, जन्याय, विजयकालविदे, ज्योतिषाम्नायाय, सिद्धये, सर्वविग्रहाय, शिखिने, ज्वालिने, मूर्तिदाय, भुजंगाय, बलिने, तेजस्विने, शंखाय, पद्माय, अश्वतराय, धृतराष्ट्राय, पणविने, कालियाय, कपालाय, तालिने, खलिने, कालात्मकवंटकाय, नक्षत्रविग्रहमनसे, गुणबुद्धये, भावाय, अनामयाय, प्रजापतये, विश्वबाहवे, विभावाय, सर्वगाय, विमोदनाय, सुराख्याय, हिरण्यकवचधराय, भेदभंजकाय, बलहारिणे, महीचारिणे, अशोकाय, अनुकूलाय, अमिताशनाय, अरण्यवासिने, अप्रभावाय, अनलाय, स्नुवाय, सर्वतुर्यविनाशिने, सर्वतापपरिग्रहाय, व्यालरूपाय, गुहावासिने, गुहाय, मालिने, तरंगविदे, अनिर्देश्यवपुषे, अहोरात्राय, अमृत्यवे, अकारादिहकारान्ताय, अनिमिषाय, अस्वरूपाय, अग्रण्याय, महिषाय, विकालदृगे, सर्वकर्मबंधविमोचनाय, असुरेन्द्राणां, बंधनाय, युधि, शत्रुविनासिने, सांख्यप्रसादाय, दुर्वाससे, सर्वशत्रुनिषेविताय, प्रस्कन्दनाय, विभागाशयाय, अनुकूलाय, अप्रथिताय, असंख्येयाय, अन्नपतये, (300), अमृतपतये, अजिताय, यज्ञांगविदे, सर्वचारिणे, दुर्वाससे, वासनाय, सर्ववासाय, हेमांगाय, अमराय, धरोत्तमाय, लोहिताय, महाज्ञानाय, विजयाय, विशाखाय, सर्वकामदाय, सर्वकालप्रसादाय, सुबलाय, बलारूपधृगे, अपांनिधये, अपांपतये, असुरघातिने, अमरप्रियाय, अधिष्ठानाय, अरविंदप्रियाय, अरविंदवदनाय, अष्टसिद्धिदाय, संग्रहाय, निग्रहाय, मुख्याय, अमुख्याय, सर्वपरिनिवासाय, देहाय, सर्वकामवराय, महावेगाय, वसुवेगाय, सुवर्चस्विने, बहुरश्मे, अंशवे, रौद्ररूपाय, अवशाय, जितात्मने, आकाशनिर्विरूपाय, सर्वज्ञाय, निशांपतये, अतिदीप्ताय, सहस्रदाय, मनोवेगाय,

Scanned with CamScanner

सर्ववासिने, श्रद्धावासिने, अकाराय, उपवेशकराय, आत्मभिदे, संलग्नाय, अनंतशयाय, अनंतब्रह्मांडपतये, अशिवविनाशाय, अतिभूषणाय, अविद्याधराय, सिद्धसाधनाय, महर्षये, सिद्धयोगिने, दक्षिणाय, प्राच्यै, यशसे, अर्थकराय, अव्ययाय, भावनाय, कामाय, उन्मादाय, भिक्षवे, विषयाय, मृदवे, महीसैन्याय, विशाखाय, षष्ठिभागाय, रिपुभिदे, चतुरस्तंभाय, वृत्तावृत्तकराय, ताल्घ्नाय, मधवे, अतिप्रियाय, अकल्मषाय, अकलयाय, अतुलितबलाय, अचलरूपाय, अघोराय, अक्षोभ्याय, अलक्ष्मीनाशकाय, मधुकलाय, वाचस्पतये, वाजसेनाय, आश्रमपूजिताय, ब्रह्मचारिणे, लोकचारिणे, विचारविदे, सर्वचारिणे, अतिसुंदराय, मनोहराय, अद्वैताय, अमितप्रभवाय, (400), अवनिपतये, अपवर्गप्रदाय, कालाय, निशाचारिणे, पिनाकधृषे, विभिन्नस्थाय, नंदिने, नंदिकराय, अर्चिष्मते, निमित्ताय, नंदनाय, अघहारिणे, विरंचिने, विश्ववरदाय, ज्ञानरूपाय, विश्वचक्षुषे, जगन्मायिने, महाकालाय, विद्यानिधये, अमदाय, गजरूपाय, सत्यधराय, सुराधीशाय, समस्तसाक्षिणे, संसाराय, त्रिलोकाय, अमोघविक्रमाय, पुष्टाय, वक्रगतये, कांतिदाय, कामरूपिणे, कामयोगिने, कमलाक्षाय, शुद्धाय, दीप्रतुंडाय, सुराध्यक्षाय, योगाध्यक्षाय, बीजाध्यक्षाय, बलाय, ईतिहरय, निशाकराय, दलाय, अह्लाय, वैदर्भाय, भारवर्जिताय, आपदाय, गणप्रियाय, गणप्रियसुहृदे, गणविहरणानित्याय, गणप्रतीतिवर्धनाय, अतिधूम्राय, गणगर्वपरिहर्त्रे, गणप्रवृत्तमानसाय, महाश्चालाय, अग्निज्वालाय, महाघोराय, महामेघवासिने, अमरमर्दनाय, भयंकराय, नैष्काराय, अभयदात्रे, बहुप्रसादाय, अनागताय, गोत्रर्तिनाशिने, गोत्रप्रियाय, गोत्रपतये, गोपदप्रियाय, गौतमाय, अविनाशाय, गौतमामृत्युपरिहाराय, गौतमीतीर्थदाय, गौतमार्तिसंहारिणे, महायशसे, महाकायाय, सर्ववह्निमणिप्रियाय, सुवर्णाय, कुलवर्णाय, महागर्भपरायणाय, महाकायाय, उत्सर्गाय, लघवे, महाग्रीवायं, शरण्याय, सिद्धसेनाय, अव्यग्राय, गणाध्यक्षाय, गणसाध्याय, गणनायकाय, ज्योतिश्चराय, सिद्धवेदाय, लीलासेविताय, पूर्णाय, परमसुंदराय, नित्याय, कवये, लोककर्मिणे, महाकर्त्रे, अनौषधाय, परब्रह्मणे, कालपतये, (500), नीतये, अनीतये, शुद्धात्मने, स्वस्तभावाय, स्तस्तिदाय, शूरमदाय, दिव्यपापघ्नाय, भक्तकल्पाय, कल्याणगुरवे, सहस्रशीर्षे, निरवग्रहाय, शोभनाय, अंगलुब्धाय, नीलाय, वर्चस्विने, हविषे, गणभूतये, गणवल्ल, मूर्तये, गणसर्वस्मै, गणप्राणाम, गणस्तुताय, भागकराय, भामिने, कलिनाशनाय, महायोगिने, महात्मने, भुवनेश्वराय, भूतभव्याय, भावितात्मने, भूतनिकराय, शरण्याय, वरेण्याय, सुसंयुक्ताय, परद्राणाय, प्रीतात्मने, महाबुद्धये, प्राप्तबाणाय, गरिष्ठदृशे, गौरकीर्तये, गौरिप्रणयाय, गौरिवरप्रदाय, गौरिप्रियाक्षाय, गौरीशनंदनाय,

Scanned with CamScanner

मनोवांछितसिद्धकृते, महामूर्ध्ने, महानेत्राय, महांतकाय, महाहनवे, महानासाय, महाग्रीवाय, अंतरात्मने, बभ्रुवाहनाय, आनंदितमनसे, कृतमंगलाय, कपर्दिने, प्रचंडवेगाय, सुमनसे, धर्मवरुणाय, समायुक्ताय, कृतिनां, वराय, आस्यदंतपंक्तये, श्रेष्ठाय, कारुणिकाय, बोधकाय, समलोकज्ञाय, सर्पराज्ञे, संजीवनाय, जीवनाय, जगज्जीवाय, जगत्पतये, गणैकनेत्रे, गानपराय, गानयज्ञाय, गानसिंधवे, गानभूषणाय, गानसमुद्राय, गानांगज्ञानदृगे, गानभूतये, गानोत्सुकाय, महाभूताय, महादिव्याय, महाद्रष्ट्रे, महाकृताय, महामायाय, मायातत्त्वाय, गतश्रमाय, ज्ञानविज्ञानसंपन्नाय, गानश्रवणलालसाय, गानयज्ञाय, गानप्रणयवते, गानध्यात्रे, गानगुणिने, विश्वप्रियाय, संविभागिने, कल्पकर्त्रे, कल्याणकराय, परावराय, परावज्ञाय, समास्थाय, अर्थप्रदाय, (600), देवाधिपतये, मेरुधाम्ने, मंडलिने, वायुवाहनाय, अनलाय, स्नेहाय, अस्नेहाय, अर्हिताय, महामुनये, गंधर्वाय, विद्वत्तमाय, विधये, पतंगाय, गतिप्रियाय, सर्वदमनाय, भावितात्मने, दीर्घक्रोधाय, आलोककृते, नाभये, आशुवेगाय, अध्ययनाय, कालपूजिताय, कालाय, कालिकाय, यज्ञाय, यज्ञसमाहिताय, कीर्तिकराय, वरुचिने, परंतापाय, अमरश्रेष्ठाय, समुदाचाराय, तमोघ्ने, अंत:करणाय, प्रमतनिद्राय, भूतेशाय, गगनस्थाय, जीवानंदाय, अग्नये, ध्रुवाय, वरुणपाशाय, जगत्स्वामिने, कंचनवृद्धाय, कनकाय, उपकाराय, अभिगम्याय, अमोघाय, प्रशमाय, ऋजुपादभुजाय, सगणाय, वीर्यनिधये, असंगगामिने, सुरकार्यज्ञाय, सुरश्रेष्ठाय, सुरपतये, वयसां, पतये, संप्रतापनाय, भूमिजनकाय, अनिमिषगतये, सर्वपूजिताय, कवीशाय, कपिलाय, अंबुजाय, विश्वकर्मभूतये, जलेशयाय, महाक्रोधाय, अनुकांक्षिणे, पराय, अपराय, सर्वांगरूपाय, मायाविने, सत्यशस्राय, विश्वेदेवाय, अनिलयाय, अलौकिकाय, सर्वतोमुखाय, प्रणताय, कालानिलद्युतये, सुखसंपदाय, जगतामादिकारणाय, महेन्द्रमित्राय, सर्वपतये, सर्वशत्रुनिवारणाय, सर्वकल्याणभाजनाय, वैश्रवणाय, सर्वाशयाय, पुण्यसंचयाय, अतिशांताय, महागर्भाय, उरुगाय, दीर्घलोचनाय, समायुक्ताय, लोकेशाय, अलोकेशाय, वेदनिलयाय, प्रकृतिस्थिताय, हरिप्रियाय, मोक्षाधारनिकेतनाय, राजाधिराजाय, विद्याधराय, विषादधुने, (700), सर्वोपाधिस्थितिकराय, स्वाहास्वधावेदाधिकाराय, विघ्नदात्रे, सुगंधप्रियाय, धर्मप्रवर्तकाय, वेदप्रतिष्ठाय, सर्वप्राणिपतये, सुखकराय, सर्वरत्नविदे, जगत्कालस्थानाय, लोकहिताय, कवचांगाय, सर्वभूतवादिने, सर्वभूतनिलयाय, दिव्यजनमनोहराय, मायामुक्ताय, अधिदेवाय, पुराणप्रभवे, सत्त्वात्मने, सप्तसागराय, सत्यविदे, सत्त्वसाराय, सत्यध्यानप्रियाय, संतापनाशनाय, सर्वनिर्णयाय, सर्वसाक्षिणे, बहुलानंदवर्धनाय, अव्यक्तपुरुषाय, परमात्मने, परात्परविनिर्मुक्ताय, सत्यप्रकाशात्मने,

Scanned with CamScanner

भावकरणाय, भयसंतापनाशनय, प्रत्यक्ब्रह्मसनातनाय, प्रमाणविगताय, प्रत्याहारिनियोजकाय, प्रणवाय, प्रणवातीताय, परमात्मने, प्रबोधकाम्नाधाराय, संस्थिताय, यज्ञाय, आवेदनीयाय, सर्वसंघसुखाय, तारणाय, कलाधिपतये, परात्पराय, चराचरविकासकृते, विश्वप्रणवकृते, नमस्कारप्रियाय, युगादिकरणाय, वेदशास्त्राय, जातवेदसे, जगद्धृते, कांतये, संयोगवर्धनाय, गुणाधिकवृद्धाय, नित्यतृप्ताय, सुवर्णविज्ञात्रे, आवर्तमानवपुषे, वसुश्रेष्ठाय, अंगिरथयोगिने, निर्जीवाय, निधनाय, महार्णवाय, पंडिताय, मदपाय, युगरूपाय, युगकराय, अधियोगाय, धर्मकर्मप्रभावकृते, आधारभूताय, धनधान्यसमृद्धिने, संतापसंहर्त्रे, मनोवांछितदायकाय, कालाभयनंतरूपाय, मुनिवरनमस्कृताय, सामन्यधनपूजिताय, समाराधनाय, भक्तदु:खक्षयकराय, भवसागरतारकाय, विसर्गाय, सकलाध्यक्षाय, सुमुखाय, सर्वयुद्धाय, सुखजाताय, सर्वकर्मोत्थानाय, अप्रमेयपराक्रमाय, दिव्यचैतन्याय, देवानां, परमागतये, परंधाम्ने, परंसुखाय, व्यवसायाय, योगमायाधराय, परंतपसे, योगारीनृप्रकाशाय, योगपातालाय, सत्यविद्यानमस्काराय, जगन्मोहनाय, (800), इडानारीस्वरूपाय, मरणदु:खविमोचानाय, कृपासिंधवे, कल्पद्रुमनिषेविताय, चिंतामणिविभूषांगाय, चिंतामणिप्रियाय, चिंतासागरवारणाय, कुंडलिने, विकृताय, सर्वाश्रयकामाय, ऊर्ध्वसंहताय, सर्वदेवमयाय, सर्वलोककृते, एकाय, एकांतिकाय, नानाभावविवर्जिताय, पूर्णविषाय, नानारूपधाराय, प्राणपंचकनिर्मुक्ताय, कविपंचकवर्जिताय, निर्वाणाय, निष्कालाय, निष्प्रपंचाय, निराश्रयाय, निष्ठासर्वज्ञाय, संसारश्रमनाशकाय, दूरत्वपरिनाशाय, प्रत्यकूचैतन्यगर्भाय, आरोग्यसुखदाय, अनंतविक्रमाय, जितसिंधवे, जयप्रदाय, जनानंदाय, जगत्पापनाशनाय, तीर्थसेविने, तीर्थवासिने, तीर्थनीरनिवासकराय, तपोनिष्ठाय, तपोधनसमाश्रयाय, त्रैलोक्यवशकराय, दारिद्रनाशकाय, दु:खसागरभंजनाय, कृष्णपिंगलाय, कृष्णवर्णाय, ऊर्ध्वगात्मने, अनन्तरूपाय, स्वयंभुवे, अतितेजसे, जगद्पालकाय, धर्मवर्धनाय, अमृताय, उपद्रष्ट्रे, वेदसिद्धान्तवेद्याय, पुरातनाय, तापत्रयनिवारकाय, संसारतमनाशकाय, संकल्पदु:खदहनाय, तापसोत्तमवंदिताय, ब्रह्मप्रकाशात्मने, ब्रह्मविद्याप्रकाशनाय, सर्वभावविदिताय, वरेण्याय, महाप्रसादाय, प्रयतात्मने, साध्यर्षये, सर्वसुसंकल्पविस्तारणाय, सूक्ष्मात्मने, सर्वसाधारणाय, प्रधानधृगे, जीवसंजीवनाय, परिक्रमाय, महाभीमाय, सर्वभावविनि:सृताय, अंत:शून्याय, बहि:शून्याय, शून्यात्मने, शून्यभावनाय, अंत:पूर्णाय, अनंतपूर्णाय, अंतर्योगिने, अंतर्निष्ठाय, बाह्यांतर्विमुक्ताय, कालकालाय, कैवल्याय, निगमाश्रयाय, युक्तसद्गतये, प्रजाजीवाय, संख्यासमाय, पर्यटनपराय, आयनिर्गमाय, निर्वाणाय, मोक्षकराय, विविक्ताय, भावाय, असंवेदिने, अनाश्रयारंभाय,

Scanned with CamScanner

देहधर्मविदितात्मने, सर्वकामफलदाय, सर्वकामनिवर्तकाय, (900), सर्वकामफलाश्रयाय, जगद्वपुषे, मालासप्तप्रवर्तकाय, संशयार्कवृश्चंकराय, फलदात्रे, फलेश्वराय, फलिरूपाय, फलिगर्भाय, बुद्धसारनिर्वाणकाय, शंकरप्रियाय, भयनाशकाय, महावताराय, भारभृते, भुवनभयाय, देवासुरगणाश्रयाय, देवासुरनमस्कृताय, परागतये, देवासुरगणाधिपतये, देवासुरगुरवे, विश्रामाय, आत्मसंभवाय, माननीयाय, मूर्ताय, मत्तमातंगविक्रमाय, मर्मज्ञाय, मंदारकुसुमप्रियाय, यशस्याय, यशोराशये, योगकर्त्रे, योगपालनाय, राजमंडलप्रतिष्ठाय, रक्षोघ्ने, वसुधापालकाय, वायुजीवाय, विश्वकराय, शरणाश्रयाय, शोभनाय, सुदर्भाय, अमराय, पिलुशाय, सर्वदेवाय, सुरगणाय, अभिरामाय, सर्वपावनाय, वज्रिणे, शांतिदात्रे, शांतिकर्त्रे, शांतिरक्षकाय, षट्चक्रभेदनकराय, सज्जनप्रियाय, सर्वपापप्रमोदकाय, सर्वसाधनाय, नियमवर्धनाय, सिद्धभूताय, भक्तानां परमागतये, सर्वानां, नमस्कृताय, सर्वयशस्वरूपाय, क्षेमप्रदाय, स्थावरपतये, वराय, व्रताधिपाय, श्रीवर्धनाय, सकलात्मने, पूज्याय, सहस्ररूपाय, परसंवेदनात्मकाय, स्वानुसंधानाय, भोगमोक्षकलाप्रदाय, सागराय, योगिहृदयविश्रामाय, आदिदेवाय, रसातलस्थिताय, शुद्धाय, सर्वव्याधिनिवारकाय, दुःस्वप्ननाशकाय, सौम्याय, विषबाधाविनाशकाय, वीर्यातिशयसंयुक्ताय, नागराज्ञे, धर्मधारकय, भक्तेष्टदाननिरताय, प्रसन्नात्मने, पुरातनाय, अनन्तनाम्ने, सुमनसे, रसातलसमाश्रिताय, वायुभक्षिणे, धराशायिने, धर्माधर्मविवेचकाय, पुत्रदाय, कीर्तिदाय, सत्याय, भक्तानामभयंकराय, सौभाग्यदाय, सदासेव्याय, ज्ञानमार्गप्रदीपकाय नमः।

।। इति नागसहस्रनामावलिः ।।

Scanned with CamScanner

कालसर्प योग जननशांतिप्रयोगः

यदि विज्ञ सज्जन गण्डमूल नक्षत्रों की तरह जन्म समय पर ही सत्ताईसवें दिन 'कालसर्प योगजनन शान्ति' करा दें तो आगे बालक को कष्ट नहीं आता। पर यह प्रयोग कैसे किया जाए इस पर कोई पुस्तक कहीं नहीं है। प्रबुद्ध पाठकों के हजारों पत्रों के जवाब स्वरूप विशिष्ट प्रयोग यहाँ दिया जा रहा है।

-संपादक

श्रीगणेशाय नमः। शांतिसूक्तपाठः। शिखाबंधनम्। कुशपवित्रधारणम्। आचमनम्। प्राणायामः। तिलकं कृत्वा देवतान्नमस्कृत्य संकल्पः- ॐ विष्णु...(संवत्सरादीन संकीर्त्य गोत्रोच्चारः) मम जन्मकुंडल्यां राहुकेतुसंज्ञक-क्रूरग्रहान्तराले पतितादित्यादि सकलग्रह-संभूत-कालसर्पनामक-अनिष्ट-योगेन शरीर व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च विघ्नानां प्रशमनार्थं ज्वरादिपीडानिवृत्त्यर्थ त्रिविधतापोपशमनार्थं संपत्ति-संतति-आदि-वृद्ध्यर्थं . मनःकामनापरिपूर्त्यर्थं अभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सग्रहमखां कालसर्प योगजननशांतिं करिष्ये। गणेशपूजनमारभ्य ऋत्विक्वरणान्तं पूर्वतंत्रं समाप्य अग्निं संस्थाप्य। सर्वतोभद्रमंडले ब्रह्मादिदेवान् आवाह्य संपूज्य तत्र पूर्णपात्रसहितान् त्रीन्कलशान् कलशमेकं वा स्थापयेत् पूजाधिकारार्थं न्यासविधिं कुर्यात्। कयानश्चित्र इति मंत्रस्य वामदेवऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, राहुर्देवता, कयान इति बीजं, शचीरिति शक्तिः, राहुप्रीत्यर्थे न्यासे पूजने चच विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासाः- वामदेवऋषये नमः शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे। राहुदेवतायै नमो हृदि। कयान इति बीजाय नमः गुह्ये। शचीरिति शक्तये नमः पादयोः। इति ऋष्यादिन्यासाः।

करादिन्यासाः- कयानश्चित्र इति अंगुष्ठाभ्यां नमः। आभुवदूती इति तर्जनीभ्यां नमः। सदा वृधः इति मध्यमाभ्यां नमः। सखा इति अनामिकाभ्यां नमः। कया शचिष्टया इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। वृता इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासा।

पदन्यासाः- कया इति शिरसि। न इति ललाटे। चित्र इति मुखे। आभुवत् इति हृदये। ऊती इति नाभौ। सदावृधः इति कट्यां। सखा इति ऊर्वोः। कया इति जान्वोः। शचिष्टया इति गुल्फयोः। वृता इति पादयोः।

Scanned with CamScanner

बीजन्यासा:- ॐ हृदयाय नमः। भ्रां शिरसे। भ्रीं शिखायै। भ्रौं कवचाय। सः अस्त्राय फट्।

मूर्त्तौ प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

ध्यानम्:- नीलांबरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली।

चतुर्भुजः शक्तियुतश्च राहुः सिंहासनास्थो वरदोऽस्तु मह्यम्।।

ॐ कयानश्चित्र नैर्ऋत्यकोणे शूर्पाकारे द्वादशांगुलमंडलसंस्थितम्। बर्बरदेशोत्पन्नाय कायवर्जिताय सिंहासनाय वरप्रदाय पौर्णमासीदिने भरणीनक्षत्रसंजाताय शूद्रवर्गाय हुताग्निरूपिणे करालवदनाय श्रेष्ठाकपालरूपाय अंजनप्रभाय पैठिनसगोत्राय रोदनवदनाय कालसर्परूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः राहुं ध्यायामि।

कालध्यानम्:- एह्येहि दंडायुध एह्येहि धर्मराज कालांजनाभास विशालनेत्र।

विशाल-वक्षस्थलरुद्र रूप ग्रहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

चित्रगुप्तादिसंयुक्त दंडमुद्गरधारक।

आगच्छ भगवन् काल (धर्म) पूजार्थं संनिधो भव।।

कालाय कालरूपाय कालांजनसम प्रभो।

दक्षिणस्यां कृतावास कालदेव नमोऽस्तु ते।।

ॐ कार्षिरसि ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः कलं आवाहयामि स्थपयामि।

सर्पध्यानम्:- एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वंदितपादपद्म्। नानाफणामंडलराजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

आशीविषसमोपेतं नागकन्याविराजितम्।

आगच्छ नागराजेन्द्र कलशे संन्निधो भव।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि। षोडशोपचारैः पूजनम् अन्योपचारैश्च।

पूजने विशेषे-नीलवस्त्रं, कुंकुमं, च दनं-अगरुचंदनं, नीलाक्षताः, नीलपुष्पाणि, लाक्षाधूपः, घृतदीपः माषान्नम्। दक्षिणादानान्ते नामपूजनम्- ॐ विधुंतुदाय नमः। सदा कालाय। कालाय। करालवदनाय। अनंताय। राहवे। ततः कलापूजनम- ॐ द्रुमन्यै नमः। दामन्यै। छायायै।

कालदेवतायाः नामपूजनम्- ॐ यमाय नमः। धर्मराजाय। मृत्यवे। अंतकाय। वैवस्वताय। कालाय। सर्वभूतक्षयाय। औदुंबराय। दघ्नाय। नीलाय। परमेष्ठिने। वृकोदराय। चित्राय। चित्रगुप्ताय।

सर्पदेवतायाः नामपूजनम्- ॐ अनंताय नमः। शेषाय। वासुकये। शंखाय। पद्माय। कंबलाय। कर्कोटकाय। अश्वतराय। धृतराष्ट्राय। शंखपालाय। तक्षकाय। कालयय। कपिलाय।

Scanned with CamScanner

पुष्पांजलिं समर्प्य स्तुतिपाठः विशेषर्घ्यप्रदानम्।

राहुग्रहः सदा क्रूरः सोमसूर्यस्य पीडकः।

शान्त्यर्थं तु मया दत्तः अर्घ्योऽयं प्रतिगृऽह्यताम्।।

प्रार्थना-कायाहीनः महाशक्तिः ग्रस्ते शशिभास्करौ।

सिंहिकेयो महावीर्यो राहुः प्रीतो भवेन्मम।।

महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।

अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी।।

राहुकवचम् - अस्य श्री राहुकवचस्य कश्यप ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः राहुर्देवता राहुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। अथ ध्यानम् - ॐ कयानश्चित्र। अर्धकायं ।। इति ध्यानम् ।।

ॐ प्रणमामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरीटिनम्।

सैंहिकेयं करालास्यं भूतानामभयप्रदम्।।1।।

नीलांबरः शिरः पातु ललाटं लोकवन्दितः। चक्षुषी पातु मे राहुः श्रोत्रे त्वर्ध शरीरवान्।।2।।

नासिकां मे करालास्यः शूलपाणिर्मुखं मम। जिह्वा मे सिंहिकासूनुः कंठे से कठिनांघ्रिकः।।3।।

भुजंगेशौ भुजौ पातु नीलमाल्याम्बरः करौ। पातु वक्षस्थलं मंत्रीः पातु कुक्षिं विर्धुतुदः।।4।।

कटिं मे विकटः पातु ऊरु से सुरपूजितः। स्वर्भानुः जानुनी पातु जंघे मे पातु जाड्यहा।।5।।

गुल्फौ ग्रहाधिपः पातु पादौ मे भीषणाकृतिः। सर्वाण्यंगानि मे पातु नीलचन्दनभूषणः।।6।।

राहोरिदं कवचमीप्सितसिद्धिदं स्यात् भक्त्या पठत्यनुदिनं नियतः शुचिः सन्। प्राप्नोति कीर्तिमतुलां श्रियमृद्धिमायुः-आरोग्यमात्मविजयं च हि तत्प्रसादात्।।7।।

इति श्रीपद्मे राहुकवचं संपूर्णम्।।

राहुस्तोत्रम्- राहुर्दानवमंत्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः।

अर्धकायः सदा क्रोधी चंद्रादित्यविमर्दनः।।1।।

रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।

हराजः सुधापायौ राकातिथ्यभिलाषुकः।।2।।

कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकंठहृदयाश्रयः। विधुंतुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः।।3।।

ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।

Scanned with CamScanner

पंचविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नर:।।4।।

यः पठेत् महती पीडा तस्य नश्यति केवलम्। आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा।।5।।

ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्। सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षयातं नर:।।6।।

इति श्रीस्कन्दपुराणे राहुस्तोत्रं संपूर्णम्।।

राहुमंत्र - ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः भ्रौं भ्रीं भ्रौं ॐ।।

ह्रीं अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य-विमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणयाम्यहम्।।
ॐ राहवे नम:।।

कालप्रार्थना - ॐ यमो निहन्ता पितृधर्मराजौ वैवस्वतो दण्डधरश्च काल:।
प्रेताधिपो दत्तकृतानुसारी कृतान्त एतत् दशभिर्जपन्ति।।
महिषस्थ नमस्तेऽस्तु धर्मराज नमोऽस्तु ते।
ईषत्पीन नमस्तेऽस्तु दण्डहस्त नमोऽस्तु ते।।
धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिप ते नम:।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय।।
कालाय नम:।।

सर्पप्रार्थना - पृष्ठ) सर्पेभ्यो नम:।। स्तुतिपाठं समर्पयामि।। ततो हस्थापनम्। कुशकंडिकां विधाय ग्रहहोम:। प्रधानहोमः अष्टोत्तशतं च अधिदेवताप्रत्यधिदेवतयो: अष्टविंशतिः अन्वाधानानुसारं वां। ब्रह्मादिमंडलदेवतानां होम:। व्याहृतिहोम:। पूजा स्विष्टं।

दानानि-सुवर्ण, सीसकं, गोमेदः, तिला:, नीलवस्त्रं, तैलम्।
आज्यावलोकनम्, अभिषेकः आशीर्वाद:, ब्राह्मणभोजनम्।
जप:- 18,000, कृष्णपुष्पम्।
।। इति कालसर्प योगजननशांतिप्रयोग: ।।
नारायणबलि: नागबलिः अवश्यं कर्त्तव्य:।

Scanned with CamScanner

"अथ नागनीराजनम्"

जयदेव जयदेव जय तक्षक राजन् प्रभु 2,
भव सागर भव तारक नमामि फणिराजन् जयदेव जयदेव॥1॥
संसारार्णव पालक निशदिन जगपालं-प्रभु 2,
फणिधर कालिय राजन्-कंबल अश्चतरम् जयदेव जयदेव॥2॥
शंकरभूषण रूपम् यमुनान्तर वासि-प्रभु 2,
कालीयशिरसिखेलं-मुरलीधर देवम् जयदेव जयदेव॥3॥
फणिधर शेष स्वरूपम् नवनागं देव प्रभु 2,
अनंतशक्तियुक्तम् नारायण देवम् जयदेव जयदेव॥4॥
कर्कोटक धृतराष्ट्रम् जनसुखदातार प्रभु 2,
परमकृपालु देवम् प्रभु कृष्ण स्वरूपम् जयदेव जयदेव॥5॥
आस्तिकमुनिरादेशं सर्पः पालयति प्रभु 2,
श्रावणसितपंचम्याम् क्षीरं प्राशयति जयदेव-जयदेव॥6॥
मुखमध्ये जिहवे द्वे पीयूषं गरलम् प्रभु 2,
श्रवणं तव चक्षुर्भ्या द्रुतवेगाच्चलसि॥ जयदेव जयदेव ॥7॥
विविध स्वरूप देहम् मणि मस्तक धारम् प्रभु 2,
त्रिपुरारि मुरारि भुजंग गति चारि जयदेव जयदेव॥8॥

Scanned with CamScanner